@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
वीरवार, 24 अप्रैल 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 163 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

कहां, कब और कैसे होगा, पर मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा: अनिल विज

चंडीगढ़, 23 अप्रैल। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर हरियाणा सरकार के उर्जा व परिवहन मंत्री अनिल विज का बड़ा बयान आया है। विज ने कहा कि यह बहुत ही दुखद घटना है। लेकिन मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि ये अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भारत है। कहां होगा, कब होगा, कैसे होगा, यह मैं नहीं जानता लेकिन मैं एक बात जानता हूं कि इनको (आतंकियों) ऐसा मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा, जिससे ये न तो कभी इस प्रकार की घटना करने की हिम्मत कर सकेंगे और न इनको भेजने वाले इस बारे में कभी सोच सकेंगे। बता दें कि पहलगाम में मंगलवार को हुए आतंकी हमले में 28 लोगों की मौत हुई है। यह सभी लोग कश्मीर घूमने गए थे। पर्यटकों पर हुए इस हमले की कड़ी निंदा हो रही है। हमले में हरियाणा के करनाल के इंडियन नेवी के लेफ्टिनेंट विनय नरवाल भी मारे गए हैं। विनय की छह दिन पहले हुई शादी के बाद अपनी नई नवेली दुल्हन के साथ हनीमून पर कश्मीर घूमने गए थे। 26 वर्षीय विनय नरवाल की छह दिन पहले 16 अप्रैल को गुरुग्राम की युवती हिमांशी के साथ शादी हुई थी। सपहलगाम आतंकी हमले पर हरियाणा सरकार में मंत्री अनिल विज ने कहा, ये बहुत ही दुखद घटना है। लेकिन मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि ये अब पीएम नरेंद्र मोदी का भारत है, कहां होगा, कब होगा, कैसे होगा, यह मैं नहीं जानता। 16 अप्रैल को विनय ने मंसूरी में डेस्टिनेशन मैरिज की थी। वह 28 मार्च से छुट्टी पर थे। विनय ने करनाल के संत कबीर स्कूल से पढ़ाई की थी। बाद में उन्होंने सीडीएस का एग्जाम भी दिया था।

पाकिस्तान पर शिकंजा, सिंधु जल समझौता भी रोका गया

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली, 23 अप्रैल। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद प्रधानमंत्री आवास पर सीसीएस की बैठक खत्म हुई। इस बैठक में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं। पढ़ें हमले से जुड़े पल-पल के लाइव अपडेट्स... पीएम मोदी के आवास पर हुई सीसीएस की बैठक में 1960 की सिंधु जल संधि को तत्काल प्रभाव से स्थगित रखा जाएगा, जब तक कि पाकिस्तान विश्वसनीय और अपरिवर्तनीय रूप से सीमा पार आतंकवाद के लिए अपने समर्थन को त्याग नहीं देता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में सीसीएस की बैठक समाप्त होने के बाद विदेश मंत्रालय मीडिया को संबोधित कर रहा है। विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने कहा, सीसीएस ने कड़े शब्दों में हमले की आलोचना की है। दुनिया के कई देशों ने समर्थन जताया है और कड़े शब्दों में हमले की निंदा की है। बैठक में कई फैसले लिए गए हैं। पाकिस्तानियों का वीजा रद्द किया गया है। सिंधु जल समझौता रोका गया है। महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे कश्मीर में आतंकवादी हमले के बाद फंसे राज्य के पर्यटकों को वापस लाने की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए श्रीनगर रवाना हुए। सीसीएस बैठक के बाद शाम सात बजे विदेश मंत्रालय की प्रेस कॉन्फ्रेंस होगी। उधर, कश्मीर के कुलग्राम में सुरक्षबलों का आतंकियों के खिलाफ अभियान जारी है। टीआरएफ के एक कमांडर की घेराबंदी की गई है। दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर आतंकवादी हमले के बाद प्रधानमंत्री आवास पर सीसीएस की बैठक जारी है। इस बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, विदेश मंत्री एस जयशंकर, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल मौजूद हैं। बैठक में बड़ा फैसला लिया जा सकता है। दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर थोड़ी देर में सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी (सीसीएस) की बैठक शुरू होगी। यह बैठक प्रधानमंत्री आवास पर होगी। बैठ की की अध्यक्षता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे। वह कुछ देर पहले ही श्रीनगर से दिल्ली पहुंचे। बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, विदेश मंत्री एस जयशंकर, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल भी शामिल होंगे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित प्रधानमंत्री आवास पहुंच गए हैं। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने ट्वीट किया, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से बात की और पहलगाम आतंकवादी हमले में लोगों की मौत पर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की। नेपाली नागरिक की मौत पर उनकी हार्दिक संवेदना के लिए आभारी हूं। पहलगाम आतंकी हमले पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा, यह घटना निंदनीय है। ये एक प्रकार से भारत को विभाजित करने का प्रयास था। ऐसे प्रयासों को हमें विफल करना चाहिए और ऐसे तत्वों को कुचल देना चाहिए। महाराष्ट्र के जिन 6 लोगों की (पहलगाम आतंकी हमले में) मृत्यु हुई है, प्रत्येक पीड़ित परिवार को 5 लाख रुपये देंगे। जम्मू कश्मीर में हुए आतंकी हमले के मद्देनजर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का असम दौरा स्थगित कर दिया गया है। राष्ट्रपति मुर्मू को तय कार्यक्रम के अनुसार, गुरुवार की शाम को गुवाहाटी में आधिकारिक कार्यक्रमों में शामिल होना था। असम के राज्यपाल सचिवालय ने राष्ट्रपति का दौरा स्थगित होने की सूचना दी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, कुछ न्यूज चैनल्स और सोशल मीडिया पर ऐसी खबरें चल रही हैं कि पहलगाम हमले में कई आईबी अधिकारी घायल हुए हैं, वे भ्रामक खबरें हैं। इसे मासूम पर्यटकों की मौत को न्यायोचित ठहराने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। सिर्फ एक आईबी अधिकारी की हत्या हुई है और वे भी छुट्टी पर थे और अपने परिवार के साथ घूमने गए हुए थे।

संविधान के अनुच्छेद 26 से 29 को समाप्त करने का समय: निशिकांत दुबे

कौमी संवाददाता

नई दिल्ली, 23 अप्रैल। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि अब संविधान के अनुच्छेद 26 से 29 को समाप्त करने का समय आ गया है। इस दौरान दुबे ने वोट बैंक की राजनीति की आलोचना की। साथ ही धर्मनिरपेक्ष नेताओं पर पाखंड का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि धर्मनिरपेक्ष नेताओं को यह स्पष्ट करना चाहिए कि पहलगाम हमला धार्मिक उद्देश्यों से प्रेरित था या नहीं। भाजपा नेता दुबे ने पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के संबंध में संभावित समाधान का संकेत दिया। उन्होंने गृह मंत्री अमित शाह का उल्लेख करते हुए कश्मीर मुद्दों को हल करने की वर्तमान सरकार की क्षमता पर विश्वास जताया। दुबे ने एक्स पर पोस्ट में कहा, जब देश का बंटवारा हिंदू-मुस्लिम के नाम पर हुआ था, तब वोट बैंक के लिए अल्पसंख्यक के

नाम पर मुसलमानों को अधिक अधिकार देकर हिंदुओं को दोयम दर्जे का नागरिक बनाने वाले पहलगाम की घटना पर बताएं कि आज की हत्या धर्म के आधार पर हुई थी या नहीं? सेक्युलर नेताओं शर्म करो, पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर हमारा होगा, सब्र करो, ये मोदी की सरकार है, जिसके गृहमंत्री अमित शाह हैं। संविधान के अनुच्छेद 26 से 29 को खत्म करने का समय आ गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 26 से 29 धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार और अल्पसंख्यकों के सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकारों की गारंटी देते हैं। अनुच्छेद 26 धार्मिक मामलों के प्रबंधन की स्वतंत्रता की गारंटी देता है, जिसमें संस्थाओं की स्थापना, मामलों का प्रबंधन और संपत्ति का प्रशासन शामिल है। अनुच्छेद 27 किसी को भी किसी विशिष्ट धर्म के प्रचार के लिए करों का भुगतान करने के लिए बाध्य करने पर रोक लगाता है। अनुच्छेद 28 राज्य द्वारा वित्तपोषित शैक्षणिक संस्थानों में धार्मिक शिक्षा या पूजा से स्वतंत्रता को संबोधित करता है। वहीं, अनुच्छेद 29 अल्पसंख्यकों के सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकारों की रक्षा करता है, जिसमें उनकी भाषा, लिपि या संस्कृति को संरक्षित करने का अधिकार शामिल है। साथ ही राज्य द्वारा सहायता प्राप्त शैक्षणिक संस्थानों में भेदभाव को रोकता है। इससे पहले, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने हमले में अपने प्रियजनों को खोने वालों के प्रति संवेदना जताई। पीएम मोदी ने एक्स पर पोस्ट में कहा, मैं पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़ी निंदा करता हूं। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। मैं प्रार्थना करता हूं कि घायल व्यक्ति जल्द से जल्द ठीक हो जाएं। प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता प्रदान की जा रही है।

महाराष्ट्र के 6 मृतकों के परिजनों को पांच लाख का मुआवजा: सीएम फडणवीस

मुंबई, 23 अप्रैल। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बुधवार को कहा कि जम्मू और कश्मीर के पहलगाम शहर में आतंकवादियों के हमले में मारे गए 26 लोगों में से छह उनके राज्य के रहने वाले थे और उनके शव वापस लाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने यह भी घोषणा की कि राज्य के जिन लोगों की मौत हुई है, उनके परिजनों को पांच लाख रुपये का मुआवजा दिया जाएगा। फडणवीस ने कहा कि उन्होंने महाराष्ट्र के मृतकों के शव लाने की व्यवस्था देखने के लिए कुछ मंत्रियों को जिम्मेदारी दी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पहगाम में आंतकी हमले में मारे जाने वाले छह लोग महाराष्ट्र के हैं, जिनमें मुंबई और पुणे के निवासी भी शामिल हैं। उन्होंने इस हमले को कायरता कृत्य बताया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर फडणवीस ने कहा कि संजय लेले और दिलीप दिसले के शव श्रीनगर से एयर इंडिया की उड़ान से मुंबई लाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि यह उड़ान श्रीनगर से दोपहर 12.15 बजे रवाना होगी। कौस्तुभ गंवाटे और संतोष जगदाले के शव पुणे लाए जाएंगे, जिनकी उड़ान शाम 6 बजे रवाना होगी। हेमंत जोशी और अतुल मोने के शव लेकर जो उड़ान मुंबई आएगी, वह श्रीनगर से दोपहर 1¬15 बजे उड़ान भरेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि कैबिनेट मंत्री आशीष शेलार और मंगलप्रभात लोढ़ा मुंबई हवाई अड्डे पर समन्वय के लिए मौजूद रहेंगे, जबकि मंत्री माधुरी मिसाल को पुणे में यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। मुख्यमंत्री ने बताया कि एक और कैबिनेट मंत्री गिरीश महाजन श्रीनगर के लिए रवाना हो रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जम्मू और कश्मीर में मौजूद महाराष्ट्र के अन्य पर्यटकों को भी वापस लाने की तैयारी की जा रही है।

आतंकी हमला कायराना करतूत: सोनिया गांधी

सौरभ ार्मा

नई दिल्ली, 23 अप्रैल। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम क्षेत्र में निर्दोष पर्यटकों पर हुए नृशंस आतंकी हमले की निंदा की। उन्होंने कहा कि हिंसा का सहारा लेना कायरतापूर्ण कार्य है। उन्होंने आतंकी हमले में अपने प्रियजनों को खोने वाले लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की। साथ ही घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की। सोनिया गांधी ने कहा कि निर्दोष पर्यटकों पर हुए आतंकवादी हमले के बारे में जानकर मैं बहुत दुखी और स्तब्ध हूं। मैं उन परिवारों का दर्द समझती हूं, जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। मैं उनके प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करती हूं और घायलों के शीर्घ स्वस्थ होने की प्रार्थना करती हूं। सोनिया ने आगे कहा कि पूरा देश आतंक के खिलाफ एकजुट है। हम इन विभाजनकारी और हिंसक ताकतों को हराने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। उन्होंने कहा कि हमें अतीत में मौजूद आतंक के खिलाफ व्यापक सामाजिक सहमति बनाने के लिए काम करने की जरूरत है। उन्होंने आगे कहा कि नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए और क्षेत्र में शांति बहाल हो। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने भी पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की। उन्होंने कहा कि आतंकी हमले की भयावह तस्वीरें दिल दहला देने वाली हैं। ये हमला हर दृष्टिकोण से निंदनीय है। उन्होंने कहा कि घायलों के शीर्घ उपचार के लिए देश की सबसे

अच्छी चिकित्सा सेवाएं और सुविधाएं तत्काल सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने घायलों के स्वास्थ्य लाभ और जीवन के लिए कामना की। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले की भयावह तस्वीरें दिल दहला देनेवाली हैं। ये हमला हर दृष्टिकोण से निंदनीय है। घायलों के शीघ्रातिशीघ्र उपचार के लिए देश की सबसे अच्छी चिकित्सा सेवाएं और सुविधाएं तत्काल सुनिश्चित की जाएं। सबके स्वास्थ्य लाभ और जीवन के लिए हृदय से कामना। अखिलेश यादव ने आतंकी हमले को लेकर केंद्र सरकार पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को जम्मू-कश्मीर में सबसे पहले सुरक्षा के वातावरण को सुनिश्चित करने की जरूरत है। तभी स्थानीय निवासियों और पर्यटकों का जीवन सुरक्षित रह सकता है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा से ही भरोसा जागता है और एकता-अखंडता का भाव भी। झारखंड के मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) अध्यक्ष हेमंत सोरेन ने भी पहलगाम में पर्यटकों पर आतंकी हमले की निंदा की। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुआ कायराना आतंकी हमला झकझोर देने वाला है। उन्होंने कहा कि मरांग बुरु दिवंगत लोगों की आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवारजनों को दुख की विकट घड़ी सहन करने की शक्ति दें। उन्होंने कहा कि मैं हमले में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं। मरांग बुरु दिवंगत लोगों की आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवारजनों को दुःख की विकट घड़ी सहन करने की शक्ति दे।

राजस्व संग्रहण में सुधार की कोशिश: राधाकृष्ण किशोर

तेजिन्दर कौर बब्बर

रांची, 23 अप्रैल। वित्त सह वाणिज्य कर मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि राज्य में बेहतर शिक्षा और रोजगार के अवसरों के लिए कुशल प्रबंधन की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि लोकसभा और विधानसभा चुनावों के चलते राजस्व संग्रहण प्रभावित हुआ, फिर भी प्रयास संतोषजनक रहे हैं। मंत्री ने बताया कि पिछले वित्तीय वर्ष में 1,06,999.57 करोड़ रुपये का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, जिसमें से 92,189.10 करोड़ रुपये की वसूली हुई, जो कि 86.16 प्रतिशत है। वहीं, गैर-कर प्राप्तियों सहित कुल 1,03,469.82 करोड़ रुपये यानी बजट एस्टीमेट का 80.27 प्रतिशत प्राप्त हुए हैं। वह बुधवार को सूचना भवन सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे। वित्त मंत्री के साथ वाणिज्य विभाग के सचिव अमिताभ कौशल और वाणिज्य कर आयुक्त अमित कुमार भी मौजूद रहे। वित्त मंत्री ने कहा कि स्त्रक्क्रू अधिनियम के तहत वर्ष 2025-26 में सभी विभागों को तीन महीने में एक बार राजस्व संग्रहण की समीक्षा करने का निर्देश दिया गया है और वे स्वयं छह महीने में एक बार इसकी समीक्षा करेंगे। राज्य के सभी प्रमंडलों का दौरा कर अधिकारियों को निर्देश दिए जाएंगे, वहीं जो प्रमंडल पीछे होंगे, उन्हें विशेष निर्देश और सहायता दी जाएगी। क्क्र अकाउंट में की राशि का विवरण सभी विभागों से मंगवाया गया है। क्क्र अकाउंट में राशि जो 2010 से पार्क की गई है, वह गलत है। इस

पर हम पूरी संवेदनशीलता के साथ समीक्षा कर रहे हैं। किशोर ने कहा कि मैया सम्मान योजना की राशि सरकार द्वारा सुनिश्चित की गई है। वहीं, राजस्व व्यय की जानकारी देते हुए बताया गया कि 1,31,234.42 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे, जिनमें से 1,18,279.69 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। वित्त मंत्री ने भरोसा दिलाया कि राज्य के आर्थिक ढांचे को और मजबूत बनाने के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हमारी कोशिश होगी कि हमारी सरकार का वित्तीय प्रबंधन पारदर्शी हो। उन्होंने कहा कि सभी विभागों के सचिवों को निदेश दिया गया है कि अप्रैल के अंत तक या फिर सात मई तक योजनाओं के विरुद्ध जिलों को राशि आवंटित कर दी जाए, ताकि विकास का काम बाधित न हो। वित्त सह वाणिज्य कर मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि झारखंड सरकार के वाणिज्य कर विभाग ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में निर्धारित लक्ष्य 26 हज़ार करोड़ रुपये के विरुद्ध 22292.25 करोड़ रुपये का राजस्व संग्रहण प्राप्त कर लिए हैं। जो वार्षिक लक्ष्य का 85.74 फीसदी राजस्व संग्रहण है। जबकि वित्तीय वर्ष 2019-20 में 14286.27 करोड़ रुपये की राजस्व प्राप्ति हुई थी। इस प्रकार विगत पांच वर्षों में प्राप्त राजस्व संग्रह में कुल 56.04 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में कुल राजस्व संग्रह 26,500 करोड़ रुपये का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह जानकारी किशोर ने बुधवार को सूचना भवन सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता में कही।

लश्कर-ए-तैयबा की तारीफ में किया था पोस्ट, झारखंड का युवक अरेस्ट

बोकारो, 23 अप्रैल। झारखंड के बोकारो जिले में एक शख्स को बुधवार को गिरफ्तार किया गया है। उस पर आरोप है कि उसने पहलगाम आतंकी हमले को लेकर सोशल मीडिया पर एक विवादित पोस्ट डाली थी। पुलिस के अनुसार, आरोपी की पहचान मो. नौशाद के रूप में हुई है। उस पर आरोप है कि उसने एक्स पर एक पोस्ट में पाकिस्तान और आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा की तारीफ की थी। बलीदिह थाना प्रभारी नवीन कुमार ने बताया कि उसे मिल्लत नगर से गिरफ्तार किया गया है और उससे पूछताछ की जा रही है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम जिले के बैसरन में मंगलवार दोपहर हुए भीषण आतंकी हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया है। बैसरन घाटी में घुमने आए पर्यटकों पर किए गए इस हमले में 28 लोगों की जान चली गई, जिनमें दो विदेशी नागरिक और दो स्थानीय लोग भी शामिल हैं। जबकि 17 लोग घायल बताये जा रहे हैं। मृतकों में महाराष्ट्र के छह पर्यटक भी शामिल हैं। यह हमला उस वक्त हुआ जब पर्यटक बैसरन के सुंदर नजारों का आनंद ले रहे थे और अचानक गोलियों की गूंज से पूरी घाटी कांप उठी।

आतंकी हमले की जिम्मेदारी ले केंद्र: पवन खेड़ा

नरो मल्होत्रा

नई दिल्ली, 23 अप्रैल। कांग्रेस ने मंगलवार को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। कांग्रेस ने कहा कि सरकार केंद्र शासित प्रदेश में स्थिति सामान्य होने के खोखले दावे करने के बजाय आतंकी हमले की जिम्मेदारी ले। साथ ही पार्टी ने केंद्र से राजनीतिक दलों को विश्वास में लेने के लिए एक सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग की, ताकि आतंकवाद से निपटने के लिए हल निकाला जा सके। विपक्षी दल ने आतंकी हमले की निंदा की। साथ ही इसे मानवता पर धब्बा बताया। कांग्रेस ने कहा कि हमले का प्रभावी ढंग से जवाब दिया जाना चाहिए। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने कहा, हम सरकार से आतंकवाद से निपटने के सामूहिक संकल्प को ठोस रूप देने के लिए एक सर्वदलीय बैठक बुलाने की अपील करते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पहलगाम हमले को 2019 के पुलवामा हमले के बाद घाटी में सबसे घातक हमला बताया और इसकी निंदा की। खरगे ने एक्स पर पोस्ट में कहा, मैं जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों पर हुए कायरतापूर्ण आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करता हूं। पूरा देश सीमा पार आतंकवाद के खतरे से लड़ने के लिए एकजुट है। ये कायरतापूर्ण लक्षित हमले मानवता पर एक धब्बा हैं। खरगे ने आगे कहा कि कांग्रेस की ओर से पीड़ितों के परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं और हम घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हैं। उन्होंने कहा कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा सर्वोपरि है। हम भारत सरकार से इसे सुनिश्चित करने के लिए सुधारात्मक कदम उठाने की अपील करते हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भी पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले को कायरतापूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि हमले में पर्यटकों के मारने जाने और घायल होने की खबर बेहद निंदनीय और दिल दहला देने वाली है। राहुल ने शोक संतप्त परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। साथ ही उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ पूरा देश एकजुट है। राहुल गांधी ने हमले को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में स्थिति सामान्य होने के खोखले दावे करने के बजाय, केंद्र सरकार को जिम्मेदारी लेनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि लोगों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाए जाने चाहिए ताकि भविष्य में ऐसी बर्बर घटनाएं न हों और निर्दोष भारतीय को इस तरह अपनी जान न गंवानी पड़े। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने भी निर्दोष पर्यटकों पर हुए कायरतापूर्ण आतंकवादी हमले

की निंदा करते हुए दुख जताया। उन्होंने हिंसक ताकतों को हराने के लिए गहरे संकल्प की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही उन्होंने अतीत में मौजूद आतंक के खिलाफ व्यापक सामाजिक सहमित बनाने की अपील की। सोनिया गांधी ने कहा कि पूरा देश आतंकवाद के खिलाफ एकजुट है। उन्होंने कहा, मैं उन परिवारों का दर्द समझती हूं, जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। उनके प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करती हूं। मैं घायलों के पूर्ण और शीघ्र स्वस्थ होने की भी प्रार्थना करती हूं। कांग्रेस महासचिव और संचार प्रभारी जयराम रमेश ने कहा कि कांग्रेस कश्मीर में पर्यटकों पर हुए कायरतापूर्ण और नृशंस आतंकी हमले की कड़े शब्दों में निंदा करती है। उन्होंने कहा, हम शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं और घायलों के स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि यह समय एकजुट होकर सामूहिक इच्छाशक्ति दिखाने का है। केंद्र सरकार को तुरंत एक सर्वदलीय बैठक बुलानी चाहिए और सभी राजनीतिक दलों को विश्वास में लेना चाहिए। इस हमले का प्रभावी ढंग से जवाब नहीं दिया जाना चाहिए। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने भी आतंकवादी हमले की निंदा की और कहा कि यह बेहद निंदनीय और शर्मनाक कृत्य है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा, निहत्थे और निर्दोष नागरिकों को निशाना बनाना मानवता के खिलाफ अपराध है। यह पूरी तरह से अस्वीकार्य है।

डॉक्टरों पर हर हमले की निगरानी नहीं कर सकते: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, 23 अप्रैल। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को डॉक्टरों पर बढ़ते हमलों से रक्षा के लिए दिशानिर्देश बनाने की मांग करने वाली याचिकाओं पर सुनवाई से इनकार कर दिया। शीर्ष कोर्ट ने कहा कि हर चीज की निगरानी करना कोर्ट का काम नहीं है। जस्टिस बेला एम. त्रिवेदी और जस्टिस प्रसन्ना बी. वराले की बेंच ने सुप्रीम कोर्ट के एक पुराने फैसले का हवाला दिया और कहा कि ऐसे मामलों से संबंधित दिशानिर्देश पहले ही बनाए जा चुके हैं और याचिकाकर्ता अगर चाहें तो उचित कानूनी प्रक्रिया अपना सकते हैं। बेंच ने कहा, आप सुप्रीम कोर्ट से यह उम्मीद नहीं कर सकते कि वह हर काम और गतिविधि पर नजर रखे। याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वकील ने जब डॉक्टरों पर हो रहे हमलों का जिक्र किया, तो बेंच ने कहा, ये सभी घटनाएं बेहद दुर्भाग्यपूर्ण हैं, लेकिन सुप्रीम कोर्ट यहां बैठकर हर एक घटना की निगरानी नहीं कर सकता। याचिकाएं 2022 में दायर की गई थीं, जिनमें डॉक्टरों पर बढ़ते हमलों का जिक्र करते हुए उनकी सुरक्षा के लिए व्यापाक दिशानिर्देश बनाने की मांग की गई थी। एक याचिका में राजस्थान के दौसा में एक महिला डॉक्टर (गाइनोकॉलजिस्ट) की आत्महत्या की घटना की सीबीआई जांच की मांग की गई थी। महिला डॉक्टर ने उस समय आत्महत्या कर ली थी, जब डिलीवरी के दौरान ज्यादा खून बहने से एक मरीज की मौत हो गई और उसके बाद उन्हें भीड़ ने परेशान किया। याचिकाकर्ताओं की तरफ से बुधवार को पेश एक वकील ने सुप्रीम कोर्ट के 21 अक्टूबर 2022 के आदेश का जिक्र किया, जिसमें कोर्ट ने केंद्र सरकार और अन्य को नोटिस भेजकर जवाब मांगा था। एक वकील ने यह भी कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने चाहे कोई फैसला भी दिया हो, लेकिन जमीनी हालात नहीं बदले। इस पर बेंच ने पूछा, तो फिर दोबारा दिशानिर्देश बनाने से क्या फायदा?

डीओजीइ से ध्यान हटा लिया गयाः मस्क

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिकी अरबपति उद्यमी एलन मस्क ने घोषणा की है कि वह अमेरिकी सरकारी दक्षता विभाग के लिए काम करने में कम समय बिताने की योजना बना रहे हैं और अपने टेस्ला इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे। न्यूज के हवाले से मस्क ने कहा, संभवतः अगले महीने, मई से सरकारी दक्षता विभाग के लिए मेरा समय दायित्व काफी कम हो जाएगा।' टेस्ला ने घोषणा की कि उसकी तिमाही आय में 71 प्रतिशत की गिरावट आई है। टेस्ला के कार्यकारी अधिकारी मस्क ने कथित तौर पर मार्च में स्वीकार किया था कि अमेरिकी सरकार के लिए उनके काम ने कंपनी के शेयर की कीमत को प्रभावित किया है। श्री मस्क ने कहा, मुझे लगता है कि मैं सरकारी मामलों पर प्रति सप्ताह एक या दो दिन बिताना जारी रखूंगा, जब तक राष्ट्रपति चाहेंगे कि मैं ऐसा करूं, और जब तक यह उपयोगी है, लेकिन अगले महीने से, मैं टेस्ला को अपना अधिक समय आवंटित करूंगा, अब जबकि सरकारी दक्षता विभाग की स्थापना का प्रमुख काम पूरा हो गया है। उद्यमी ने टेस्ला कॉल के दौरान दोहराया, जैसा कि एनबीसी न्यूज ने उद्धृत किया है, कि वह टेस्ला को इलेक्ट्रिक कार व्यवसाय से हटाकर दो नए उत्पादों में बदलना चाहते हैं- रोबोटैक्सिस और ह्यूमनॉइड रोबोट।

इज़रायली प्रधानमंत्री ने हूती हमलों का कड़ा जवाब देने का लिया संकल्प

यरुशलम। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि यमन के हूती बलों के बार-बार किए गए हमलों का इजरायल कड़ा जवाब देगा। श्री नेतन्याहू ने तेल अवीव में एक सार्वजनिक भाषण के दौरान यह धमकी दी, जिसमें उन्होंने हूतियों और उन सभी लोगों को संबोधित किया जिससे इजरायल को नुकसान पहुँचा है,उन्होंने कसम खाई और कहा कि इजरायल के खिलाफ कोई भी हमला बेकार नहीं जाएगा। इसका जोरदार जवाब दिया जाएगा।' प्रधानमंत्री ने यह स्पष्ट नहीं किया कि जवाब किस रूप में दिया जाएगा, लेकिन कहा कि इजरायल अपने क्षेत्र पर लगातार हमलों को बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि यमन में हूती, जो इजरायल पर गोलीबारी करते रहते हैं, पहले ही इजरायल और अमेरिकी सहयोगियों से भारी हमले झेल चुके हैं। उल्लेखनीय है कि यमन स्थित हूती बलों ने इज़रायल की ओर दर्जनों लंबी दूरी की मिसाइलें और ड्रोन लॉन्च किए हैं और अक्टूबर 2023 में गाजा युद्ध की शुरुआत के बाद से लाल सागर में इजरायल से जुड़े शिपिंग को निशाना बनाया है, ताकि इजरायल की बमबारी के तहत फिलिस्तीनियों के साथ एकजुटता दिखाई जा सके। इज़रायली सेना और लाल सागर में तैनात अमेरिकी नेतृत्व वाले नौसैनिक गठबंधन ने यमन में कई घातक हवाई हमले किए हैं, जिनमें हूती समूह को रोकने के लिए हूती नियंत्रित क्षेत्रों और बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया गया है।

दक्षिण कोरिया ने चौथे जासूसी उपग्रह कक्षा में प्रक्षेपित किया

सोल। दक्षिण कोरिया ने फ्लोरिडा स्थित अमेरिकी अंतरिक्ष अड्डे से अपने पांच सैन्य टोही उपग्रहों में से चौथे को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया है। देश के रक्षा मंत्रालय ने यह जानकारी दी। इस उपग्रह को सोमवार को केप कैनावेरल स्पेस फोर्स स्टेशन से स्पेसएक्स फाल्कन 09 रॉकेट पर प्रक्षेपित किया गया। रॉकेट ने उड़ान भरने के 15 मिनट बाद उपग्रह को कक्षा में स्थापित कर दिया। बाद में उपग्रह ने एक ग्राउंड स्टेशन से संपर्क स्थापित किया। मंत्रालय ने एक बयान में कहा, 'चौथे सैन्य टोही उपग्रह के सफल प्रक्षेपण ने हमारे सशस्त्र बलों की स्वतंत्र निगरानी और टोही क्षमताओं को और मजबूत किया है। तीन उपग्रहों के पिछले सफल प्रक्षेपणों के साथ दक्षिण कोरियाई सेना अब उन्हें एक समूह के रूप में संचालित कर सकती है, जिससे टोही पुनरीक्षण समय में काफी कमी आएगी।' बयान में कहा गया है, 'इससे उत्तर कोरिया द्वारा संभावित उकसावे का अधिक सटीक और समय पर पता लगाने में मदद मिलती है।' दक्षिण कोरिया ने दिसंबर 2023 में पहला टोही उपग्रह प्रक्षेपित किया था, जो उच्च-रिज़ॉल्यूशन इमेजरी के लिए इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल और इन्फ्रारेड सेंसर से लैस है। यह देश इस साल के अंत में अपना पाँचवाँ उपग्रह प्रक्षेपित करने की योजना बना रहा है। इन सभी उपग्रहों के प्रक्षेपित हो जाने के बाद यह देश हर दो घंटे में उत्तर कोरियाई क्षेत्र की निगरानी करने में सक्षम हो जाएगा।

भारत के ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने मुक्तिनाथ के दर्शन किए

काठमांडू। प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली और विदेश मंत्री डॉ. आरजू राणा ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों पर आतंकवादी हमले की निंदा की है। सोशल नेटवर्किंग साइट एक्स पर पीएम ओली ने पहलगाम में आतंकवादी हमले के पीड़ितों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने लिखा है कि नेपाल भारत के साथ दृढ़ता से खड़ा है और आतंकवाद के किसी भी और सभी कृत्यों की कड़ी निंदा करता है। प्रधानमंत्री ने सरकार से सभी आवश्यक सहायता प्रदान करने की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कहा कि पीड़ितों के बीच एक नेपाली नागरिक की रिपोर्ट को सत्यापित करने के लिए विभिन्न एजेंसियों के साथ घनिष्ठ समन्वय स्थापित किया गया है। इसी तरह नेपाल की विदेश मंत्री डॉ. आरजू राणा ने भी इस हमले की निंदा करते हुए शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने कहा है कि घायलों के शीघ्र और पूर्ण स्वस्थ होने के लिए अपनी गहरी शुभकामनाएं व्यक्त करते हैं।

लाहौर पुलिस पर हमला मामले में खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी

एजेंसी

लाहौर। लाहौर की एक आतंकवाद विरोधी अदालत(एटीसी) ने खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंडापुर के खिलाफ गैर-जमानती गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। यह कार्रवाई पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) द्वारा 05 अक्टूबर को लाहौर में आयोजित विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस पर हमले के मामले में की गई है अदालत ने पीटीआई के तीन अन्य वरिष्ठ नेताओं हम्माद अजहर, सईद सिंधु और शहबाज अहमद के खिलाफ भी गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। पुलिस के अनुसार, इन नेताओं को कई बार जांच में शामिल होने के लिए समन भेजा गया, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। पुलिस का कहना है कि इन नेताओं के खिलाफ कई प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज है, जो 05 अक्टूबर 2024 को हुए विरोध प्रदर्शन से जुड़ी हैं। उस दिन पीटीआई कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच

गंभीर झड़पें हुई थीं, जिनमें कई कानून प्रवर्तन अधिकारी घायल हुए थे। यह विरोध प्रदर्शन पीटीआई के संस्थापक और पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान द्वारा 30 सितंबर को दिए गए आह्वान का हिस्सा था। खान, जो उस समय जेल में थे, ने न्यायपालिका के समर्थन और प्रस्तावित न्यायिक संशोधन के खिलाफ देशभर में प्रदर्शनों की घोषणा की थी। इनमें फैसलाबाद, बहावलपुर, मियांवाली, इस्लामाबाद के डी-चौक और लाहौर के मीनार-ए-पाकिस्तान शामिल थे। उल्लेखनीय है कि 05 अक्टूबर को लाहौर एवं इस्लामाबाद में स्थिति तनावपूर्ण हो गई जब प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच हिंसक झड़पें हुईं। गृह मंत्री मोशिन नकवी के अनुसार, इस्लामाबाद के पास हुई झड़पों में 80 से अधिक पुलिसकर्मी घायल हुए। जबकि लाहौर में स्थिति और भी खराब थी, जहां प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच कई जगहों पर टकराव हुआ। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस का इस्तेमाल किया, लेकिन प्रदर्शनकारियों ने जोरदार विरोध जारी रखा। झड़पों में दर्जनों लोग घायल हुए, जिनमें पुलिसकर्मी और प्रदर्शनकारी दोनों शामिल थे। पुलिस अब इन नेताओं की गिरफ्तारी के लिए कार्रवाई तेज कर रही है, जबकि अदालत ने उन्हें जल्द से जल्द गिरफ्तार कर अदालत में पेश करने का आदेश दिया है।

नेपाल के पूर्व उपप्रधानमंत्री रवि लामिछाने को सुप्रीम कोर्ट से नहीं मिली जमानत

एजेंसी

काठमांडू। सहकारी घोटाला मामले में पूर्व उपप्रधानमंत्री रवि लामिछाने को सुप्रीम कोर्ट से कोई राहत नहीं मिली है। कोर्ट की एकल खंडपीठ ने हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ दायर रिट पर आज की सुनवाई करते हुए कोई फैसला नहीं दिया। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) के अध्यक्ष रहे रवि लामिछाने की जमानत याचिका पर सुप्रीम कोर्ट की एकल खंडपीठ में सुनवाई करते हुए जस्टिस अब्दुल अजीज ने कहा कि इस मामले में संयुक्त पीठ सुनवाई करेगा। सुप्रीम कोर्ट से जमानत नहीं मिल पाने के बाद अब अगली सुनवाई तक उन्हें न्यायिक हिरासत में ही रहना होगा। लामिछाने इस समय बुटवल स्थित सुप्रीम सेविंग्स कोऑपरेटिव फ्रॉड मामले में आरोपित हैं। इससे पहले रूपनदेही जिला अदालत ने 1 करोड़ रुपये की जमानत पर उनकी रिहाई का आदेश दिया था। हालांकि, 4 अप्रैल को हाई कोर्ट तुलसीपुर की बुटवल पीठ ने जिला अदालत के फैसले को पलट दिया और निर्देश दिया कि लामिछाने को हिरासत में भेज दिया जाए।

पाकिस्तान ने पहलगाम आतंकी हमले पर मरहम लगाने के बहाने भारत के खिलाफ उगला जहर

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने भारत के जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले पर आज 'जहरबुझी' प्रतिक्रिया दी है। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने इस पर बयान जारी किया है। विदेश मंत्रालय का यह बयान पाकिस्तान के लगभग सभी बड़े अखबारों की वेबसाइट पर उपलब्ध है। बयान में यह भी टिप्पणी की गई है कि पहलगाम भारतीय अवैध कब्जे वाले जम्मू और कश्मीर के अनंतनाग जिले में है। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून अखबार के अनुसार पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय का यह बयान 'भारतीय अवैध कब्जे वाले' जम्मू और कश्मीर के अनंतनाग जिले में हुई घटना के बारे में पूछे गए सवालों के जवाब में आया। बयान के अनुसार पाकिस्तान ने पर्यटकों की हत्या पर चिंता व्यक्त की और पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, 'हम अनंतनाग में हुए हमले में पर्यटकों की जान जाने से चिंतित हैं। हम मृतकों के परिजनों

के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं।' मंत्रालय के बयान के अनुसार, यह हमला क्षेत्र के मुख्य शहर श्रीनगर से लगभग 90 किलोमीटर दूर पहलगाम में हुआ। भारतीय पुलिस के अनुसार हमलावरों ने पर्यटकों के एक समूह पर घात लगाकर हमला किया और नजदीक से गोलियां चलाईं। इस हमले में तीन दर्जन से अधिक लोग घायल भी हुए। इनमें से कई की हालत गंभीर बनी हुई है। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के बयान में भारतीय मीडिया पर निशाना साधा गया है। कहा गया है कि इस हमले के बाद भारतीय मीडिया ने झूठा और निराधार प्रचार करना शुरू कर दिया है।

माउंट एवरेस्ट आधार क्षेत्र में चहल-पहल बढ़ी, एक ही दिन पहुंचे 700 पर्यटक

एजेंसी

काठमांडू। दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट (सागरमाथा) क्षेत्र में एक ही दिन में लगभग 700 पर्यटक पहुंचे हैं। बड़ी संख्या में आगंतुकों के आगमन के साथ ही चहल-पहल बढ़ गई है। अधिकांश पर्यटक विदेशी हैं। इनमें से 608, जबकि घरेलू पर्यटक 92 थे। राष्ट्रीय उद्यान के रेंजर विवेक श्रेष्ठ ने बताया कि मंगलवार शाम पांच बजे तक खुम्बू क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या 700 दर्ज की गई। सागरमाथा आधार शिविर में आने वाले सार्क राष्ट्र के पर्यटक से 1,500 रुपये शुल्क लिया जाता है जबकि अन्य देशों के प्रत्येक विदेशी से 3,000 रुपये लिए जाते हैं। नेपाली नागरिकों के लिए 100 रुपये का प्रवेश शुल्क जमा करना होता है। सागरमाथा पर्वतारोही टेम्बा छिरी शेर्पा ने बताया कि वसंत ऋतु की शुरुआत के साथ इस क्षेत्र में पर्यटकों की अच्छी तादाद देखी गई, जो इस पर्यटन सीजन के लिए सकारात्मक है। उन्होंने बताया कि पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण इस क्षेत्र के सभी होटल भरे हुए हैं, जिसके कारण नए आने वाले पर्यटकों को रहने के लिए होटलों में कमरे नहीं मिल रहे हैं। स्थानीय निकाय ने यहां के लोगों को अपने घर में होम स्टे की सुविधा देने की अपील की है। सागरमाथा आधार शिविर के निकट के लुक्ला एयरपोर्ट में मौसम साफ होने से उड़ानें लगातार हो रही है। तारा एयर के इंचार्ज अमृत मगर के अनुसार स्पष्ट मौसम के साथ

लुक्ला के लिए हवाई उड़ानें बढ़ रही हैं। उन्होंने बताया कि हमने मौसम ठीक होने के कारण इस एयरपोर्ट पर विमानों की संख्या में बढ़ोतरी पर विचार किया जा रहा है।

जापान में डॉलर सात महीने में पहली बार 140 येन से नीचे आया

एजेंसी

टोक्यो। फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल की अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ब्याज दरों में कटौती न करने की आलोचना के बाद अमेरिकी डॉलर सितंबर के बाद पहली बार 140 येन से नीचे गिर गया। जापान की राजधानी टोक्यो में दोपहर करीब 2:30 बजे अमेरिकी डॉलर गिरकर 139.90 येन के आसपास आ गया।र शाम 5 बजे न्यूयॉर्क में यह 140.83-93 येन और टोक्यो में 140.55-57 येन पर कारोबार कर रहा था। जापान टुडे समाचार पत्र की वेबसाइट पर इस संबंध में प्रसारित खबर में कहा गया है कि जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका के वित्त मंत्रियों के बीच इस सप्ताह वाशिंगटन में दोनों देशों की मुद्रा पर बातचीत होने की

उम्मीद है। जापान के वित्तमंत्री कात्सुनोबू काटो अंतरराष्ट्रीय बैठकों में हिस्सा लेने के लिए वाशिंगटन के लिए रवाना होंगे। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय वार्ता गुरुवार को होने की संभावना है। यह वार्ता ऐसे समय में होगी जब ट्रंप ने जापान पर येन के मूल्य को कम करने की नीति अपनाने का आरोप लगाया है। हालांकि जापान सरकार उनके इस दावे को खारिज कर चुकी है। वाशिंगटन रवाना होने से पहले काटो ने कहा कि वह टैरिफ पर केंद्रित दोनों सरकारों के बीच व्यापक वार्ता के हिस्से के रूप में अमेरिकी ट्रेजरी सचिव स्कॉट बेसेंट के साथ विनिमय दर के मुद्दों पर चर्चा करने का इरादा रखते हैं। वित्तमंत्री काटो बुधवार से 20 प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के समूह के वित्तमंत्रियों की दो दिवसीय बैठक में हिस्सा लेंगे। बैंक ऑफ जापान के गवर्नर काजुओ उएदा भी इस बैठक में शामिल होंगे।

यूक्रेन के युद्ध विराम प्रस्ताव पर चर्चा करने की कोई ठोस योजना नहीं : क्रेमलिन

एजेंसी

मॉस्को। रूस ने कहा कि नागरिक बुनियादी ढांचे के खिलाफ दोनों पक्षों की ओर से किये जा रहे हमलों को रोकने के यूक्रेन के हालिया प्रस्ताव को लेकर रूस और यूक्रेन के बीच वार्ता के लिए कोई विशेष योजना नहीं है। रूसी राष्ट्रपति कार्यालय 'क्रेमलिन' के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने कहा कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पुष्टि की है कि वह इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं। इस मामले में हालांकि कोई विशेष विवरण नहीं दिया गया है। श्री पेसकोव ने आतंकवादियों द्वारा बैठक के लिए नागरिक सुविधा का उपयोग करने का उदाहरण देते हुए प्रस्ताव की बारीकियों की ओर इशारा किया, जैसे कि नागरिक बुनियादी ढांचा कब सैन्य लक्ष्य बनाया जा सकता है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने रविवार को कम से कम 30 दिन के लिए नागरिक बुनियादी ढांचे पर लंबी दूरी के ड्रोन और मिसाइलों के उपयोग वाले किसी भी हमले को रोकने का

प्रस्ताव रखा। श्री पुतिन ने हालांकि कहा कि यूक्रेन के प्रस्ताव की जांच की आवश्यकता है और इस मुद्दे पर संभावित रूप से द्विपक्षीय वार्ता के माध्यम से चर्चा की जा सकती है।

पोप फ्रांसिस का अंतिम संस्कार शनिवार को, वेटिकन ने की घोषणा

एजेंसी

वेटिकन सिटी। पोप फ्रांसिस का अंतिम संस्कार शनिवार को होगा। वेटिकन ने कहा कि उनके पार्थिव शरीर को कल सुबह सेंट पीटर बेसिलिका में स्थानांतरित कर दिया जाएगा, ताकि शनिवार को होने वाले उनके अंतिम संस्कार से पहले श्रद्धालु उन्हें श्रद्धांजलि दे सकें।एनबीसी न्यूज और वेटिकन न्यूज के अनुसार, होली सी प्रेस कार्यालय ने घोषणा की कि पोप फ्रांसिस का अंतिम संस्कार शनिवार सुबह 10 बजे सेंट पीटर स्क्वायर में होगा। अंतिम संस्कार की रस्में कार्डिनल कॉलेज के डीन कार्डिनल जियोवानी बैटिस्टा रे की निगरानी में शुरू होंगी। इस दौरान दुनिया भर के पैट्रिआर्क, कार्डिनल, आर्कबिशप, बिशप और पुजारी मौजूद रहेंगे। यूचरिस्टिक उत्सव का समापन अल्टिमा कमेंडेटियो और वेलेडिक्टियो के साथ होगा। यह उत्सव पोप फ्रांसिस की आत्मा की शांति के लिए नौ दिनों के शोक और सामूहिक प्रार्थना की शुरुआत को

चिह्नित करता है। इसके बाद पोप के पार्थिव शरीर को सेंट पीटर बेसिलिका और फिर सेंट मैरी मेजर बेसिलिका में समाधि स्थल पर ले जाया जाएगा।

एनबीसी न्यूज के अनुसार, पवित्र रोमन चर्च के कैमरलेंगो कार्डिनल केविन फैरेल 23 अप्रैल को प्रार्थना अनुष्ठान की अध्यक्षता करेंगे। यह अनुष्ठान सुबह नौ बजे शुरू होगा। होली सी प्रेस कार्यालय के अनुसार, अंतिम यात्रा सांता मार्टा स्क्वायर और रोमन प्रोटोमार्टियर्स स्क्वायर से होकर गुजरेगी। इसके बाद अंतिम यात्रा आर्क ऑफ द बेल्स से होते हुए सेंट पीटर स्क्वायर में प्रवेश करेगी और वहां से केंद्रीय द्वार से गुजरते हुए वेटिकन बेसिलिका में प्रवेश करेगी। कन्फेशन की वेदी पर कार्डिनल कैमरलेंगो वचन की आराधना की अध्यक्षता करेंगे। इस बीच पोप फ्रांसिस के निधन के बाद अमेरिकी कार्डिनल केविन फैरेल वेटिकन के कार्यवाहक प्रमुख बन गए। डबलिन में जन्मे पादरी केविन को देश में कई साल बिताने के बाद अमेरिकी नागरिक के रूप में मान्यता दी गई। फैरेल को 1984 में वाशिंगटन के आर्चडायोसिस में शामिल किया गया था और वे डलास के पूर्व बिशप हैं। फ्रांसिस ने 2016 में उन्हें कार्डिनल घोषित किया था। 2023 में उन्हें वेटिकन के सुप्रीम कोर्ट का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। कार्डिनल अभी चैंबरलेन (कैमरलेंगो) का पद संभालते हैं। उन्हें पोप का मजबूत उत्तराधिकारी माना जाता है।

फाउंडेशन फॉर इंडिया एंड इंडियन डायस्पोरा स्टडीज ने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की निंदा की

एजेंसी

वाशिंगटन। भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिकों के संगठन 'फाउंडेशन फॉर इंडिया एंड इंडियन डायस्पोरा स्टडीज' ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भयानक आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की है। संगठन की यहां जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि 22 अप्रैल को, जिहादी आतंकवादियों ने कश्मीर के पहलगाम में नागरिकों पर क्रूरतापूर्वक हमला किया, जिसमें कम से कम 28 लोग मारे गए, जिनमें से लगभग सभी हिंदू थे जिन्हें सोची समझी साजिश के तहत पहले धर्म की पहचान पूछी गई और फिर निशाना बनाया गया।प्रारंभिक खुफिया जानकारी से पता चलता है कि हमला संभवतः पाकिस्तान के समर्थन से संचालित समूहों द्वारा किया गया था, जिसका भारत में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आतंकवाद को प्रायोजित करने का लंबा रिकॉर्ड है। पिछले सात दशकों में, भारत में इस्लामी आतंकवाद के कारण एक लाख से अधिक लोग मारे गए हैं या विस्थापित हुए हैं, जिनमें से अधिकांश हिंदू और सिख हैं, यह एक मानवीय त्रासदी है जिसकी बहुत कम रिपोर्टिंग की गई है। विज्ञप्ति में कहा गया है कि यह नया हत्याकांड न केवल भारत का अपमान है, बल्कि अमेरिका का भी अपमान करने का एक कायराना प्रयास है, खासकर तब, जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस वर्तमान में दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्रों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए भारत की आधिकारिक यात्रा पर हैं। इससे पहले मार्च 2000 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा के दौरान भी इसी तरह का घातक हमला किया गया था, जिसमें कश्मीर के छत्तीसिंहपुरा नामक गाँव में 36 सिख मारे गए थे। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और अन्य विश्व नेताओं ने इस कायराना हमले की कड़ी निंदा की है और भारत के साथ एकजुटता व्यक्त की है। संगठन ने कहा कि हम वैश्विक समुदाय से शब्दों से आगे बढ़कर एकजुट होने और आतंकवाद को खत्म करने और इसे प्रायोजित करने वाले राज्यों को दंडित करने के लिए निर्णायक कार्रवाई करने का आग्रह करते हैं। विशेष रूप से, हम उन देशों पर प्रतिबंध लगाने का आह्वान करते हैं जो आतंकवादी समूहों को पनाह और समर्थन देना जारी रखते हैं। हम इस जघन्य हमले की तुरंत निंदा करने के लिए अमेरिकी प्रतिनिधि सभा को धन्यवाद देते हैं। हम अमेरिकी कांग्रेस से सभी आतंकवाद की निंदा करने और अपने नागरिकों की रक्षा करने के भारत के अधिकार का समर्थन करने के लिए एक औपचारिक प्रस्ताव पारित करने का भी आग्रह करते हैं।

अमेरिका टैरिफ पर चीन के साथ समझौता करेगाः ट्रम्प

वाशिंगटन ।अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि उन्हें उम्मीद है कि वाशिंगटन और बीजिंग टैरिफ समझौते पर पहुंचेंगे। श्री ट्रम्प ने संवाददाताओं से कहा, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ मेरे संबंध बहुत अच्छे हैंज यह लंबे समय से बहुत अच्छे रहे हैं। हमारे बीच बहुत अच्छे संबंध रहे हैं। और मुझे लगता है कि हम चीन के साथ समझौता करेंगे।

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

सऊदी अरब आज भारत के सबसे मूल्यवान साझेदारों में से एक : प्रधानमंत्री मोदी

जेद्दा। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सऊदी अरब के साथ भारत के बढ़ते संबंधों की 'असीमित क्षमता' की प्रशंसा की है। वे दो दिवसीय यात्रा पर आज जेद्दा पहुंचे हैं। 2016 के बाद से यह उनकी सऊदी अरब की तीसरी यात्रा है। सऊदी अरब के वायु क्षेत्र में पहुंचने पर विशेष सम्मान देते हुए सऊदी वायु सेना के लड़ाकू विमानों ने प्रधानमंत्री के विमान को एस्कॉर्ट प्रदान किया। सऊदी अरब के जेद्दा पहुंचने पर पीएम मोदी का 21 तोपों की सलामी दी गई और 'ऐ वतन मेरे वतन' गीत के साथ जोरदार स्वागत किया गया। समाचार पत्र के साथ विशेष साक्षात्कार में उन्होंने सऊदी अरब को 'एक भरोसेमंद दोस्त और रणनीतिक सहयोगी' बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि 2019 में रणनीतिक भागीदारी परिषद के गठन के बाद से द्विपक्षीय संबंधों में काफी विस्तार हुआ है। इस इंटरव्यू में प्रधानमंत्री मोदी ने खुलकर अपने दिल की बात कही।

हमारा रिश्ता स्थिर

भारत के प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'हमारी साझेदारी में असीम क्षमता है। अनिश्चितता से भरी दुनिया में हमारा रिश्ता स्थिरता के स्तंभ के रूप में मजबूती से खड़ा है।' उन्होंने सऊदी क्राउन प्रिंस और प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन सलमान के नेतृत्व की प्रशंसा की। प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें 'द्विपक्षीय संबंधों का मजबूत समर्थक और एक दूरदर्शी व्यक्ति बताया।' प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उन्होंने विजन 2030 के तहत सुधारों के जरिए वैश्विक प्रशंसा को प्रेरित किया है।

वैश्विक चुनौतियों के बावजूद दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ा

उन्होंने कहा, 'जब भी मैं उनसे मिला हूं, महामहिम ने मुझ पर गहरी छाप छोड़ी है। उनकी अंतर्दृष्टि, उनकी दूरदर्शी दृष्टि और अपने लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने का उनका जुनून वास्तव में उल्लेखनीय है।' प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वैश्विक चुनौतियों के बावजूद दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ा है। इसमें ऊर्जा, कृषि और उर्वरक प्रमुख क्षेत्र हैं। उन्होंने सऊदी और भारतीय व्यवसायों के बीच गहन एकीकरण का स्वागत किया, विशेष रूप से हरित हाइड्रोजन और प्रौद्योगिकी जैसे उभरते क्षेत्रों के लिए इस महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा, 'भारतीय कंपनियों ने सऊदी अरब में विभिन्न क्षेत्रों में अपनी मजबूत उपस्थिति बनाए रखी है।'

प्रधानमंत्री मोदी ने विश्व एक्सपो 2030 और फीफा विश्व कप 2034 की मेजबानी के लिए बोली जीतने के लिए किंगडम को बधाई दी और इस दोहरी सफलता को 'बहुत गर्व' की बात बताया। उन्होंने बढ़ते रक्षा सहयोग और ऐतिहासिक संयुक्त सैन्य अभ्यासों को बढ़ते रणनीतिक विश्वास के संकेत के रूप में भी इंगित किया। सितंबर 2023 में जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान शुरू किए गए भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि यह परियोजना 'पूरे क्षेत्र में वाणिज्य, संपर्क और विकास का एक प्रमुख उत्प्रेरक' होगी।

हमारा संबंध नया नहीं, यह सभ्यागत आदान-प्रदान में निहित

प्रधानमंत्री मोदी अरब न्यूज के एक सवाल पर कहा कि हमारा संबंध नया नहीं है। यह सदियों पुराने सभ्यतागत आदान-प्रदान में निहित है। विचारों से लेकर व्यापार तक, हमारे दो महान देशों के बीच निरंतर प्रवाह रहा है। 2014 से हमारे संबंध लगातार बेहतर होते जा रहे हैं। मुझे याद है कि 2016 में मुझे महामहिम किंग सलमान से किंग अब्दुल अजीज का सम्मान प्राप्त हुआ था। 2019 में रणनीतिक भागीदारी परिषद का गठन एक बड़ी उपलब्धि थी। तब से हमारे बीच सहयोग कई क्षेत्रों में फैल गया है। यह तो बस शुरुआत है। हमारी भागीदारी में असीम संभावनाएं हैं।

राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति ने पहलगाम में आतंकवादी हमले की निंदा की

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की। राष्ट्रपति ने एक्स पर पोस्ट किया, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुआ आतंकवादी हमला चौंकाने वाला और दर्दनाक है। यह एक नृशंस और अमानवीय कृत्य है जिसकी स्पष्ट रूप से निंदा की जानी चाहिए। निर्दोष नागरिकों, खासकर पर्यटकों पर हमला करना बेहद भयावह और अक्षम्य है। जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति मेरी हार्दिक संवेदना है और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करती हूं। उपराष्ट्रपति ने एक्स पर पोस्ट किया, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकवादी हमले से मैं बहुत दुखी हूं। हिंसा के ऐसे कृत्य निंदनीय हैं और इनकी कड़ी निंदा की जानी चाहिए। दुख की इस घड़ी में मेरी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं पीड़ित परिवारों के साथ हैं।

ट्रैफिक पुलिस के एएसआई को टक्कर मार कर फरार हुआ वाहन चालक धरा गया

नई दिल्ली। दक्षिण पश्चिम जिले के वसंत कुंज साउथ व जिले की एंटी स्नैचिंग सेल की संयुक्त टीम ने ट्रैफिक पुलिस के एएसआई को टक्कर मारकर फरार हुए एक कार चालक को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए चालक की पहचान हरियाणा निवासी लियाकत अली के रूप में हुई है। पुलिस ने अपराध में इस्तेमाल स्विफ्ट कार को जब्त कर लिया है। फिलहाल पुलिस आरोपित से पूछताछ कर रही है। दक्षिण पश्चिम जिले के डीसीपी सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि 29 मार्च को इंडियन स्पाइनल सेंटर अस्पताल से सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति को किसीअज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी है। पुलिस अस्पताल पहुंची तो जांच में घायल की पहचान अरविंद कुमार के रूप में हुई है। पूछताछ में घायल अरविंदने बताया कि वह दिल्ली पुलिस की ट्रैफिक यूनिट में बतौर एएसआई कार्यरत हैं। घटना वाले दिन वह महिपालपुर के पास वाहनों की जांच कर रहे थे। उसी दौरान एक कार ने उन्हें टक्कर मार दी। वसंत कुंज साउथ थाना पुलिस ने एएसआई के बयान पर मामला दर्ज किया।डीसीपी के अनुसार मामले को गंभीरता से लेते हुए स्थानीय पुलिस के अलावा जिले की एंटी स्नैचिंग सेल को लगाया गया। पुलिस टीम ने घटनास्थल के आसपास लगेसीसीटीवी फुटेज को खंगाल कर कार का नंबर निकाला और आरोपित लियाकत अली को गिरफ्तार कर लिया।

युवक की चाकू घोपकर हत्या

नई दिल्ली। शाहदरा जिले के जगतपुरी इलाके में सोमवार रात 22 साल के युवक की चाकू घोपकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए नजदीकी अस्पताल के शवगृह में सुरक्षित रखवा दिया है। पुलिस ने हत्या का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शाहदरा जिले के डीसीपी प्रशांत गौतम ने बताया कि सोमवार रात 10:39 बजे जगतपुरी इलाके में एक युवक के खून से लथपथ पड़े होने की सूचना मिली। सूचना मिलते ही जगतपुरी थाना पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और घायल को हेडगेवार अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। डीसीपी ने बताया कि मृतक की पहचान जगतपुरी के बाल्मीकि बस्ती निवासी साजन कुमार के रूप में हुई है। क्राइम और फोरेंसिक टीम से घटनास्थल का निरीक्षण कराया गया है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज को खंगाला जा रहा है, ताकि हत्यारे की पहचान जल्द हो सके। जांच के लिए जगतपुरी थाना पुलिस के अलावा जिले के स्पेशल स्टाफ और एएटीएस को भी लगाया गया है।

बीड़ी देने से मना करने पर दो भाइयों को चाकू से गोदा, एक ही मौत

नई दिल्ली। दक्षिण पूर्वी जिले के पुल प्रहलादपुर इलाके में को बीड़ी देने से मना करने पर हुए विवाद में दो सगे भाइयों को चाकू से गोदने का मामला सामने आया है। हमलावरों ने पीड़ितों को बचाने के लिए आए उनके दोस्त को भी चाकू मारकर घायल कर दिया। वारदात के बाद हमलावर मौके से फरार हो गए। मामले की सूचना घायल के भाई ने पुलिस को दी और घायलों को नजदीकी ईएसआई अस्पताल में भर्ती किया। जहां डॉक्टरों ने घायल 21 वर्षीय सोहेब को मृत घोषित कर दिया जबकि उसके भाई मोहसिन की हालत गंभीर बनी हुई है। वह आईसीयू में भर्ती है। सूचना के बाद पुल प्रहलादपुर थाना पुलिस अस्पताल पहुंची और मृतक की मां सबुक्ता के बयान पर केस दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस ने प्राथमिक जांच के बाद देर रात फिरोज उर्फ मुन्ना, इम्तियाज और सौदागर खान को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपितों की निशानदेही पर दो चाकू भी बरामद किए हैं। दक्षिण पूर्वी जिले के डीसीपी रवि कुमार सिंह ने बताया कि मृतक सोहेब अपने परिवार के साथ जे ब्लॉक, प्रेम नगर, लाल कुआं पुल प्रहलादपुर इलाके में रहता था। वह लोहे के कंटेनर को कार्यालय या फिर घर में बदलने का काम करता था। परिवार में भाई 23 वर्षीय मोहसिन, मां सबुक्ता, पिता सलीम, भाई सहजाद शामिल है। बदमाशों ने मोहसिन को भी चाकू मारा है, जो अस्पताल में भर्ती है। पुलिस को दिए बयान में सोहेब की मां ने बताया कि करीब 11 बजे वह अपने घर में मौजूद थी। इसी दौरान सोहेब घर आया और उसे बताया कि मुन्ना और सनी ने उसे पास के पार्क में थप्पड़ मारा है।

पीएम मोदी कठिन वार्ताकार हैं: जेडी वेंस

जयपुर, 23 अप्रैल। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस अपने परिवार संग चार दिवसीय जयपुर दौरे पर हैं। मंगलवार सुबह नौ बजे जयपुर का आमेर किला देखने पहुंचे। जहां पर विदेशी मेहमानों का अलग ही अंदाज में स्वागत किया गया। आमेर में वेंस फैमिली ने राजस्थानी संस्कृति की झलक देखी। इसके बाद उन्होंने आमेर महल, कांच से बने शीशमहल, पन्ना-मीना कुंड और अनोखी म्यूजियम का दौरा किया। राजधानी जयपुर के ऋ्छ्ष्ट में जेडी वेंस ने कहा, इंडिया में मेरी वाइफ उषा मुझसे बड़ी सेलिब्रिटी बन गई है। इंडिया वर्ल्ड क्लास लेबर का सोर्स है। मेरे ग्रांड पेरेंट्स ने मुझे पाल पोस कर बड़ा किया। उन्होंने मिडल टाउन के बारे में बताया, जयपुर बहुत बड़ा है

NAME CHANGE
I hitherto known as Sudesh Kumari alias Shreya Manchanda D/o Veer Bhan,W/o Dinesh R/o VB-154, Gali No-7, Virender Nagar, Janakpuri B-1 S.O, West Delhi, Delhi-110058 have changed my name and shall hereafter be known as Shreya Manchanda.

NAME CHANGE
I hitherto known as KALLAN YADAV S/O BHOLA NATH YADAV R/O G-2, SECTOR-25, GAUTAM BUDDHA NAGAR, NOIDA, UTTAR PRADESH-201301 have changed my name and shall hereafter be known as ANURAG KUMAR YADAV.

PUBLIC NOTICE
I hitherto known as Padma Devi W/O Late Devender Panth R/O -21, S/F BLK-D, Raju Ext Old Palam Road ,VTC: Kakrola, PO: N.S.I.T. Dwarka, Dist South west Delhi, State: Delhi, 110078, have changed my name and shall hereafter be known as Padma Panth.

NAME CHANGE
I, SHIKHA SINGH BHADAURIYA W/O RAJAN KUMAR residing at H NO-2499, JAIN NAGAR, VTC- KARALA, POST-KARALA, NORTH WEST DELHI-110081 have changed my name to SHIKHA SINGH for all future purposes.

NAME CHANGE
I ,Hari Om Sagar S/O: Raj Pal Singh, R/O Kasana, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh-201310,have changed the name of my minor son Love014 years and he shall hereafter be known as Lakshit Singh .

NAME CHANGE
I RAM SINGH SINGHANIYAN S/O MADARI LAL R/O GAUTAM NAGAR, DARGAH KE PASS, GALI NO 01, MORAR, GWALIOR, MADHYA PRADESH - 474006 HAVE CHANGED MY MY NAME TO RAM SINGH

NAME CHANGE
I, MANOJ KUMAR SHARMA, S/O. LATE H.S. SHARMA, R/O. 23/5, SECTOR-1, PUSHP VIHAR, NEW DELHI 110017. I HAVE CHANGED MY NAME FROM MANOJ SHARMA TO MANOJ KUMAR SHARMA FOR ALL FUTURE PURPOSE.

NAME CHANGE
I hitherto known as Seema Devi alias Nirmla Devi W/O KHUSHI RAM, R/O 616, UDYOG NAGAR T HUTS, Sunder Vihar, PO: Sunder Vihar,West Delhi, Delhi- 110087,have changed my name and shall hereafter be known as SEEMA DEVI.

थक कर लड़खड़ाती दुनिया को चाहिए भारतीयता पर आधारित मॉडलः मोहन भागवत

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि यह दुनिया दो विकल्पों की दुनिया से थक और लड़खड़ा चुकी है और तीसरे मध्यम मार्ग की तलाश में भारत की ओर देख रही है। ऐसे में हमें दुनिया को भारतीयता पर आधारित मॉडल देने होंगे। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक मानसिकता से दूर होने के लिए मन और विचार से भी भारतीयता को अपनाना होगा। डॉ. भागवत ने आज दिल्ली के दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रकल्प अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन (सीईआईएल) के नवनिर्मित केंद्रीय कार्यालय 'यशवंत' का उद्घाटन किया। इसके बाद डॉ. भागवत ने बाल भवन में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम में केंद्र और दिल्ली सरकार के मंत्रियों सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। सरसंघचालक डॉ. भागवत ने नए कार्यालय के उद्घाटन की

शुभकामना देते हुए संघ प्रेरित छात्र संगठन को अपने ध्येय वाक्य ज्ञान, शील और एकता का ध्यान कराया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी परिषद के 58 लाख कार्यकर्ता हैं। इसके बाद भी विद्यार्थी संगठन को विस्तार की दृष्टि से अभी काफी कुछ करना है। वहीं भावनात्मक एकता के अभाव को देखते हुए परिषद के लिए काफी काम बाकी है। ज्ञान एकता के भाव से पैदा होता है और भारत की सनातन परंपरा की दृष्टि एकता की ही है। इसके साथ शील होना जरूरी है, नहीं तो ज्ञान भी किसी काम नहीं आता है। उल्लेखनीय है कि यशवंतराव केलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता थे। उन्हें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के वास्तुकार के रूप में जाना जाता है। 'यशवंतराव केलकर' की संगठन क्षमता की तुलना डॉ केशव बलिराम हेडगेवार से करते हुए संघ प्रमुख डॉ. भागवत ने कहा कि उनसे प्रेरणा लेते हुए कार्यकर्ताओं को काम करना चाहिए। उनके जाने के बाद हमें उनके ही जैसा कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता घटक की तरह होता है और वह सम्पूर्ण का प्रतिनिधित्व करता है। उसमें संभावना बीच रूप में मौजूद होती है। छात्र कार्यकर्ताओं को भी संगठन का प्रतिनिधि बनना चाहिए और अपने आचरण से इसके ध्येय को सार्थक करना चाहिए।

सुरक्षाकर्मियों की पहचान के लिए विशेष उपाय अपनाए जाएंः जूडिशियल कॉउन्सिल

नई दिल्ली (न्यूज वार्ता) जूडिशियल कॉउन्सिल के अध्यक्ष श्री राजीव अग्निहोत्री ने कहा पहलगाम कश्मीर में हुए कायराना हमले की जितनी निंदा की जाएं, उतनी कम है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को आतंकियों ने पर्यटकों पर अंधाधुंध गोलियां बरसा कर 26 लोगों की नृशंस हत्या कर दी। सेना की वर्दी में आए दहशतगर्दों ने यह हमला किया फरवरी,

2019 में पुलवामा में हुए हमले के बाद से जम्मू-कश्मीर में यह सबसे बड़ा घातक आतंकी हमला है । प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को ईमेल भेज कर श्री अग्निहोत्री नें लिखा । पहलगाम के बैसरन में निर्दोष भारतीयों और विदेशियों की हत्या को बहुत गंभीरता से लेने की जरूरत है, क्योंकि 26 लोगों की हत्या करने वाले आतंकवादी सैन्य पोशाक में थे। हाल के वर्षों में जम्मू-कश्मीर में नागरिकों पर यह सबसे बड़ा हमला है। यह मुद्दा बहुत गंभीर प्रकृति का है, आपसे अनुरोध है कि भविष्य में ऐसी किसी भी घटना से बचने के लिए जम्मू-कश्मीर क्षेत्र के वह इलाके जहाँ से घुसपेठ संभव है वहां की सुरक्षा ब ?ाई जाए , पुलिस बलों और खुफिया तंत्र को सतर्कता बरतने और इन क्षेत्रों में अधिक कर्मियों को तैनात करने की ज्यादा आवश्यकता है। इतना ही नहीं सुरक्षाकर्मियों कि पहचान के लिए विशेष उपाय अपनाए जाएं। श्री संजीव चौहान सदस्य मानवाधिकार जूडिशियल कॉउन्सिल ने कहा निर्दोष लोगों की हुई मौत बेहद दुःखद, दुर्भाग्यपूर्ण व अमानवीय है, सरकार को कठोर कार्रवाई के साथ साथ कर पीड़ित परिवारों को उचित मुआवजा , न्याय सुनिश्चित करना चाहिए। दुःख की इस घड़ी में पूरा देश पीड़ित परिवारों के साथ और आतंकवादियों के खिलाफ एकजुट खड़ा है। सभी पीड़ित परिवारों के प्रति गहरी संवेदनाए और सहानुभूति के साथ समस्त परिजनों को इस गहन दुःख को सहन करने हेतु ईश्वर शक्ति प्रदान करे उनके परिजनों को साहस दें।

दिल्ली विधानसभा की समृद्ध विरासत को लोगों तक पहुंचाने के लिए होगा लाइट एंड साउंड शो

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि विधानसभा की समृद्ध विरासत को लोगों तक पहुंचाने के लिए विधानसभा परिसर में एक भव्य लाइट एंड साउंड शो आयोजित किया जाएगा। विधानसभा के इतिहास पर एक डॉक्यूमेंट्री का भी निर्माण किया जाएगा। भविष्य में यहां एक संग्रहालय भी स्थापित किया जाएगा, जिसमें विधानसभा की समृद्ध विरासत को संरक्षित कर प्रदर्शित किया जाएगा। दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता की अध्यक्षता में एक बैठक में विशेषज्ञों और अधिकारियों ने विधानसभा भवन के संरक्षण और संवर्धन के लिए एक समग्र विकास योजना तैयार करने के लिए चर्चा की। विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि दिल्ली विधानसभा को एक जीवंत विरासत स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। उन्होंने सुझाव दिया कि जनता को विधानसभा परिसर के भ्रमण का अवसर प्रदान किया जाए। विशेषकर सप्ताहांत में ताकि वे अपने लोकतंत्र की ऐतिहासिक नींव से सीधे जुड़ सकें। इस पहल के तहत इंदिरा गांधी

राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) तीन सप्ताह के भीतर एक अध्ययन रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा। परियोजना की प्रगति की निगरानी के लिए एक समिति का गठन किया जाएगा, जिसमें आईजीएनसीए, राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली विधानसभा सचिवालय तथा विभिन्न विशेषज्ञों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। बैठक में विशेषज्ञों ने सुझाव दिया गया कि आधुनिक संरक्षण तकनीकों को पारंपरिक मूल्यों के साथ जोड़ते हुए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाए, ताकि भवन की मूल संरचना की आत्मा को बरकरार रखते हुए देश-विदेश के लोगों को एक समृद्ध अनुभव प्रदान किया जा सके। बैठक में पारंपरिक स्थापत्य तकनीकों के संरक्षण की आवश्यकता पर भी बल दिया गया, जिससे हमारे पूर्वजों की कलात्मकता और शिल्प को सम्मान मिल सके। इस पहल का उद्देश्य विधानसभा परिसर को राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विकसित करना है, जो देश-विदेश के लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बने।इस बैठक में आईजीएनसीए के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के डीन (प्रशासन) डॉ रमेश सी गौर और राष्ट्रीय संग्रहालय के महानिदेशक डॉ. बी.आर. मणि आदि शामिल थे।

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने वक्फ कानून निरस्त होने तक आंदोलन का ऐलान किया

एजेंसी

नई दिल्ली। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के तत्वावधान में राजधानी दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में वक्फ बचाओ सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें उपस्थित सांसदों, उलेमा, बुद्धिजीवियों ने एक मत से वक्फ कानून को निरस्त करने की मांग की। उनका कहना है कि यह कानून संविधान की मूल भावनाओं की अवहेलना करता है, इसलिए यह उन्हें किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं है। उनका कहना है कि जब तक इस कानून को निरस्त नहीं किया जाता है, तब तक यह आंदोलन चलेगा और देश के कोने-कोने में इस कानून के खिलाफ आवाज बुलंद की जाएगी।

वक्फ बचाओ सम्मेलन को संबोधित करते हुए ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी ने कहा कि वक्फ संशोधन कानून को लेकर मुस्लिम वर्ग के साथ-साथ देश के दीगर अल्पसंख्यक समुदायों और बहुसंख्यक हिंदू समाज के विभिन्न वर्गों से हमें भरपूर समर्थन मिल रहा है। यह इस बात का सबूत है कि हमारे देश में अभी भी आम लोगों में

भाईचारा कायम है। उन्होंने वक्फ कानून 2025 का समर्थन करने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया और कहा कि हमें जरूर कामयाबी मिलेगी। सम्मेलन में बीमारी की वजह से भाग न ले सके जमीअत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी का संदेश पढ़कर सुनाया गया, जिसमें उन्होंने कहा कि वक्फ संशोधन कानून 2025 हमें स्वीकार्य नहीं है और इसकी लड़ाई हम सड़क से लेकर अदालत तक लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें अदालत से बड़ी उम्मीद है और अदालत इस कानून पर अगली सुनवाई पर अपना फैसला सुनाएगी और मुझे उम्मीद है कि वह हमारे हक में होगा।इस मौके पर एआईएमआईएम के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सऊदी अरब के दौरे का उल्लेख करते हुए कहा कि जब हमारे प्रधानमंत्री का विमान सऊदी अरब की वायु सीमा में पहुंचा, तो उनका स्वागत एफ-16 विमान ने किया, हमें बड़ी खुशी हुई।

आपदा को टालना मुनासिब नहीं लेकिन नुकसान को कम किया जा सकता है : प्रो संतोष

नई दिल्ली। आपदा प्रबंधन विशेषज्ञ एवं इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सिक्योरिटी एंड सेफ्टी मैनेजमेंट (आईआईएसएसएम) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रो संतोष कुमार ने कहा कि यह सच है कि आपदा को टाला नहीं जा सकता है लेकिन सजगता से आपदा से होनेवाले जान-माल के नुकसान को कम जरूर किया जा सकता है।प्रो संतोष नई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में देशभर से जुटे आपदा प्रबंधन के विशेषज्ञों के प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आपदा प्रभावित पहाड़ी क्षेत्रों में हम 3 - 4 हजार करोड़ का निवेश तो गर्व से करते हैं लेकिन आपदा प्रबंधन पर सौ करोड़ खर्च करने में कंजूसी कर जाते हैं। उन्होंने कहा कि सिर्फ सरकार के भरोसे रहकर आपदा प्रबंधन नहीं किया जा सकता लेकिन सरकार को साथ लेकर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के सहयोग से ऐसा किया जा सकता है।प्रो संतोष ने कहा कि प्रधानमंत्री के विकसित भारत के विजन को प्राप्त करने के लिए आपदा प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन पर सरकार के साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। आईआईएसएसएम इस दिशा में संकल्पित है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य राजेन्द्र सिंह ने बताया कि मौजूदा सरकार ने आपदा प्रबंधन के बजट में उल्लेखनीय वृद्धि की है। यही कारण है कि अब आपदा के समय राहत कार्य बहुत तेज गति से हो रहा है। सुविधाओं को बढ़ावा देने की जरूरत है। प्रशिक्षण कार्यक्रम को दक्षिण कोरिया स्थित संयुक्त राष्ट्र आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यालय के प्रमुख संजय भाटिया ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की आपदा को टालने के लिए उसके रिस्क को कम करना चाहिए। इसके लिए आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में काम करने वालों को समय- समय पर प्रशिक्षण लेते रहना चाहिए। इस दिशा में कई संस्थाएं काम कर रही

NAME CHANGE
I, Punit Jhanwar S/o Swaroop Narayan Jhanwar R/o 804, T-10, RPS Savana, Sector-88, Faridabad, Haryana, Have Changed My Minor Son Name Satvik Jhanwar To Saatvik Jhanwar For All Future Purpose.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I BASHIR AHMAD S/O MD. IMRAN ALI ANSARI R/O RZH-111, NEAR PEARL PUBLIC SCHOOL, NIHAL VIHAR, NANGLOI, NILOTHI, WEST DELHI-110041 declare that name of my father has been wrongly written as IMRAN ALI ANSARI in my all eductional documents. The actual name of my father is MD. IMRAN ALI ANSARI which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, KISHWAR TASAWWUR W/O TASABBUR ALI R/O H NO C-184/17A GALI NO 3 CHAUHAN BANGAR DELHI 110053 HAVE CHANGED MY NAME KISHWAR FOR ALL FUTURE PURPOSE

NAME CHANGE
I, JAI PARKASH S/O HARI RAM SHARMA residing at SE-317 E-7 33 FEET ROAD NEAR POLICE CHOWK SANJAY COLONY SEC-23 FARIDABAD HARYANA-121005 . have changed my name to JAI PARKASH SHARMA for all future purpose

NAME CHANGE
I, JC-543939M Rank-NB SUB Name-NIRAJ SINGH RAWAT Father of AYUSH RAWAT residing at VILL-BARGALLA, PO-KAFRA, TEH-DWARAHAT, DIST-ALMORA, UTTARAKHAND-263675, have changed my minor son's name from AYUSH RAWAT to AAYUSH RAWAT for all future purposes vide Affidavit dated 23/04/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I hitherto Known as VIKRANT S/o SURENDER KUMAR residing at House No. C-12/148, Yamuna Vihar, Babar Pur, North East, Delhi - 110053 have changed my name and shall hereafter be known as VIKRANT CHAUHAN.

NAME CHANGE
I SONU D/O SANJAY SHARMA R/O 29 GALI NO-1 CHANDAN PARK SIRASPUR NORTH WEST DELHI 110042 HAVE CHANGED MY NAME TO SONU SHARMA

सार्वजनिक सूचना
मेरी मुव्वकिला जुबैदा खातून पत्नी स्व0 मौ0 मुस्तफा पता-झुग्गी नं0 सी0एन-645, संजय कैंप, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110021 ने अपने पुत्र हाकिम उर्फ बोका एवं पुत्रवधु अंजुम पत्नी हाकिम उर्फ बोका को अपनी तमाम चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है। हाकिम उर्फ बोका एवं मेरी पुत्रवधु मेरी मुव्वकिला के नियंत्रण में नही है। ये दोनो नशे का कारोबार करते हैं एवं इन दोनो के खिलाफ दिल्ली के अलग-अलग थानों में आपराधिक केस विचाराधीन हैं। पुलिस जब भी आती है मुझे ही परेशान करते हैं और मुझे समाज के सामने बेइज्जत करते हैं जबकि थानाध्यक्ष एवं चाणक्यपुरी पुलिस को इन सबके बारे में में पूरी जानकारी होते हुए भी इनके उपर कोई कार्यवाही न करते हुए उल्टा हमारे उपर ही आरोप प्रत्यारोप करते हैं हैं एवं कभी भी थाने बुलाकर थाने में बैठाकर पूछताछ करने लग जाते हैं। आये दिन घर पर भी छापा मारकर परेशान करते हैं। इन दोनो की बजह से समाज के बीच में मेरा जीना दूभर हो गया है। मेरा पुत्र एवं पुत्रवधु मेरी किसी प्रकार से कोई देखभाल एवं सहायता नही करते हैं। भविष्य में इनके किसी भी प्रकार के गैर कानूनी कार्य हेतु मेरी मुव्वकिला की कोई जिम्मेदारी नही होगी। मेरी मुव्वकिला का पुत्र एवं पुत्रवधु किसी आपराधिक गातिविध में संल्पित पाये जाते हैं तो उसके लिए मेरी मुव्वकिला की कोई जिम्मेदारी नही होगी। मेरे पुत्र एवं पुत्रवधु ने मेरे घर पर भी कब्जा कर रखा है।
वैभव कुमार अधिवक्ता
Ch. No. 868 Patiala House Court, New Delhi

NAME CHANGE
I hitherto known as PHANI KRISHNA KURICHETI son of Shri K SARVES KUMAR, residing at E-105, Uninav Hights, Raj Nagar Extension, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201017, have changed my name and shall hereafter be known as KURICHETI PHANI KRISHNA.

NAME CHANGE
I, JC-676567F Rank-NB/SUB Name-SATNAM SINGH CHAK residing at VILL-SAHABAGANJ, PO-REHARIYA, DIST-LAKHMPUR KHERI, UTTAR PRADESH-262804, have changed my minor son's name from SAHAJVEER SINGH to SHAJVEER SINGH for all future purposes vide Affidavit dated 23/04/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
This is to inform the general public that **Mrs. Meena Sharma** is the GPA Holder of Portion of Plot no. 8, Land area measuring 50 Sq. Yds, out of total area 100 Sq. Yds, out of Khasra no. 665, situated in the area of Village Nawada Mazra Hastsal, Delhi, Abadi Colony Known as Lal Dora (1908-09), Uttam Nagar, New Delhi – 110059. She is in possession through Notarized GPA, ATS & WILL dated 08.07.2015 executed by Mr. Gopal Dass Narang in favour of Mrs. Meena Sharma in respect of Said Plot.
Mrs. Meena Sharma intends to transfer the ownership of above-mentioned Plot by way of Sale Deed to **Mr. Abhijeet Khusbas.** Subsequently, **Mr. Abhijeet Khusbas** is in the process of mortgaging the said Unit with **Aditya Birla Housing Finance Limited.** Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 15 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 15-day period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 15-days period by contacting
Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301;
Landline(s): +910120-3101683,
E-mail: accounts@lvnorth.in

सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल विरेंदर सिंह माधुर पुत्र होरी लाल एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी पत्नी विरेंदर सिंह माथुर निवासी एच-16/1423, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 ने अपने पुत्र सर्वेश व पुत्रवधू संजू को इनके दुर्वव्यवहार व गलत आचरण व गलत संगत के कारण मेरे मुवक्किल के नियन्त्रण से पूरी तरह से बाहर हो गये हैं जिसके कारण मेरे मुक्किल ने अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्तियों से बेदखल कर दिया है तथा अपने तमाम रिश्ते नाते विच्छेद कर लिये हैं। यदि कोई व्यक्ति मेरे मुवकिल के पुत्र, पुत्रवधू व इनके बच्चों से भविष्य में किसी प्रकार का कोई भी लेन देन या किसी प्रकार का कोई करार करते है या मेरे मुवकिल के पुत्र, पुत्रवधू किसी प्रकार का कोई अपराधिक कार्य करते हैं तो उसके लिये वे स्वंय जिम्मेदार होंगे और उसके लिए मेरे मुवकिल व उनके परिवार के सदस्यों की किसी तरह की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।
किरन चुफाल (अधिवक्ता)
चेम्बर नं-610, लॉयर्स ब्लॉक,
साकेत कोर्ट, नई दिल्ली

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mr. Parveen Kumar Goyal purchasing Freehold Residential Flat No. UGF-02 on Upper Ground Floor without roof rights area measuring 148.40 sq. mtrs (177.5 sq. yds) out of Built-up property built on Plot no. 19-D Situated at Vrindavan Garden Hadbast at Village Pasonda Pargana Loni Tehsil and District Ghaziabad, U.P., from (1.) Mr. Manbeer Singh (40% share), 2.) Mrs. Nisha Ranjha (40% share) and 3.) Mr. Nikhil Choudhary (20% share)., initially (1.) Mr. Manbeer Singh (40% share), 2.) Mr. Manoj Kumar (40% share) and 3.) Mr. Nikhil Choudhary (20% share) are the jointly owned by virtue of Sale Deed dated 29.06.2022 Vide Doc No.5175, Book No.1, Volume No.16909, on Page Nos.49-72, Registered on 29.06.2022, in S.R-Ghaziabad-III, thereafter Mr. Manoj Kumar died on 26.10.2023, and same property sold to be Mr. Parveen Kumar Goyal our client is declaring that any other Person does not have any right over the said property, which is to be financed by Piramal Capital & Housing Finance Ltd. Branch: Burari, Delhi. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained
[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

NAME CHANGE
I, Kavita Rawat, W/o Ajay Singh Rawat R/o G-1532, Windsor Paradise-2, Rajnagar Ext. Ghaziabad, UP-201017, have changed my name from Kavita Rawat to Kavita Negi. Henceforth I would be known by the name of Kavita Negi for all future purposes.

NAME CHANGE
It is for general information that I SULOCHANA DEVI W/O AMIT KUMAR DEV R/O G-696, JJ Colony, Shakupur, Saraswati Vihar, North West Delhi, Delhi-110034 declare that name of my minor daughter has been wrongly written as MITHU KUMARI in my minor daughter namely MINAKSHI KUMARI aged 16 year in her school record. The actual name of my minor daughter is MINAKSHI KUMARI which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
It is for general information that I, MUNESH KUMARI W/o SURENDER KUMAR, R/o House No.C-12/148, Yamuna Vihar, Babar Pur, North East Delhi -110053, declare that name of mine has been wrongly written as MUNESH in my PPO No.-2-3/PC- 13272/ PRPPO – 4664/ LXR/ TYA /04/ Pen. The actual name of mine is MUNESH KUMARI, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I hitherto known as DEEPAK alias DEEPAK KUMAR alias DEEPAK DHANKAR S/o CHETAN PRAKASH R/o H.No. 1/4049-A, Gali No. 2, Godha Mandir Wali Gali Ram Nagar Extn, Sahadara, North East Delhi, Delhi – 110032 have changed my name and shall hereafter be known as DEEPAK DHANKAR.

PUBLIC NOTICE
TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN
Notice is hereby given to the general public that PNB Housing Finance Ltd., having a branch at Nangloi, New Delhi, proposes to extend a loan facility to Mrs. Nisha Joshi W/o Mr. Shankar Joshi, against the security of a Plot on land area measuring 64 Sq. Yds. i.e. 53.504 Sq. Mtrs. pertaining to Khasra No. 668Mi, situated at Mohalla Thakuran, Kasba Dadri Pargana & Tehsil Dadri, District Gautam Budh Nagar, U.P.-203207. The said property was originally owned by Mr. Tek Chand, who acquired title by virtue of a duly registered Sale Deed bearing Document No. 4630 dated 17.10.1997, executed by Mr. Bishamber Dayal and Mr. Jawahar Lal. Subsequent to the demise of Mr. Tek Chand, he was survived by his legal heirs, namely 1) Mrs. Dulari (Wife) & 2) Mr. Tara Chand (Son). Thereafter, the aforesaid property was sold by Mrs. Dulari and Mr. Tara Chand to Mr. Shambu Verma through a Sale Deed dated 23.04.2016, duly registered as Document No. 6766 dated 23.04.2016. Any person(s) or entity(ies) claiming any right, title, interest, or objection in respect of the said property or the proposed mortgage is hereby requested to submit their claim in writing to Advocate Rishi Maheshwari at +91-9340118309 within Three (3) days from the date of publication of this notice. Failure to respond within the stipulated time shall be deemed as no claim or objection, and the proposed transaction shall proceed without any legal hindrance.
Rishi Maheshwari (Advocate)
RZ-29, Upper Ground Floor,
Bhagwati Garden Jain Road Near
Dwarka More New Delhi 110059.
Email Address: -
lsrlexicure@gmail.com

अभियुक्त की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा **82 Cr.P.C.** देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि **गौरव पुत्रः तेजपात, पताः** मकान नं. 772, गली नं. 2, अमर कॉलोनी, पंचवटी कॉलोनी, लोनी गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने **FIR No. 169/2020, U/s 356/379/411/34 IPC,** थानाः शाहदरा, दिल्ली के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **गौरव** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **गौरव** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)। इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **FIR No. 169/2020, U/s 356/379/411/34 IPC,** थानाः शाहदरा, दिल्ली के उक्त अभियुक्त **गौरव** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **06.08.2025** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
स्वाती शर्मा, एलडी.
मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट
शाहदरा, कमरा नं. 59, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली

DP/5062/SHD/2025
(Court Matter)

आंगनबाड़ी केंद्र बच्चों के प्रारंभिक विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं : श्रुति चौधरी

महिला एवं बाल विकास मंत्री ने किया करनाल में आंगनवाड़ी केंद्र का औचक निरीक्षण

एजेंसी

करनाल। हरियाणा की महिला एवं बाल विकास तथा सिंचाई एवं जल संसाधन मंत्री श्रीमती श्रुति चौधरी ने आज करनाल जिले के झंझाड़ी गांव स्थित आंगनबाड़ी केंद्र का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने केंद्र की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और जिला कार्यक्रम अधिकारी को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान मंत्री श्रीमती श्रुति चौधरी ने आंगनबाड़ी केंद्र के विभिन्न रजिस्टरों की जांच की। बच्चों की उपस्थिति, पोषण और स्वास्थ्य संबंधी रिकॉर्ड का निरीक्षण किया। उन्होंने केंद्र में बच्चों को दिए जाने वाले भोजन की गुणवत्ता को भी जांचा। इस दौरान उन्होंने केंद्र में मौजूद बच्चों से स्नेहपूर्वक बातचीत की और उनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त की।

उन्होंने बच्चों को मिलने वाली सुविधाओं के बारे में भी जानकारी ली। मंत्री ने आंगनवाड़ी केंद्र में साफ-सफाई व्यवस्था, पर्याप्त रोशनी और बच्चों की संख्या के अनुरूप उचित स्थान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि

आंगनबाड़ी केंद्र बच्चों के प्रारंभिक विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहां सुरक्षित वातावरण बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से बच्चों की देखभाल और पोषण पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। श्रीमती चौधरी ने कहा कि सरकार आंगनबाड़ी केंद्रों को बेहतर बनाने और उन्हें सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। निरीक्षण के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला अधिकारी सहित अन्य कर्मचारी भी उपस्थित रहे। सिंचाई एवं जल संसाधन मंत्री श्रीमती श्रुति चौधरी ने करनाल में पश्चिमी यमुना नहर पर मिट्टी कटाव को रोकने के लिए चल रहे निर्माण कार्य का भी निरीक्षण किया। उन्होंने कार्य की प्रगति का जायजा लिया और अधिकारियों को इसे समय पर पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों और नागरिकों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। नहरों में मिट्टी कटाव की समस्या से आसपास के क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा बढ़ जाता है। सरकार इस समस्या को गंभीरता से ले रही है और इसके स्थायी समाधान के लिए हर संभव कदम उठा रही है। उन्होंने अधिकारियों को निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने और कार्य को निर्धारित समय में पूरा करने के निर्देश दिए।

तावडू में भारतीय जनता पार्टी के तत्वाधान में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया

तावडू। शहर के पटौदी रोड़ पर स्थित डाक्टर भीम राव अंबेडकर भवन में संविधान रचयिता, भारत रत्न डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के सम्मान में भारतीय जनता पार्टी के तत्वाधान में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विचार गोष्ठी की अध्यक्षता जिला गुरुग्राम महानगर अध्यक्ष अजीत सिंह यादव ने की। वहीं मुख्य अतिथि के रूप में सोहना-तावडू विधायक तेजपाल तंवर व मुख्य वक्ता पूर्व प्रदेश महामंत्री एससी मोर्चा हीरा लाल नंबरदार रहे। इस विचार गोष्ठी में ब्लाक की सभी पंचायतों व क्षेत्र के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि विधायक तेजपाल तंवर ने संविधान निर्माता, महान दार्शनिक, भारत रत्न एवं शिक्षाविद डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर फूल माला अर्पित कर श्रद्धा सुमन भी अर्पित किए। उन्होंने कहा कि डॉक्टर भीमराव अंबेडकर एक गरीब परिवार से थे और बचपन में उन्हें जातिवाद व भेदभाव का गहरा अनुभव हुआ। उन्होंने कहा कि अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को ब्रिटिश भारत के मध्य भारत प्रांत (मध्य प्रदेश) में स्थित महु नगर सैनिक छावनी में हुआ था।

बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान को सफल बनाने के लिए कृतसंकल्प है जिला प्रशासन : उपयुक्त

नूंह। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने कहा कि जिला प्रशासन महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार के 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान को सफल बनाने तथा हरियाणा राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के निर्देशों की अनुपालना कराने के लिए कृतसंकल्प है। उन्होंने बताया कि बाल विवाह एक कानूनी अपराध है। विवाह के लिए लड़की की न्यूनतम आयु 18 वर्ष और लड़के की न्यूनतम आयु 21 वर्ष होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि कोई उक्त आयु से पहले लड़की और लड़के की शादी करता है तो वह बाल विवाह की श्रेणी में आएगा और दोषी व्यक्ति के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने बताया कि जिला प्रशासन बाल विवाह रोकने के लिए पूरी तहर सजग एवं सतर्क है। उन्होंने बताया कि बुधवार 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया (आखा तीज) पर विवाह-शादियों के लिए अबूझ सावा व शुभ मुहूर्त होने के चलते बहुत अधिक शादियां होती हैं। ऐसे शुभ मुहूर्त पर बाल विवाह होने का अंदेशा भी बना रहता है। इस दौरान बाल विवाह की रोकने के लिए प्रशासन पूरी तरह अलर्ट है। जिला प्रशासन की ओर से बाल विवाह करने व करवाने वालों पर बाल विवाह अधिनियम के तहत नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी।

मंडियों में 50806 मीट्रिक टन गेहूं की हुई खरीद, मंडियों से उठान का कार्य निर्बाध गति से जारी

गुरुग्राम। जिला में रबी सीजन 2025-26 के दौरान गेहूं की खरीद तथा उठाने का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। सरकारी खरीद एजेंसियों द्वारा जिला की मंडियों में अब तक 50806 मीट्रिक टन गेहूं की खरीद की गई है। इस संबंध में जानकारी देते हुए खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि सरकारी खरीद एजेंसियों हैफेड और हरियाणा वेयर हाउसिंग कारपोरेशन द्वारा फर्रुखनगर, जाटौली मंडी, खोड़ तथा सोहना स्थित अनाज मंडियों में गेहूं की खरीद की जा रही है। उन्होंने बताया कि हरियाणा स्टेट वेयरहाउसिंग द्वारा 27972 मीट्रिक टन तथा हैफेड द्वारा 22834 मीट्रिक टन गेहूं की खरीद की गई है। प्रवक्ता ने बताया कि जिला की मंडियों से हरियाणा स्टेट वेयरहाउसिंग ने अभी तक 14400 मीट्रिक टन तथा हैफेड द्वारा 10680 मीट्रिक टन गेहूं का उठान किया जा चुका है।

रंगभूमि में गूंजेगी हंसी की गूंज- गुरुग्राम नगर निगम के सौजन्य से होगा भव्य हास्य कवि सम्मेलन

गुरुग्राम। लंबे समय के अंतराल के बाद एक बार फिर सेक्टर-29 स्थित रंगभूमि ओपन एयर थिएटर हंसी के ठहाकों से गूंज उठेगा। नगर निगम गुरुग्राम के सौजन्य से आगामी शनिवार, 26 अप्रैल को शाम 6 बजे से एक भव्य हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है, जो नागरिकों को स्वस्थ मनोरंजन का अनोखा अनुभव प्रदान करेगा। इस बारे में जानकारी देते हुए नगर निगम गुरुग्राम के अतिरिक्त आयुक्त महावीर प्रसाद ने बताया कि इस विशेष अवसर पर प्रसिद्ध हास्य कवि टीवी शो वाह-वाह फेम और इंडिया लाफ्टर चैंपियन सुंदर कटारिया, हास्य कवि महेन्द्र अजनबी, भावुक हास्य कवयित्री कल्पना शुक्ला और चुटीले अंदाज के लिए जाने जाने वाले सुनहरी लाल वर्मा 'तुरंत' अपने हास्य रस से कार्यक्रम को जीवंत बनाएंगे। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नगर निगम गुरुग्राम की मेयर श्रीमती राजरानी मल्होत्रा होंगी, जबकि निगमायुक्त अशोक कुमार गर्ग, अतिरिक्त निगमायुक्त डॉ. बलप्रीत सिंह सहित निगम के सभी सदन सदस्य एवं अधिकार कार्यक्रम में मौजूद रहेंगे।

कांग्रेस पार्टी में निर्णय लेने की क्षमता नहीं रही,अगर होती तो अपना विपक्ष का नेता तय कर लेते : अनिल विज

एजेंसी

अम्बाला। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री श्री अनिल विज ने कांग्रेस पार्टी के शीर्ष नेताओं से हरियाणा के विधायक की नाराजगी व दिल्ली में इसी मसले पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी में अब निर्णय लेने की क्षमता नहीं रही है।

पत्रकारों से आज बातचीत के दौरान श्री विज ने कहा कि यदि कांग्रेस में अगर निर्णय लेने की क्षमता होती तो सात महीने में यह अपना विपक्ष का नेता तय कर लेते। मगर, यह कोई फैसला नहीं कर पा रहे हैं और यही कारण है कि इस बार बजट सत्र भी बिना नेता प्रतिपक्ष के चला है। यही कारण हो सकता है कि सभी विधायक नाराज हो लेकिन अगर देखा जाए तो पूरे हिंदुस्तान में ही कांग्रेस फैसले नहीं कर पा रही है ।

वक्फ कानून के विरोध में आज दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में बड़ा प्रदर्शन हो रहा है जिसपर प्रतिक्रिया देते हुए कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा वही लोग विरोध कर रहे हैं जिनका न संविधान में विश्वास है और न ही देश की संसद में और न ही कोर्ट में। उन्होंने कहा जब कोर्ट में केस चल रहा है तो उन्हें

कोर्ट के फैसले को देखना चाहिए। उन्होंने कहा संसद में कानून बनाने का अधिकार है और विधिवत तरीके से कानून बनाया भी गया है, जिसमें सभी को बोलने का मौका भी मिला है और जितना यह बोल सकते थे यह वहां बोले भी हैं। कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा इन्हें मान लेना चाहिए की डेमोक्रेसी में जिसके साथ मेजोरिटी होगी राजनीति उसी की है।

अमेरिका गए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने देश की चुनावी प्रक्रिया पर सवाल उठाए हैं उसपर भी ऊर्जा व परिवहन मंत्री अनिल विज ने तीखी प्रतिक्रिया दी और कहा की हमें तकलीफ इस बात की नहीं है कि राहुल गांधी क्या बोलते हैं क्योंकि हमें उनके ज्ञान का पता है। उन्होंने कहा हमें तकलीफ इस बात की है कि वह देश से बाहर जाकर देश की संस्थाओं पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं, देश की बुराई करते हैं, यह बहुत गंभीर बात है। यह बात देश में भी वो कह सकते थे।

कैबिनेट मंत्री विज ने कहा जो बात राहुल गांधी विदेश जाकर कह रहे हैं वह बात राहुल यहां हिंदुस्तान की संसद में भी कह सकते थे जहां उन्हें इसका जवाब भी दिया जाता। मगर वो इस धरती को अपनी धरती नहीं मानते, अपने आप को भारत माता का सपूत नहीं मानते और खुद को विदेशी मानते हैं। इसलिए भारत की धरती पर न बोल विदेश में जाकर बोलना, इसे एक भी हिंदुस्तानी बर्दाश्त नहीं करेगा। श्रम मंत्री अनिल विज द्वारा निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड की बैठक में निर्माण श्रमिकों के सत्यापन में अनियमितताएं पाए जाने के मामले में श्रम मंत्री अनिल विज ने बताया कि बैठक में यह सामने आया कि जिन श्रमिकों की वेरिफिकेशन होती है उनकी वेरिफिकेशन करने के लिए एक आदमी ने एक लाख लोगों की वेरिफिकेशन कर दी तो दूसरे ने 90 हजार लोगों की वेरिफिकेशन कर दी, जो की सोचने वाली बात है। उन्होंने कहा मामला गंभीर था इसलिए इस मुद्दे पर हमने जांच कमेटी बना दी जिसमें एक नुमाइंदा सरकार का एक नुमाइंदा कर्मचारियों का और एक नुमाइंदा इम्प्लॉयर का रखा है ।

डीएचबीवीएन की लापरवाही पर हरियाणा सेवा का अधिकार आयोग सख्त

शिकायतकर्ता को 5 हजार रुपये मुआवजा देने के निर्देश

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा सेवा का अधिकार आयोग ने एक महत्वपूर्ण निर्णय में बिजली विभाग की खामियों के चलते शिकायतकर्ता को 5 हजार रुपये का मुआवजा देने का आदेश दिया है। गुरुग्राम निवासी श्री भरत यादव, ने आयोग में यह शिकायत दर्ज करवाई थी कि उन्होंने दिनांक 01 जनवरी 2025 को घरेलू उपयोग के लिए 2 किलोवाट का नया बिजली कनेक्शन लेने हेतु आवेदन किया था, किंतु इसके बावजूद उन्हें लंबे समय तक विभागीय कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़े। उन्हें कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया गया और अंततः कई महीनों के बाद 26 मार्च 2025 को अनापत्ति प्रमाण-पत्र जारी किया गया। इस देरी के दौरान न तो आवेदन को अस्वीकृत किया गया, न ही कोई जानकारी दी गई, जिससे शिकायतकर्ता को अनावश्यक तनाव झेलना पड़ा। आयोग के प्रवक्ता ने इस मामले की जानकारी देते हुए बताया कि आयोग की जांच में यह स्पष्ट हुआ कि शिकायतकर्ता श्री भरत यादव को बिना किसी गलती के अनावश्यक रूप से मानसिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, जिसके लिए निगम जिम्मेदार है। आयोग द्वारा मामले की सुनवाई के दौरान यह तथ्य सामने आया कि बिल्डर को 24 दिसंबर 2024 को भेजे गए पत्र में निगम ने स्पष्ट रूप से यह बताया था कि एकल-बिंदु कनेक्शन को बहु-बिंदु में बदलने की मंजूरी निगम के पूर्णकालिक निदेशकों द्वारा 30 मई 2024 को ही दे दी गई थी।

मॉनसून से पहले नालों की सफाई को लेकर एसडीएम ने की बैठक, कार्यों की प्रगति पर लिया गया फीडबैक

एजेंसी

गुरुग्राम। एसडीएम परमजीत चहल ने मानसून से पूर्व जलभराव की समस्या से प्रभावी ढंग से निपटने के उद्देश्य से लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में एक अहम समीक्षा बैठक का आयोजन किया। बैठक में विभिन्न विभागों द्वारा नालों की सफाई को लेकर अब तक किए गए कार्यों की प्रगति की समीक्षा की गई और शेष कार्यों को समय पर पूरा करने के निर्देश दिए गए। एसडीएम परमजीत चहल ने सभी संबंधित अधिकारियों से जानकारी ली कि कितने स्थानों पर सफाई कार्य पूर्ण हो चुका है और किन क्षेत्रों में अभी कार्य लंबित है।

सफाई व्यवस्था को दुरुस्त बनाए रखने की दिशा में नगर निगम कर रहा तेजी से कार्य

एजेंसी

गुरुग्राम। सफाई व्यवस्था को उच्च प्राथमिकता पर रखते हुए नगर निगम गुरुग्राम शहर को स्वच्छ बनाने की दिशा में तेजी से कार्य कर रहा है। इसके तहत निगमायुक्त अशोक कुमार गर्ग स्वयं शहर का औचक निरीक्षण कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर संबंधित अधिकारी भी समय-समय पर सफाई व्यवस्था का जायजा ले रहे हैं।

इसी कड़ी में सुबह अतिरिक्त निगमायुक्त महावीर प्रसाद ने आधा दर्जन से अधिक क्षेत्रों का औचक निरीक्षण किया तथा सफाई व्यवस्था का जायजा लेने के दौरान अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। सुबह वे अचानक राजीव चौक पर पहुंच गए। यहां पर उन्होंने उपस्थित स्वच्छता कर्मियों से कहा कि वे क्षेत्र की नियमित सफाई

सुनिश्चित रखें। इसके साथ ही उन्होंने सफाई निरीक्षकों से भी कहा कि वे राष्ट्रीय राजमार्ग-8 के दोनों साइड सर्विस लेन की नियमित सफाई बनाए रखें। अतिरिक्त निगमायुक्त ने राष्ट्रीय राजमार्ग की सर्विस लेन, हीरो होंडा चौक सहित आसपास के क्षेत्रों का भी दौरा किया। इस मौके पर उन्होंने एनएचएआई के अधिकारियों से भी बातचीत की तथा राजमार्ग की ड्रेनेज की सफाई कराने की बात कही। उन्होंने नागरिकों से भी आह्वान किया कि वे इधर-उधर कचरा ना फेंकें क्योंकि इससे गंदगी बढ़ती है।

यदुवंशी का आदित्य यादव यूपीएससी में चयनित

नारनौल। संघ लोक सेवा आयोग द्वारा घोषित नवीनतम परिणामों में यदुवंशी शिक्षा निकेतन का होनहार छात्र आदित्य यादव पुत्र सतीश कुमार ने एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए यूपीएससी की प्रतिष्ठित परीक्षा उत्तीर्ण की है। आदित्य को इस परीक्षा में पूरे भारत में 492 वीं रैंक प्राप्त हुई है और उसका चयन भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) के लिए हुआ है। यह गौरवपूर्ण क्षण न केवल विद्यालय बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए अत्यंत गर्व की बात है। इससे पहले भी आदित्य ने सी.डी.एस. परीक्षा में पूरे भारत में प्रथम स्थान प्राप्त किया था और एन.डी.ए. परीक्षा भी सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की थी। विद्यालय के उप प्राचार्य नरेश यादव ने जानकारी दी कि आदित्य कक्षा नर्सरी से लेकर 12वीं तक यदुवंशी शिक्षा निकेतन का ही छात्र रहा है।

एसपी विजय प्रताप का हुआ ट्रान्सफर, अब राजेश कुमार होंगे नूंह जिले के पुलिस कप्तान

एजेंसी

नूंह। नूंह जिले के पुलिस कप्तान विजय प्रताप का ट्रांसफर हो गया है। अब उनकी जगह नूंह जिले के पुलिस कप्तान राजेश कुमार होंगे। जिन्हें जींद से भेजकर मेवात की जिम्मेदारी दी गई है। एसपी विजय प्रताप के तबादले पर मेवात के सामाजिक व बुद्धिजीवी लोगों ने कहा कि मेवात पुलिस कप्तान विजय प्रताप द्वारा जिले में नशे के खिलाफ चलाया गया अभियान हमेशा याद रखा जाएगा। इस अभियान से एसपी विजय प्रताप ने मेवात के हर वर्ग के लोगों को एक साथ मंच पर लाकर नशे के खिलाफ अभियान को जन आंदोलन बना दिया था। गांव गांव - शहर शहर मेवात में हर व्यक्ति एसपी विजय प्रताप द्वारा चलाए गए अभियान में जुड़कर नशे के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद कर रहा था। इतना ही नहीं इस अभियान से मेवात में नशा तस्करी व नशाखोरी लगभग 80 प्रतिशत कम हो गई थी। जिसके लिए मेवात हमेशा एसपी विजय प्रताप का आभारी रहेगा। एसपी

विजय प्रताप ने नशे के खिलाफ अभियान चलाने से पहले जिले के समाजसेवियों के साथ-साथ बुद्धजीवी लोगों के साथ अपने कार्यालय में बैठक कर जिला में बढ़ते नशा के खिलाफ रणनीति बनाई। इतना ही नहीं इस रणनीति में पहले जिले के बड़े-बड़े गांवों को चिंहित किया। जहां पर उन्होंने गांव के सरपंच व जिम्मेदार लोगों को नशा के खिलाफ महापंचायत करने की बात कही। वही पंचायत में स्वयं एसपी विजय प्रताप ने पहुंच लोगों को नशे के खिलाफ शपथ भी दिलाई।

जिला में एसपी विजय प्रताप द्वारा चलाए गए अभियान में पहले लोगों को समझाने का काम किया। फिर जिले के ऐसे नशा तस्करों और नशाखोरों की पहचान की गई जो जिले में नशा तस्करी को बढ़ावा देने के साथ साथ नशाखोरों को नशे का सामान पहुंचाने में मदद कर नशा तस्करी करते थे। ऐसे लोगों को पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया और उन्हें जेल भेजने का काम किया गया। जिससे नशा तस्करों में हड़कंप मच गया और नशा तस्करी कम होने लगी।

एसपी विजय प्रताप ने नूंह जिले के लगभग तीन दर्जन बड़े गांवों में नशे के खिलाफ महापंचायत बुलाई और इन महापंचायतों में ग्रामीणों के साथ साथ गांव के लोगों का पूरा सहयोग देखने को मिला। इतना ही नहीं इस अभियान से लोगों में पुलिस के प्रति विश्वास जगा और लोग पुलिस कप्तान के भरोसे पर नशा तस्करों को गांवों से पकड़वाने लगे। इतना ही नहीं मंच से लोगों को संबोधित करते हुए एसपी विजय प्रताप ने सीधा सीधा कहा कि नशा तस्करी करने वाले या तो नशा तस्करी छोड़ दें, या फिर मेवात। क्योंकि अब नशा तस्करों के लिए मेवात में कोई जगह नहीं है।

मेवात जिले में एसपी विजय प्रताप द्वारा चलाए गए इस अभियान में जिले के अंदर लगभग 80 फीसदी नशा तस्करी और नशाखोरी बंद हो गई। जिससे मेवात के युवाओं में एक बार फिर अपनी सेहत के प्रति गंभीर देखा गया। मेवात के युवाओं ने एसपी विजय प्रताप के आह्वान पर सुबह सुबह अपने गांवों में एक्सरसाइज करने के साथ-साथ उन्हें दौड़ करते हुए भी देखा गया।

अखिल भारतीय राज्य सरकार पेंशन फेडरेशन ने अपनी मांगों को लेकर प्रधानमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

एजेंसी

नूंह। अखिल भारतीय राज्य सरकार पेंशनर फेडरेशन ने देश भर में सभी जिला उपायुक्त के माध्यम से विरोध प्रदर्शन करते हुए माँग पत्र /ज्ञापन माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार को भेजकर अपील करने का निर्णय लिया था ।उसी कड़ी में मंगलवार को हरियाणा रिटायर्ड कर्मचारी संघ जिला नूंह ने जिला प्रधान फरियाद मोहम्मद के नेतृत्व में जिला नूंह के रिटायर्ड कर्मचारियों ने जिला उपायुक्त नूह को माननीय प्रधानमंत्री के नाम एक ज्ञापन दिया । ज्ञापन देते समय उपायुक्त महोदय कार्यालय नहीं थे इसलिए ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट आशीष कुमार को दिया गया। यह ज्ञापन वित्त अधिनियम 2025 भाग 4 को निरस्त करने और पेंशन भोगियों के अधिकारों के संरक्षण हेतु दिया गया। यह अधिनियम पेंशन के समानता के मूल सिद्धांतो और पेंशन भोगियों को दी गई संवैधानिक सुरक्षा को खतरे में डालता है और रिटायर्ड हुए कर्मचारियों को आठवें वेतन आयोग के लाभों से वंचित करता है । इस ज्ञापन को देने के लिए जिले के पाँचों

खण्डों के रिटायर्ड कर्मचारियों ने भाग लिया जिनमें मुख्य रूप से कमल सिंह सहरावत राज्य संघठन सचिव पूर्व जिला प्रधान, हरकेश सरपंच, उजीना जिला से सचिव अब्दुल गफ्फार, जिला कमेटी सदस्य वीरभान, भजनलाल बघेल नूह, श्याम लाल प्रधान फिरोज पुर झिरका, ईमरत पुन्हाना , मूल चन्द प्रधान तावडू, हरि चन्द नगीना, नानक चन्द नगीना, विजय पाल सिंह नूंह के साथ साथ और बहुत से रिटायर्ड कर्मचारी संघ के साथी इस ज्ञापन को देने मे बड़े उत्साह के साथ शामिल हुए।

हकेंवि में तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा ऑटोकैड सॉफ्टवेयर पर केंद्रित तीन दिवसीय कार्यशाला एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेशवर कुमार ने ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि यह विद्यार्थियों को औद्योगिक दक्षताओं से लैस करने और उन्हें उद्योग जगत की मांगों के अनुरूप तैयार करने में सहायक होते हैं। आयोजन में चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के सहायक आचार्य

PUBLIC NOTICE

I hitherto known as Chirag S/O Sh. Karan Singh R/o H. No. 1598/21, Chunnipura, Rohtak Haryana - 124001 have change my and shall hereafter be known as Chirag Dalal.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, VIRENDER SINGH, S/O Om Parkash, R/o VPO JAULI, TEH. GOHANA. Jauli (61), Sonipat Haryana-131301 declare that name of my daughter has been wrongly written as Dimpy Sharma in my service records. the actual name of my daughter is Sakshi Sharma respectively which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

I hitherto known as PAWAN KUMAR GUPTA S/o LATE SURESH CHAND GUPTA, R/o House No. 158, Main Road Sihi Gate, Near Syal Market, Bhudatt Colony, Ballabgarh, Ballabgarh, Faridabad, Haryana - 121004 have changed my name and shall hereafter be known as PAWAN GUPTA.

किसके इशारे पर सर्वोच्च न्यायालय पर टिप्पणी कर रहे है भाजपा सांसद

एजेंसी

चंडीगढ़। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि उच्चतम न्यायालय पर टिप्पणी कर भाजपा देश की संवैधानिक संस्थाओं की गरिमा को ठेस पहुंचा रही है, भाजपा को बताना होगा कि उनके नेता किसके इशारे पर सर्वोच्च न्यायालय पर टिप्पणी कर रहे है। पर भाजपा न्यायपालिका पर अस्वीकार्य टिप्पणियों पर पूरी तरह से चुप हैं। संविधान पर बार-बार हो रहे हमलों को लेकर पीएम भी मौन है। उधर भाजपा ने अपने सांसदों द्वारा सुप्रीम कोर्ट और सीजेआई पर किए गए हमलों से खुद को अलग तो कर लिया, अगर ये सांसदों के अपने विचार है तो पार्टी ने दोनों सांसदों को कारण बताओ नोटिस जारी क्यों नहीं किया। मीडिया को जारी बयान में सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि भाजपा ने तो सर्वोच्च न्यायालय को भी नहीं बक्शा उस पर भी उंगली उठाई जा रही है, भाजपा संवैधानिक संस्थाओं पर भी भरोसा नहीं कर रही है। कुमारी सैलजा ने कहा कि 11 साल से भाजपा सत्ता में है, उसके नेताओं को जवाब देना चाहिए कि वे किसके इशारे पर सर्वोच्च न्यायालय और कांग्रेस पर उंगली उठा रहे हैं। अगर भारतीय संविधान पर लगातार हो रहे हमलों पर प्रधानमंत्री की लगातार चुप्पी इन हमलों का मौन समर्थन तो नहीं है। भाजपा ने अपने सांसदों द्वारा सुप्रीम कोर्ट और सीजेआई पर किए गए हमलों से खुद को अलग कर लिया, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा का यह कहना कि कि ये टिप्पणियां उनके निजी विचार हैं। कुमारी सैलजा ने भाजपा अध्यक्ष से पूछा है कि दोनों सांसदों के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं की गई और उन्हें कारण बताओ नोटिस क्यों नहीं जारी किया गया। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि प्रदेश की अनाजमंडिया गेहूं से अटी पड़ी है,

फ्लिपकार्ट आईपीओ से पहले अपना मुख्यालय सिंगापुर से भारत में करेगा स्थानांतरित

एजेंसी

नई दिल्ली। वॉलमार्ट के स्वामित्व वाली ई-कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट भारत में घर वापसी की तैयारी कर रही है। देश की प्रमुख ई-कॉमर्स कंपनियों में से एक फ्लिपकार्ट कई सालों तक सिंगापुर में परिचालन करने के बाद अब अपना मुख्यालय सिंगापुर से वापस भारत ला रही है। क्योंकि वह अगले साल भारतीय शेयर बाजार में आईपीओ लाने की तैयारी कर रही है। फ्लिपकार्ट ने एक बयान में कहा कि वह अपना मुख्यालय सिंगापुर से भारत में स्थापित करेगी। इस कदम को देश में संभावित सार्वजनिक सूचीबद्धता की दिशा में एक कदम के रूप में देखा जा सकता है। इसकी मूल कंपनी वॉलमार्ट 17 साल पुरानी कंपनी को सार्वजनिक करने का लक्ष्य बना रही है। वर्तमान में फ्लिपकार्ट का मुख्यालय सिंगापुर में स्थित है। कंपनी ने कहा कि भारत में जन्मी और विकास करने वाली कंपनी के रूप में यह बदलाव हमारे ग्राहकों, विक्रेताओं, भागीदारों और समुदायों की सेवा करने में हमारे ध्यान और तत्परता को और बढ़ाएगा, ताकि देश की बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था और उद्यमिता में योगदान जारी रखा जा सके। अब भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है और घरेलू तकनीकी फॉर्म में निवेशकों के दिलचस्पी बढ़ रही है, जिसके कारण फ्लिपकार्ट ने भारत वापस लौटने का फैसला किया है।

वित्त मंत्री सीतारमण की सैन फ्रांसिस्को में कारोबारी दिग्गजों से मुलाकात, निवेश व तकनीकी सहयोग पर चर्चा

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को सैन फ्रांसिस्को में कई वरिष्ठ कारोबारी नेताओं, अधिकारियों और व्यापार जगत के दिग्गजों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल इंडिया, निवेश और शिक्षा में भारत-अमेरिका सहयोग के अवसरों पर चर्चा की। इसके अलावा उन्होंने स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के हूवर इंस्टीट्यूशन में 'विकसित भारत 2047 की नींव' विषय पर मुख्य भाषण दिया। इस दौरान उन्होंने प्रोफेसर स्टीव डेविस के साथ एक फायरसाइड चैट में हिस्सा लिया। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण इन दिनों अमेरिका और पेरू की 11 दिनों की आधिकारिक दौरे पर हैं। दौरे की शुरुआत में उन्होंने कैलिफोर्निया के इस शहर में भारतीय प्रवासी समुदाय के साथ बातचीत की। सोमवार को उन्होंने कई बिजनेस लीडर्स और कॉरपोरेट एक्जीक्यूटिव्स से मुलाकात की। इस दौरान वित्त मंत्री ने सिलिकॉन वैली की वेंचर कैपिटल फर्म a165 के जनरल पार्टनर अंजनेय मिधा और टेक्नोलॉजी कंपनी VMware के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) रघु रघुराम से मुलाकात की। वित्त मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर दी गई जानकारी में बताया कि बैठक के दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तकनीक के क्षेत्र में हो रहे अभूतपूर्व परिवर्तन पर चर्चा की।

सोनीपत की मंडियों में तीन लाख 28 हजार 403 टन गेहूं की आवक

सोनीपत। हरियाणा में सोनीपत में सांय तक जिला की विभिन्न 24 मंडियों व खरीद केंद्रों में तीन लाख 28 हजार 403 टन गेहूं की आवक हो चुकी है। यह जानकारी उपायुक्त मनोज कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि कुल आवक में से खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने एक लाख चार हजार 251 टन, हैफेड एक लाख 36 हजार 259 टन, हरियाणा वेयर हाउसिंग 68 हजार 710 टन और फूड कार्पोरेशन आफ इंडिया (एफसीआई) द्वारा दस हजार 782 टन गेहूं एवं आमजन के द्वारा (कमर्शियल गेहूं) 8401 टन गेहूं की खरीद की गई है। इसी प्रकार बरोदा खरीद केन्द्र पर 2680 टन, भैंसवाल 3750 टन, बिचपड़ी 1055 टन, दातौली 4846 टन, फरमाणा 7594 टन, गन्नौर 29585 टन, गोहाना 116276 टन, हुल्लाहेड़ी 1208 टन, कासंडी 5110 टन, कथूरा 7095 टन, खानपुर 7577 टन, खरखौदा मण्डी में 46340 टन, मोहाना 9574 टन, मुण्डलाना 6705 टन, मुरथल खरीद केन्द्र पर 8403 टन, नाहरा 6290 टन, पुगथला 9000 टन, पुरखास 6970 टन, रूखी खरीद केन्द्र पर 8750 टन, सनपेड़ा 9074 टन तथा सोनीपत 29432 टन गेहूं की आवक हुई है।

आईएमएफ ने घटाया भारत का विकास अनुमान

नयी दिल्ली । अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने कहा कि वैश्विक अनिश्चितता और व्यापार तनाव के कारण चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर जनवरी में अनुमानित 6.5 प्रतिशत की तुलना में कम होकर 6.2 प्रतिशत रहने की उम्मीद है। विश्व आर्थिक परिदृश्य के अपने दूसरे अपडेट में, आईएमएफ ने कहा कि बढ़ते व्यापार संघर्ष का वित्त वर्ष 27 की विकास संभावनाओं पर भी असर पड़ सकता है, जिसमें भारत की वृद्धि दर पहले अनुमानित 6.5 प्रतिशत की तुलना में 6.3 प्रतिशत रहने का अनुमान है। आईएमएफ ने कहा, भारत के लिए, 2025 में विकास की संभावना अपेक्षाकृत अधिक स्थिर है, जो निजी खपत, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, द्वारा समर्थित है, लेकिन यह दर जनवरी 2025 के डब्ल्यूईओ अपडेट की तुलना में 0.3 प्रतिशत कम है, जो व्यापार तनाव और वैश्विक अनिश्चितता के उच्च स्तर के कारण है। आईएमएफ का संशोधन इस महीने की शुरुआत में विश्व व्यापार संगठन और यूएनसीटीएडी द्वारा इसी तरह की डाउनग्रेडिंग के बाद आया है। भारतीय रिजर्व बैंक ने भी अप्रैल में अपने नीतिगत दृष्टिकोण में फरवरी में अनुमानित 6.7 प्रतिशत से वृद्धि पूर्वानुमान को घटाकर 6.5 प्रतिशत कर दिया है।

श्रीनगर जाने वाली फ्लाइट्स के किराये पर सरकार की नजर, एयरलाइन कंपनियों को सख्त निर्देश

एजेंसी

नई दिल्ली। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने एयरलाइन कंपनियों को यह सुनिश्चित करने को कहा है कि श्रीनगर मार्ग पर हवाई किराये में कोई वृद्धि न हो। मंत्रालय ने कहा कि श्रीनगर के लिए अतिरिक्त उड़ानें भी संचालित की जाएंगी।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने आज जारी बयान में कहा कि केंद्रीय नागर विमाननमंत्री राममोहन नायडू ने कश्मीर में हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर प्रभावित पर्यटकों और पीड़ितों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करने के लिए त्वरित कदम उठाए हैं। नागर विमानन मंत्री ने व्यक्तिगत रूप से गृहमंत्री से बात की और संबंधित अधिकारियों के साथ निकट समन्वय बनाए रखते हुए चौबीस घंटे स्थिति की निगरानी कर रहे हैं। राम राममोहन नायडू ने तत्काल राहत उपायों के रूप में श्रीनगर से 4 विशेष उड़ानें जिसमें दो

दिल्ली और दो मुंबई के लिए व्यवस्था की गई है। साथ ही इसके बाद की निकासी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अतिरिक्त उड़ानों को तैयार रखा गया है। उन्होंने सभी एयरलाइन ऑपरेटरों के साथ एक तत्काल बैठक बुलाते हुए किराया में बढ़ोतरी के खिलाफ सख्त निर्देश जारी करते हुए एयरलाइनों को नियमित किराया स्तर बनाए रखने को कहा गया है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस संवेदनशील समय के दौरान किसी भी यात्री पर बोझ न पड़े।

इसके अलावा नायडू ने सभी एयरलाइन कंपनियों को निर्देश दिया है कि वे राज्य सरकारों और स्थानीय प्राधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए, मृतक व्यक्तियों को उनके गृह राज्यों तक पहुंचाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें। नागर विमानन मंत्रालय पूरी तरह सतर्क है और प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उल्लेखनीय है कि दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में एक प्रमुख पर्यटक स्थल पर आतंकवादियों ने हमला किया था। इस हमले में कम से कम 26 लोग मारे गए और कई अन्य घायल हो गए हैं।

मजबूती का सिक्सर, लगातार छठे दिन बढ़त के साथ बंद हुए सेंसेक्स और निफ्टी

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार लगातार छठे दिन बढ़त के साथ हरे निशान पर बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरुआत भी मजबूती के साथ हुई थी। हालांकि, बाजार खुलते ही बिकवाली के दबाव की वजह से कुछ देर के लिए शेयर बाजार के दोनों सूचकांक लाल निशान में भी गिर गए, लेकिन थोड़ी ही देर बाद लिवाली शुरू हो जाने के कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने दोबारा हरे निशान में अपनी जगह बना ली। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.24 प्रतिशत और निफ्टी 0.17 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए।आज दिन भर के कारोबार के दौरान एफएमसीजी, रियल्टी और पीएसयू बैंक सेक्टर के शेयरों में लगातार खरीदारी होती रही। इसी तरह मेटल, फार्मास्यूटिकल, ऑटोमोबाइल और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स इंडेक्स भी मजबूती के साथ बंद हुए। दूसरी ओर आईटी, एनर्जी, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, टेक, ऑयल एंड गैस तथा कैपिटल गुड्स सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में भी आज आमतौर पर खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.81 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.82 प्रतिशत उछल कर आज के कारोबार का अंत किया।

आज शेयर बाजार में आई मजबूती के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में सवा लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 427.24 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी सोमवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 425.85 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 1.39 लाख करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया।

एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण 15 लाख करोड़ रुपये के पार

एजेंसी

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के एचडीएफसी बैंक के शेयर में करीब दो फीसदी की तेजी आई, जिससे इसका बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) 15 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गया है। ये उपलब्धि हासिल करने वाली यह देश की तीसरी कंपनी बन गई। एचडीएफसी बैंक के अलावा देश की दो कंपनियां ही यह उपलब्धि हासिल कर सकी हैं।

एचडीएफसी बैंक का शेयर बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) पर 1.78 फीसदी चढ़कर 1,961.90 रुपये पर बंद हुआ। दिन के कारोबार में इसका शेयर 2.23 फीसदी उछलकर 1,970.65 रुपये पर पहुंच गया था, जो इसका रिकॉर्ड उच्चतम स्तर है। इसी तरह नेशनल स?टॉक एक?सचेंज (एनएसई) पर शेयर 1.70 फीसदी बढ़कर 1,960 रुपये पर पहुंच गया। बैंक के शेयर में नौ अप्रैल से 11.12 फीसदी की तेजी आई है। इस दौरान बैंक के बाजार पूंजीकरण में 1,50,289.64 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है, जो 15,01,289.37 करोड़ रुपये हो

गया। उल्लेखनीय है कि अभी तक केवल रिलायंस इंडस्ट्रीज और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने ही 15 लाख करोड़ रुपये के बाजार पूंजीकरण को पार किया है। एचडीएफसी बैंक ने शनिवार को बताया था कि वि?त वर्ष 2024-25 की जनवरी-मार्च तिमाही में उसका समेकित शुद्ध लाभ सात फीसदी बढ़कर 18,835 करोड़ रुपये हो गया है। हालांकि, बैंक ने आवास और कॉर्पोरेट ऋण खंडों में मूल्य निर्धारण से जुड़े मुद्दों पर चिंता जताई, जिससे बैंक की ऋण वृद्धि प्रभावित हो रही है।

क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स' प्लेटफॉर्म के खिलाफ खुदरा दुकानदार करेंगे देशव्यापी आंदोलन

एजेंसी

नई दिल्ली। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने 'क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स के काम करने के तौर-तरीकों से देश के पारंपरिक खुदरा दुकानदारों को हो रहे नुकसान पर चिंता व्यक्त करते हुए उनके विरुद्ध देशव्यापी आंदोलन चलाने का संकल्प लिया है। कैट के बैनर तले राजधानी नई दिल्ली में कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स का क्रूर चेहरा विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कॉन्क्लेव में सर्वसम्मति से यह ऐलान किया गया। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि भारत का दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता पारंपरिक खुदरा व्यापार, आज उन कंपनियों के निशाने पर है, जो खुलेआम कानूनों का उल्लंघन कर रही हैं। बाजार को विकृत कर रही हैं और छोटे व्यापारियों को योजनाबद्ध तरीके से बर्बाद कर रही हैं। खुदरा कारोबारियों ने क्विक कॉमर्स व ई-कॉमर्स जैसी कंपनियों के खिलाफ विरोध का बिगुल बजा दिया है। खुदरा दुकानदार क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स

प्लेटफॉर्म के तौर-तरीकों के खिलाफ देशव्यापी विरोध-प्रदर्शन करेंगे, क्योंकि उनका मानना है कि ये कंपनियां खुदरा व्यापार को नुकसान पहुंचा रही हैं। कैट महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल ने बताया कि ऑल इंडिया मोबाइल रिटेलर्स एसोसिएशन (एमरा), ऑल इंडिया कंज्यूमर प्रोडक्ट्स डिस्ट्रीब्यूटर्स फेडरेशन (आईसीपीडीएफ) और ऑर्गनाइज्ड रिटेलर्स एसोसिएशन (ओरा) के साथ मिलकर विदेशी फंड से संचालित ई-कॉमर्स कंपनियों और तथाकथित भारतीय क्विक कॉमर्स प्लेटफार्मों के खिलाफ आंदोलन करने का ऐलान किया है। कारोबारी संगठन कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.सी. भरतिया ने कहा कि 1 मई से पूरे देश में एक निर्णायक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया जाएगा, जिसमें हर राज्य और शहर की व्यापारिक संस्थाएं हिस्सा लेंगी।

तंबाकू किसानों का पंजीकरण प्रमाणपत्र अब तीन साल के लिए होगा वैध

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने तंबाकू उत्पादकों को बड़ी राहत दी है। सरकार ने कहा कि तंबाकू किसानों का पंजीकरण प्रमाणपत्र यानी लाइसेंस अब एक साल के बजाय तीन साल के लिए वैध होगा। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने जारी एक बयान में कहा कि भारत सरकार ने व्यापार करने में आसानी के लिए वर्जीनिया तम्बाकू उत्पादक के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र और खलिहान के संचालन के लिए लाइसेंस को 01 साल के बजाय तीन साल के लिए नवीनीकृत करने का निर्णय लिया है, ताकि वर्जीनिया तंबाकू उत्पादक के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र और खलिहान के संचालन के लिए लाइसेंस के अनिवार्य वार्षिक नवीनीकरण के बोझ को कम किया जा सके। इसका मतलब है कि पंजीकरण/लाइसेंस हर साल

नवीनीकरण की मौजूदा प्रथा के बजाय 3 साल की अवधि के लिए वैध होंगे। लाइसेंस अवधि को एक से तीन साल तक बढ़ाने से देश के लगभग 91,000 खलिहानों को कवर करने वाले 83,500 किसानों को आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा जैसे राज्यों में अपने पंजीकरण के नवीकरण में मदद मिलेगी। वर्जीनिया तंबाकू के लिए पंजीकरण और लाइसेंस आवश्यक भारत में वर्जीनिया तंबाकू को संसद के एक अधिनियम अर्थात तंबाकू बोर्ड अधिनियम, 1975 और उसके तहत अधिसूचित नियमों द्वारा विनियमित किया जा रहा है। तंबाकू बोर्ड अधिनियम, 1975 और उसके तहत अधिसूचित नियमों के अनुसार वर्जीनिया तंबाकू की खेती करने के इच्छुक प्रत्येक उत्पादक को उत्पादक के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र और खलिहान के संचालन के लिए लाइसेंस प्राप्त करना होगा। तदनुसार तंबाकू बोर्ड वार्षिक आधार पर पंजीकरण/लाइसेंसिंग की सुविधा प्रदान कर रहा है।

भारत दुनिया में गैर-निर्मित तंबाकू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा निर्यातक है। (2023 के दौरान मूल्य के संदर्भ में) और भारतीय राजकोष में आय अर्जित कर रहा है। वि?त वर्ष 2024-25 के दौरान तंबाकू निर्यात ने भारतीय राजकोष में 1979 मिलियन अमेरिकी डॉलर (16,728 करोड़ रुपये) का योगदान दिया है।

केंद्र ने आरबीआई के डिप्टी गवर्नर टी रबी शंकर का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ाया

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के डिप्टी गवर्नर टी. रबी शंकर का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ा दिया है। सरकार ने दूसरी बार उन्हें एक साल का और सेवा विस्तार दिया है, जो 3 मई से प्रभावी होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाली मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति (एसीसी) ने विस्तारित अवधि के लिए टी. रबी शंकर की पुनर्नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। एसीसी ने 3 मई से एक साल या अगले आदेश तक उनकी फिर से नियुक्ति को अपनी मंजूरी दे दी है। इस सम्बन्ध में 21 अप्रैल को एक सरकारी आदेश जारी किया गया है।

टी. रबी शंकर को मई, 2021 में तीन साल की अवधि के लिए आरबीआई के डिप्टी गवर्नर के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्होंने केंद्रीय बैंक में विभिन्न पदों पर काम किया है। शंकर कार्यकारी निदेशक की अपनी पिछली भूमिका में आरबीआई में भुगतान और निपटान प्रणाली विभाग, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, फिनटेक और जोखिम निगरानी विभाग की देख-रेख कर रहे थे। उन्होंने इससे पहले सरकारी बॉन्ड बाजारों और ऋण प्रबंधन के विकास के लिए आईएमएफ सलाहकार (2005-11) के रूप में भी काम किया है। अब एक साल मई, 2026 तक के लिए उनका कार्यकाल बढ़ा दिया गया है।

कोयला मंत्रालय ने आरएसआर मोड के जरिए सतत कोयला परिवहन पर हितधारक परामर्श बैठक आयोजित की

एजेंसी

नई दिल्ली। कोयला मंत्रालय ने नई दिल्ली में रेल-समुद्र-रेल (आरएसआर) मोड के जरिए सतत कोयला परिवहन के अवसरों की खोज विषय पर एक हितधारक परामर्श बैठक आयोजित किया। इस परामर्श बैठक का उद्देश्य कोयला लॉजिस्टिक्स मूल्य श्रृंखला में प्रमुख भागीदारों के बीच आम सहमति और तालमेल बनाना था, ताकि अधिक कुशल, लचीले और सतत भविष्य के लिए बहुअयामी परिवहन को बढ़ावा दिया जा सके। कोयला मंत्रालय ने जारी बयान में कहा कि कोयला सचिव विक्रम देव दत्त ने अपने संबोधन में आरएसआर मॉडल को एक दूरदर्शी पहल बताया, जो देश के व्यापक लक्ष्यों जैसे कि रसद दक्षता को बढ़ाने, ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के अनुरूप है। उन्होंने आरएसआर आवाजाही के

सफल कार्यान्वयन के लिए बुनियादी ढांचे को सुव्यवस्थित करने, संचालन को अनुकूलित करने और प्रक्रियात्मक बाधाओं को दूर करने के लिए मंत्रालयों, राज्य सरकारों, बिजली उत्पादन कंपनियों (जेनकोस), कोयला उत्पादकों, बंदरगाह अधिकारियों और रसद प्रदाताओं के बीच घनिष्ठ समन्वय का आह्वान किया। मंत्रालय के मुताबिक इस परामर्श बैठक में रेल मंत्रालय, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (एमओपीएसडब्लू), विद्युत मंत्रालय, राज्य सरकारों, कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल), कैप्टिव और वाणिज्यिक खनिकों, जेनकोस और पत्तन संचालकों के प्रतिनिधियों सहित विभिन्न हितधारकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। चर्चाओं के दौरान हितधारकों ने इंटरमॉडल कनेक्टिविटी को बढ़ाने, पत्तनों पर मशीनीकृत कोयला हैंडलिंग बुनियादी ढांचे को तैनात करने, रेक उपलब्धता में सुधार करने और पत्तन शुल्क को युक्तिसंगत बनाने पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक सुझाव साझा किए। बैठक में वित्त वर्ष 2030 तक रेल-समुद्र-रेल (आरएसआर) मोड के जरिए 120 मिलियन टन कोयले के परिवहन के अनुमान के साथ कोयला मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2026 तक इस मार्ग से 65 मिलियन टन कोयले की ढुलाई करने का लक्ष्य रखा है।

ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफार्म जुपी ने वित्त वर्ष 2023-24 में कमाए 1123 करोड़ रुपये

एजेंसी

नई दिल्ली। ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म जुपी ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए अपने वार्षिक परिणाम घोषित किए हैं। कंपनी ने इस अवधि में 1,123 करोड़ रुपये का शुद्ध राजस्व अर्जित किया और 146 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया है। 2018 में जुपी के स्थापना के बाद यह पहला अवसर है जब जुपी ने लाभ कमाया है। यहां आयोजित प्रेसवार्ता में जुपी के संस्थापक और सीईओ दिलशेर सिंह माल्ही ने कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 हमारे लिए एक ऐतिहासिक साल रहा। स्थापना के बाद से पहली बार कंपनी लाभ में आई है और तेज़ी से गेमिंग के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ रही है। उन्होंने कहा कि जुपी ने ऑनलाइन स्किल-बेस्ड लूडो की शुरुआत की, जिसने ऑनलाइन गेमिंग जगत में एक नई श्रेणी बनाई। उस समय जब रम्मी

और फैंटेसी स्पोर्ट्स का बोलबाला था, जुपी ने कौशल आधारित देश के घर घर में खेले जाने वाले खेल लूडो और सांप सीढ़ी खेलों को ऑनलाइन माध्यम से आगे बढ़ाया। कंपनी की सफलता यह साबित करती है कि संस्कृति से जुड़े गेम सीमाओं और उम्र की सीमा से परे जाकर लोगों को जोड़ते हैं। दिलशेर ने कहा कि जुपी का फोकस हमेशा से नवाचार, नियमों का पालन और जिम्मेदार गेमिंग का रहा है। इसलिए जुपी भारत के गेमिंग बाजार में एक मज़बूत और भरोसेमंद नाम बनाता है। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में देश में खेले जा रहे पारंपरिक खेलों को भी इस ऑनलाइन गेमिंग में लाने की योजना है। केन्द्र द्वारा बनाए गए नियमों और 28 प्रतिशत जीएसटी पर उन्होंने कहा कि वर्ष की दूसरी छमाही में 28 प्रतिशत जीएसटी लागू होने के कारण गेमिंग उद्योग को संरचनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद जुपी लूडो ने अपनी तेज़ अनुकूलन क्षमता, संचालन में लचीलापन और प्रोडक्ट-केंद्रित दृष्टिकोण के कारण अपनी गति बनाए रखी।

भारतीय मानक ब्यूरो ने मानकीकरण में 500 इंटर्नशिप की पेशकश की

नई दिल्ली। राष्ट्रीय मानक निकाय भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने मानकीकरण के क्षेत्र में अपने साझेदार संस्थानों के 500 छात्रों के लिए इंटर्नशिप के अवसरों की घोषणा की। यह घोषणा हाल ही में आयोजित बीआईएस मानकीकरण अध्यक्षों और एमओयू भागीदार संस्थानों के नोडल संकाय के वार्षिक सम्मेलन में की गई। उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि यह इंटर्नशिप चार वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रमों, पांच वर्षीय एकीकृत डिग्री पाठ्यक्रमों, स्नातकोत्तर डिग्री और डिप्लोमा कार्यक्रमों में नामांकित छात्रों को दी जाएगी। आठ हफ्ते की इंटर्नशिप में दो प्रमुख उद्योगों में पूर्व-मानकीकरण कार्य, बीआईएस कार्यालयों के सहयोग से क्यूसीओ (गुणवत्ता नियंत्रण आदेश) अनुपालन सर्वेक्षण और बड़े पैमाने की इकाइयों, एमएसएमई और प्रयोगशालाओं का साइट दौरा शामिल होगा। मंत्रालय के मुताबिक छात्र विनिर्माण और परीक्षण प्रक्रियाओं, कच्चे माल, इन-प्रोसेस नियंत्रण और उत्पाद की गुणवत्ता और अनुरूपता मूल्यांकन के अन्य पहलुओं पर विस्तृत अध्ययन करेंगे। सम्मेलन में 58 साझेदार संस्थानों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

लखटकिया हुआ सोना, देश-दुनिया में सोना ने बनाया मजबूती का नया रिकॉर्ड

एजेंसी

नई दिल्ली। वैश्विक अर्थव्यवस्था को लेकर बनी चिंता के कारण देश और दुनिया में सोने की कीमत में तेजी का दौर लगातार जारी है। भारत के मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) में सोना आज अपने सर्वोच्च स्तर 1,00,116 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक पहुंच गया। इसी तरह अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोना आज पुराने सभी रिकॉर्ड्स को ध्वस्त करते हुए 3,500 डॉलर प्रति औंस के करीब पहुंच गया। आज दिनभर के कारोबार के दौरान सोना पहली बार तीन प्रतिशत जीएसटी जोड़ने के बाद 1 लाख रुपये के स्तर को पार करके 1,00,116 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक पहुंचने में सफल रहा। वहीं, वायदा बाजार में एमसीएक्स पर सोना 1.76 प्रतिशत उछल कर 98,991 रुपए के स्तर पर कारोबार करता नजर आया। सोने की तरह वायदा बाजार में एमसीएक्स पर चांदी 0.62 प्रतिशत की छलांग लगा कर 95,840 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार करता नजर आया। वहीं, जीएसटी समेत चांदी की कीमत 98,715 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर रही। भारतीय बाजार की तरह अंतरराष्ट्रीय बाजार

में भी सोना आज मजबूती के नए शिखर पर पहुंच गया। इस चमकीली धातु ने आज 3,434.37 डॉलर प्रति औंस के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। दिन के कारोबार में सोना मजबूती का नया रिकॉर्ड बनाते हुए 3,499.87 डॉलर प्रति औंस के स्तर तक पहुंच गया। इसी तरह यूएस गोल्ड फ्यूचर्स भी 1.7 प्रतिशत की मजबूती के साथ 3482.40 डॉलर प्रति औंस के स्तर पर कारोबार करता नजर आया। कैपेक्स गोल्ड एंड इन्वेस्टमेंट्स के सीईओ राजीव दत्ता का कहना है कि अमेरिका और चीन के बीच जारी टैरिफ वॉर की वजह से निवेशकों के बीच सेफ इन्वेस्टमेंट के रूप में सोने की मांग लगातार बढ़ी है। इसी तरह डॉलर इंडेक्स में आई गिरावट ने भी सोने की मांग को बढ़ा दिया है। डॉलर इंडेक्स फिलहाल 3 साल के सबसे निचले स्तर पर पहुंचा हुआ है, जिससे निवेशकों के बीच सोने का आकर्षण बढ़ गया है। इसके अलावा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और अमेरिकी फेडरल रिजर्व के चेयरमैन जेरोम पॉवेल के बीच ब्याज दर को लेकर चल रही खींचतान की वजह से भी अमेरिकी बाजार में असमंजस की स्थिति बनी हुई है। इसके कारण निवेशक वॉल स्ट्रीट की तुलना में गोल्ड मार्केट में निवेश करना ज्यादा बेहतर समझ रहे हैं।

गर्मियों में लें दिल्ली-एनसीआर की इन 5 जगहों की यूनिक आइसक्रीम का मजा

अगर आप लोग एक ही तरह की आइसक्रीम खा -खाकर बोर हो गए हैं तो हम आपको लिए कुछ यूनिक फ्लेवर और नए कॉन्सेप्ट वाली आइसक्रीम लेकर आए हैं. इन आइसक्रीम का मजा आप दिल्ली में ही ले सकते हैं. चलिए बताते हैं कि दिल्ली में किन जगहों पर मिलती है यूनिक आइसक्रीम .

आइसक्रीम एक ऐसी चीज है जो सिर्फ बच्चों को ही नहीं बल्कि बड़ों को भी खूब पसंद आती है. गर्मियों के मौसम में तो खासतौर पर आइसक्रीम का खूब मजा लिया जाता है. चिलचिलाती धूप, उमस और गर्म हवाओं के बीच जब ठंडी-ठंडी आइसक्रीम मिल जाती है तो पूरा शरीर अंदर तक ठंडा हो जाता है. मार्केट में भी अब आइसक्रीम की कई वैरायटी और फ्लेवर्स आ रहे हैं, जो खाने में काफी टेस्टी साथ ही यूनिक लगते हैं.

अब तक तो हमने कुल्फी, कोन या पॉप्सिकल आइसक्रीमखाई होगी . लेकिन क्या आप जानते हैं कि अब मार्केट में कई ऐसी आइसक्रीम मिल रही हैं जिनका स्वाद अपने आप में भी बेहद लाजवाब है. ये सिर्फ नया टेस्ट ही नहीं बल्कि नया कॉन्सेप्ट भी लेकर आई हैं . तो चलिए आज इस आर्टिकल में हम आपको दिल्ली एनसीआर की कुछ ऐसी ही जगहें बता रहे हैं जहां आप सबसे हटकर टेस्ट और कॉन्सेप्ट की आइसक्रीम का स्वाद चख सकते हैं.

स्नोबेरी पर लें कोरियन बिंगसू का मजा

ये जगह दिल्ली के दिल कनॉट प्लेस में स्थित है. ये एक छोटी सी शॉप है लेकिन यहां का स्वाद किसी बड़े होटल से कम नहीं है. यहां आपको कोरियन आइसक्रीम बिंगसू आइसक्रीम का स्वाद चखने का मौका मिलेगा. ये इतनी पॉपुलर है कि इस आइसक्रीम को लेने के लिए लंबी-लंबी लाइने लगती हैं . यहां 3 तरह की आइसक्रीम मिलती हैं फ्रेश फ्रूट , वीगेन और बिंगसू आइसक्रीम. ये शॉप रात के 1 बजे तक खुली रहती है. ऐसे में अगर आपको लेट नाइट क्रेविंग होती है तो आप इस जगह जा सकते हैं.

नाइस आइसक्रीम कस्टमाइज आइसक्रीम

दिल्ली साकेत के सेलेक्ट सिटी मॉल में स्थित नाइस आइसक्रीम अपनी यूनिक आइसक्रीम फ्लेवर और कॉन्सेप्ट के लिए जानी जाती है. यहां आप अपने मन मुताबिक आइसक्रीम को कस्टमाइज करवा सकते हैं. इन आइसक्रीम का टेस्ट आपको काफी अपीलिंग लगेगा जो आपको दिल को छु जाएगा. यहां की सबसे खास बात ये है कि अगर आप यहां कुछ नए फ्लेवर का एक्सपेरिमेंट करना चाहते हैं तो ये लोग आपको वैसी आइसक्रीम बनाकर देते हैं. यहां की नाइट्रोजन वाली आइसक्रीम काफी फेमस है. इसमें नाइट्रोजन मिलाकर आइसक्रीम को स्मोकी फ्लेवर और टेक्सचर दिया जाता है.

गेलाटो रोमा की फ्रेश फ्रूट आइसक्रीम

दिल्ली के हौज खास में स्थित ये एक छोटी सी आइसक्रीम वैन है. लेकिन ये अपने टेस्ट और फ्रेश फ्रूट आइसक्रीम की वजह से काफी पॉपुलर है. यहां आपको सीजनल फ्रूट्स बनी फ्रेश आइसक्रीम सर्व की जाती है. यहां की स्विस या डार्क चॉकलेट वाली आइसक्रीम काफी पसंद की जाती है. इसके अलावा यहां आपको कॉफी फ्लेवर की आइसक्रीम के साथ ही विस्की क्रीम और आल्मड गेलाटो आइसक्रीम भी मिल जाएगी. जिसका स्वाद आपको हमेशा याद रहेगा.

सर्वोच्च न्यायालय का वक्फ कानून पर सबको खुश करने वाला अंतरिम आदेश

नये कानून के तहत प्रक्रियात्मक चिंताएं या कथित अतिक्रमण के उदाहरण भी इसे अमान्य करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकते हैं जब तक कि मनमानी या लक्षित भेदभाव का एक स्पष्ट पैटर्न नहीं दिखाया जा सकता है। अब तक, चुनौती देने वालों ने वास्तविक नुकसान के प्रलेखित मामलों के बजाय संभावित दुरुपयोग के जोखिम पर अधिक ध्यान दिया है।विवादास्पद वक्फसंशोधन अधिनियम पर सर्वोच्च न्यायालय के अंतरिम आदेश ने विरोधी खेमों के बीच एक असामान्य संतुलन पैदा कर दिया है, जो निर्णायक हस्तक्षेप के बजाय एक सुनियोजित संतुलनकारी कार्य का संकेत देता है। हालांकि यह आदेश संशोधनों के कार्यान्वयन पर पूर्ण रोक का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, लेकिन यह न्यायिक संयम की एक परत पेश करता है जो आश्वस्त और अस्थिर दोनों है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति किस पक्ष में है। यह कानूनी युद्ध के मैदान को खुला छोड़ देता है, लेकिन संकेत- हालांकि कमजोर- सरकार की स्थिति के अंतिम समेकन की ओर इशारा करते हैं।

सरकार को यथास्थिति बनाये रखते हुए अधिक मजबूत तर्क प्रस्तुत करने का समय देकर, न्यायालय ने अधिक गहन जांच के लिए मंच तैयार किया है जो अंततः विचाराधीन संशोधनों को वैध बना सकता है। सरकार के दृष्टिकोण से, यह अंतरिम व्यवस्था न केवल स्वीकार्य है- परन्तु उसके लिए लाभप्रद भी है। यह मौजूदा कानूनी ढांचे में ठोस खामियों को प्रदर्शित करके बहस को सैद्धांतिक से अनुभवजन्य में बदलने की अनुमति देता है।पूरे गांवों को वक्फ संपत्ति के रूप में नामित किये जाने की रिपोर्ट, अक्सर निवासियों की जानकारी या सहमति के बिना, निराशा की एक लहर पैदा करती है जिसे सरकार न्यायालय के समक्ष बढ़ाना चाहती है। इस मुद्दे को सामूहिक वंचितता और प्रणालीगत अस्पष्टता के रूप में प्रस्तुत करके, सरकार न केवल प्रशासनिक आवश्यकता, बल्कि सामाजिक न्याय की कहानी गढ़ रही है। फिर महत्वपूर्ण बात यह है कि यह कहानी एक ऐसी अदालत के साथ प्रतिध्वनित होने की संभावना है जिसने पिछले फैसलों में कानून की सिद्धांतवादी व्याख्याओं पर संतुलन और व्यावहारिकता की ओर झुकाव दिखाया है।

समान रूप से महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि न्यायालय ने संशोधित कानून के संचालन पर रोक तो नहीं लगाई, लेकिन मुकदमे के लंबित रहने के दौरान यथास्थिति में इस तरह से बदलाव न करने की चेतावनी दी, जिससे किसी भी पक्ष के अधिकारों को नुकसान पहुंचे। यह दोहरा उद्देश्य पूरा करता है। ये कानूनी चुनौती को निरर्थक बना सकते हैं। लेकिन सरकार के लिए, यह अभी भी अपना मामला बनाने, डेटा एकत्र करने और पिछली व्यवस्था के तहत लंबे समय से चले आ रहे अन्याय के लिए आवश्यक सुधार के रूप में संशोधन को तैयार करने का रास्ता खुला छोड़ता है। न्यायालय के निर्देश के शब्द ही कठोर अंतरिम कदम उठाने की अनिच्छा को दर्शाते हैं, जो अंतिम फैसले के समय उसके हाथ बांध सकते हैं।

इस स्थिति से जो उभरता है, वह एक तरह की न्यायिक हेजिंग है- चुनौती देने वालों को उम्मीद देने के लिए पर्याप्त अस्पष्टता, लेकिन सरकार के लिए पैंतरेबाज़ी करने के लिए पर्याप्त जगह। चुनौती देने वालों को निश्चित रूप से न्यायालय द्वारा की गयी कुछ टिप्पणियों से सांत्वना मिली है, जो संशोधनों से प्रतिकूल रूप से प्रभावित लोगों के अधिकारों के लिए कुछ हद तक सहानुभूति का संकेत देती हैं। लेकिन यह सांत्वना अंततः वास्तविक से ज़्यादा बयानबाज़ी साबित हो सकती है। न्यायालय का इतिहास बताता है कि जब तक विचाराधीन कानून स्पष्ट रूप से असंवैधानिक या घोर अन्यायपूर्ण न हो, तब तक यह विधायी और कार्यकारी शाखाओं के अधीन रहता है, खासकर जब व्यापक शासन संबंधी मुद्दे शामिल हों।

क्रिश्चियन एलायंस और एसोसिएशन ऑफ़ सोशल एक्शन जैसे नये हस्तक्षेपकर्ताओं के साथ सरकार का रणनीतिक गठबंधन इसके हाथ को और मज़बूत करता है। इन समूहों का तर्क है कि पिछले कानून को धार्मिक या संस्थागत दावों के तहत व्यक्तियों- अक्सर अन्य अल्पसंख्यक समुदायों से- को उनके वैध संपत्ति अधिकारों से वंचित करने के लिए हथियार बनाया गया था। ऐसी आवाज़ों को एकजुट करके, सरकार कानून को बहुसंख्यकवादी थोपे जाने के रूप में नहीं, बल्कि एक धर्मनिरपेक्ष, समावेशी सुधार के रूप में फिर से परिभाषित कर रही है। यह पुनर्स्थापन महत्वपूर्ण है। यह मुद्दे को एक संकीर्ण प्रशासनिक बदलाव से संपत्ति के अधिकारों को बहाल करने और ऐतिहासिक असंतुलन को ठीक करने के लिए एक नैतिक धर्मयुद्ध में बदल देता है। न्यायपालिका, जब इस तरह के नैतिक ढांचे का सामना करती है- खासकर अगर वास्तविक जीवन की गवाही और आंकड़ों से इसकी पुष्टि होती है - अक्सर विधायी इरादे को बनाये रखने की ओर झुक जाती है जब तक कि एक मजबूत संवैधानिक उल्लंघन साबित न हो जाये।नये कानून के तहत प्रक्रियात्मक चिंताएं या कथित अतिक्रमण के उदाहरण भी इसे अमान्य करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकते हैं जब तक कि मनमानी या लक्षित भेदभाव का एक स्पष्ट पैटर्न नहीं दिखाया जा सकता है।

अब तक, चुनौती देने वालों ने वास्तविक नुकसान के प्रलेखित मामलों के बजाय संभावित दुरुपयोग के जोखिम पर अधिक ध्यान दिया है। इसके विपरीत, सरकार मौजूदा प्रणाली की विफलताओं पर ध्यान केंद्रित कर रही है, जो पहले से ही मूर्त और प्रदर्शन योग्य हैं। साक्ष्य की गुणवत्ता और प्रकृति में यह विषमता अंतिम निर्णय में भारी पड़ सकती है।इसके अलावा, अदालत की अंतरिम टिप्पणियों की भाषा संभावित जटिलताओं के बारे में गहरी जागरूकता का सुझाव देती है जो विधायी प्रक्रिया में समय से पहले हस्तक्षेप करने से उत्पन्न हो सकती हैं। इस बात पर जोर देकर कि मामले के लंबित रहने के दौरान कोई नयी जटिलताएं पेश नहीं की जानी चाहिए, अदालत समय खरीदती हुई प्रतीत होती है - न कि समय पर निर्णय लेने के लिए कानून के बारे में बात करना और बिना व्यवधान पैदा किए निष्पक्ष सुनवाई करना। यह सतर्क दृष्टिकोण, तटस्थ प्रतीत होते हुए भी, अक्सर यथास्थिति या इस मामले में, नये पेश किये गये परिवर्तनों के पक्ष में काम करता है।

एक बार जब कोई कानून व्यवस्था में स्थापित हो जाता है - यहां तक कि एक अंतिम क्षमता में भी- तो इसे उलटना संस्थागत रूप से अधिक कठिन हो जाता है जब तक कि ऐसा करने के लिए कोई भारी कारण न हो।इसके अतिरिक्त, संशोधनों का समर्थन करने वाली आवाज़ों की बढ़ती संख्या से न्यायालय के प्रभावित होने की संभावना है, विशेष रूप से हाशिए के समुदायों और सामाजिक वकालत समूहों से। ये हितधारक अपने साथ एक हद तक नैतिक और सामाजिक-राजनीतिक वैधता लाते हैं जिसे नज़रंदाज़ करना मुश्किल है। कानूनों के पिछले शासन के तहत बहिष्कार और बेदखली के उनके आख्यान एक भावनात्मक और मानवीय आयाम पेश करते हैं जो अन्यथा एक अमूर्त कानूनी प्रतियोगिता हो सकती है। यदि चुनौती देने वाले तुलनात्मक रूप से सम्मोहक प्रति-कथा प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं - जो कानूनी तकनीकों से परे हो और न्याय को एक आंतरिक तरीके से संबोधित करे-तो पेंडुलम सरकार के पक्ष में झूलता रहेगा।

संपादकीय

राहुल ने खोली चुनाव आयोग की पोल

लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी जब भी विदेश दौरों पर जाते हैं, भारतीय जनता पार्टी और उसकी सरकार की जान सांसत में होती है। राहुल गांधी इस समय नेता प्रतिपक्ष हैं ही, उन्हें एक बड़े नेता के तौर पर भी देखा जाता है। देश में तो राहुल गांधी भाजपा एवं उसकी एनडीए सरकार के खिलाफ़ संसद के भीतर-बाहर अभियान छेड़े हुए हैं ही, विदेशों में भी प्रवासी भारतीयों, छात्रों, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों से वे लोकतंत्र के लिए अपनी चिंताओं को साझा करते हैं। राहुल अभी अमेरिका प्रवास पर हैं। वहां उन्होंने अपनी पहली सभा में भारत के केन्द्रीय निर्वाचन आयोग की कार्यपद्धति की जमकर आलोचना की। किस तरह से पूरी निर्वाचन पद्धति सत्तारुढ़ भाजपा के पक्ष में काम करती है, उन्होंने इसका लेखा-जोखा सामने रखा है।

अमेरिका के बोस्टन शहर पहुंचे राहुल ने व्यवसायियों और वहां रहने वाले भारतीयों से बातचीत में भारत के चुनाव आयोग पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि %हमारे सामने यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि चुनाव आयोग ने समझौता कर लिया है और निर्वाचन प्रणाली में व्यापक गड़बड़ियां हैं। राहुल गांधी ने कहा-

मैंने यह कई बार बताया है, खासकर महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में प्रदेश के वयस्क नागरिकों की संख्या से कहीं अधिक लोगों ने वोटिंग की। चुनाव आयोग द्वारा शाम 5.30 बजे तक मतदान के आंकड़े जारी किये गये थे। बाद में जो अंतिम आंकड़े प्रदान किये गये उसके अनुसार शाम 5.30 बजे से 7.30 बजे के बीच 65 लाख लोगों ने मतदान किया। ऐसा होना संभव ही नहीं है क्योंकि एक व्यक्ति को मतदान करने में लगभग 3 मिनट लगते हैं। इस हिसाब से तो सुबह 2 बजे तक मतदाताओं की कतारें लगनी चाहिये थीं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जब कांग्रेस व विपक्ष ने आयोग से वीडियो सबूत मांगे तो उसे न केवल मना कर दिया गया बल्कि आयोग ने कानून ही बदल दिया ताकि विपक्षी दल वीडियोग्राफी के लिए न कह सकें।%

गौरतलब है कि राहुल ने अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान ऐसे वक्त में चुनावी गड़बड़ियों की ओर इशारा किया है जब कुछ ही दिनों पहले राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और उनके खासमखास दुनिया के सबसे अमीर कारोबारी एलन मस्क ने साफ किया है कि इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से निष्पक्ष चुनाव नहीं हो सकते। बैलेट पेपर की हिमायत करते हुए मस्क ने तो यहां तक कहा है कि ईवीएम को हैक किया जा सकता है। यानी वे उस आरोप की पुष्टि कर रहे हैं जो भारत के कई विपक्षी दल 2022 से लगा रहे हैं। आरोप हैं कि पिछले साल हुए लोकसभा चुनाव में वोटिंग मशीनों में बड़े पैमाने पर धांधली कर भाजपा ने दो-चार नहीं वरन लगभग 80 सीटें जीती हैं। इतना ही नहीं, कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी एक खास पैटर्न के द्वारा हारती हुई भाजपा ने चंद घंटों में इतनी सीटें जीत लीं कि वह सरकार बनाने में कामयाब हो गयी। राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र समेत कई राज्यों के उदाहरण इस सिलसिले में दिये जाते हैं।

वैसे तो भारत में जिस तरह से शासकीय मशीनरी के जरिये लोकतंत्र को अपहृत किया गया है और मोदी सरकार निरंकुश तरीके से काम कर रही है, वह दुनिय अब जान चुकी है, राहुल द्वारा जो बातें भारतीय समुदाय के समक्ष कही जा रही हैं, वह दूर तलक जायेगी क्योंकि वहां का मीडिया एक तरह से वैश्विक कहा जाता है जे निश्चित ही भारतीय मीडिया के मुकाबले बहुत अधिक जनतांत्रिक, स्वतंत्र और निष्पक्ष है। भारत का मीडिय विपक्ष की बातों को जहां स्थान नहीं देता वहीं अमेरिकं या लोकतांत्रिक रूप से परिपक्व किसी भी देश क मीडिया सरकार की बजाय प्रतिपक्ष को तरज़ीह देता है इस लिहाज से कहा जा सकता है कि राहुल गांधी कं बातें एक बार फिर से विश्वपटल पर प्रमुखता से लोगं के सामने आयेगी।अनुमानों के मुताबिक भाजपा ने राहुल के इस बयान को संवैधानिक संस्थाओं का अपमान% बताया तथा राहुल पर देश को बदनाम करने की सुपार्र लेने का आरोप लगा दिया है। पार्टी के प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि, राहुल गांधी विदेश जाकर संवैधानिक संस्थाओं का अपमान करते हैं। यही उनकं पहचान बन गई है।

गंभीर चिंता का विषय है चपरासी के लिए उच्च डिग्रीधारियों के आवेदन

सरकारी नौकरी में तो एक तरह का समझौता हो जाता है कि जो काम के प्रति निष्ठावान है उसे काम से लाद दिया जाता है और जो काम के प्रति अधिक गंभीर नहीं होते हैं उन्हें कहने को तो नाकारा कह दिया जाता है पर वास्तव में इतना कहने भर से उन्हें काम के बोझ की मुक्ति मिल जाती है।

अब इसका शिक्षा व्यवस्था को ही दोष दिया जाए या बढ़ती बेरोजगारी या फिर सरकारी नौकरी का मोह माना जाये कि राजस्थान के सरकारी दफ्तरों में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के पदों में भर्ती के लिए मांगे गये आवेदन में 20 अप्रेल तक 23 लाख 65 हजार से अधिक आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। मजे की बात यह है कि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के 53749 पदों के लिए आवेदन के लिए निर्धारित योग्यता दसवीं पास होना है वहीं इस दसवीं पास के पद के लिए आवेदन करने वालों में पीएच. डी, ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट ही नहीं तकनीकी षिक्षा प्राप्त बीटेक और बीएड जैसी योग्यताधारी शामिल है। इसका मतलब यह हुआ कि आईएएस, आईपीएस, आरएएस, प्रोफेसर, शिक्षक या प्रदेशों की सिविल सर्विस व अन्य इसी तरह के उच्च पदों की योग्यता को पूरी करने वाले युवक रोजमर्रा की भाषा में कहें तो चपरासी की नौकरी के लिए आवेदन करने में किसी तरह का संकोच नहीं कर रहे हैं। यह हालात हमारी संपूर्ण व्यवस्था को प्रश्नों के घेरों में खड़ा कर देती हैं। आखिर हमारी व्यवस्था जा कहां रही है। इससे यह भी साफ हो जाता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त चयनित नहीं होते हैं तो सवाल यह उठेगा कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले भी चपरासी की परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सकें। वहीं किसी कारण से शिक्षा पूरी नहीं कर सकने वाले युवक दसवीं की परीक्षा ही पास कर सके हैं और चपरासी के पद के लिए योग्य है तो उच्च शिक्षितों, अनुभवियों के सामने उनके लिए तो चयन की संभावना लगभग शून्य की समझी जानी चाहिए। यदि समान योग्यता वाले आवेदन इतनी बड़ी संख्या में होते तो एक अनार सौ बीमार वाली बात तो हो जाती पर फिर सीधा सीधा यही कहा जाता कि रोजगार के अवसर कम है पर उच्च अध्ययन प्राप्त युवाओं के चपरासी के पद के लिए आवेदन करना हमारी केवल शिक्षा व्यवस्था ही नहीं अपितु पूरी व्यवस्था पर ही सवाल खड़े कर रहे हैं। आखिर ऐसा क्या कारण है कि युवाओं को योग्यता के आधार पर नौकरी नहीं मिल पा रही।इससे यह तो साफ हो जाता है कि कहीं ना कहीं पूरी व्यवस्था में ही दोष है। एक और तो सातवें वेतन आयोग के बाद से युवाओं में सरकारी नौकरी का मोह बढ़ा है। फिर रही सही कसर हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था ने पूरी कर दी है जब चुनावों में मुख्य मुद्दा रोजगार को लेकर उठाया जाता है। चुनावों में रोजगार या यों कहें कि बेरोजगारी एक प्रमुख मुद्दा होना चाहिए इससे नकारा नहीं जा सकता है पर केवल सरकारी नौकरी का ही चस्मा दिखाया जाता है तो परिणाम फिर इसी तरह के आते हैं। आजादी के बाद निजी क्षेत्र ने काफी विस्तार किया है। एक समय ऐसा भी रहा है कि जब युवाओं का क्रेज निजी क्षेत्र के प्रति रहता था। निजी क्षेत्र में वेतन-भत्तों के साथ ही सुविधाओं का भी विस्तार था। ऐसा नहीं है कि आज ऐसा नहीं है। आज भी निजी क्षेत्र की अनेकों संस्थाओं में अच्छा पैकेज और सुविधाएं मिलती है। युवाओं को विदेश जाने तक के अवसर मिलते हैं। मेडी क्लेम व अन्य सुविधाएं भी आम है। हां परफोरमेंस और टारगेट की बात अवश्य होती है। सरकारी नौकरी के पीछे भागने का कारण एक तो सर्विस को लेकर किसी तरह का तनाव नहीं होना है। यों कहा जा सकता है कि सरकारी नौकरी में जॉब सिक्योरिटी के साथ ही सुविधाओं का अंबार और पेंशन सुविधा के साथ ही जिम्मेदारी का कहीं ना कहीं बोझ नहीं दिखाई देता है।

इसे भी पढ़ें- कृषि क्षेत्र में करवट बदलता भारत

सरकारी नौकरी में तो एक तरह का समझौता हो जाता है कि जो काम के प्रति निष्ठावान है उसे काम से लाद दिया जाता है और जो काम के प्रति अधिक गंभीर नहीं होते हैं उन्हें कहने को तो नाकारा कह दिया जाता है पर वास्तव में इतना कहने भर से उन्हें काम के बोझ की मुक्ति मिल जाती है। यह तस्वीर का एक पहलू है। दूसरा एक बार सरकारी नौकरी में प्रवेश हो गया तो कोई कहने वाला तो होगा नहीं, यदि ज्यादा दिक्कत भी आती है तो कहीं से भी सिफारिश कराकर अपना काम चला ही लेंगे। एक बार नौकरी में प्रवेश होने के बाद ओवरएज होने तक प्रतियोगी परीक्षा के नाम पर अप्रत्यक्ष रुप से लाभ उठाया जा सकता है। इससे दो तरह की समस्या उत्पन्न होती है एक तो वास्तव में उस योग्यताधारी के सामने नौकरी की समस्या जस की तस रह जाती है जो उस पद की योग्यता ही पूरी कर पाता है, दूसरा प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी या फिर शैक्षणिक योग्यता के अनुसार पद नहीं मिलने के कारण सहानुभूति में अन्य कार्य ले लिया जाता है जिससे दोहरा नुकसान होता है एक तो उस पद के योग्य लोगों को नुकसान होता है तो दूसरा मूल पर का काम तो बाधित ही रहता है क्योंकि जिस पद पर चयन हुआ है वह काम तो करना ही नहीं है। अभी कुछ समय पुरानी ही बातें हैं और लगभग सभी जगह हालात यह है कि नगर निगमों में सफाई कर्मियों की भर्ती में अधिकांष चयनित उच्च शिक्षा प्राप्त होने या उच्च वर्ग से जुड़े होने के कारण चयनित होने के बाद उन्हें सफाई कर्मी का काम तो करना ही नहीं था और किया भी नहीं और उनकी सेवाएं आफिस में क्लर्की के रुप में ली जाने लगी। इससे अधिकांश नगर निकायों की सफाई व्यवस्था तो प्रभावित हुई ही साथ ही असली दावेदार तो बेरोजगार ही रह गए और रोजगार के नाम पर ऐसी भर्तियां हुई जो बोझ बनकर ही रह गई। यह वास्तविकता का एक पक्ष है दूसरा पक्ष तो उच्च योग्यता होने के बाद भी उसके अनुसार नौकरी नहीं मिलना है। इसके लिए किसे दोष दिया जाए। सवाल यह उठता है कि बीटेक व्यक्ति को इंजीनियरिंग का काम नहीं मिलता है तो फिर उसकी पढ़ाई का मतलब ही क्या है। सवाल यह है कि जिस तरह से निजी क्षेत्र में नए नए इंजीनियरिंग कालेज, एमबीए कालेज खोले गये और उनमें शिक्षकों की स्थिति, शैक्षणिक स्तर और गुणवत्ता पर ध्यान ही नहीं दिया गया तो केवल डिग्री से क्या होने वाला है। समस्या इतनी साधारण नहीं है जितनी इसे समझा जा रहा है। यह बढ़ती बेरोजगारी की समस्या नहीं है अपितु कहीं ना कहीं हमारी संपूर्ण व्यवस्था का ही दोष है। हालात का समग्रता के साथ विश्लेषण करना होगा नहीं तो चपरासी हो या सफाई कर्मी इतने ही नहीं अपितु इनसे भी ज्यादा आवेदन आएंगे और भर्ती भी होगी, नौकरी पर भी आयेंगे, वास्तविक युवाओं के लिए रोजगार समस्या ही बना रहेगा, सरकारी खर्चा तो योंही होता रहेगा पर जिस उद्देश्य से या जिस काम के लिए पदों को भरा जाना है उसमें हालात नहीं बदलने वाले हैं। फिर यह कहना कि सफाई कर्मी है पर सफाई नहीं हो रही या चपरासी है पर चपरासी के काम करने वालों की कमी है तो हालात ऐसे ही रहने वाले हैं। यह समूची व्यवस्था के सामने चुनौती है और इसका समाधान खोजना ही होगा।

ऊर्जा का स्तर बढ़ा सकती हैं जड़ी-बूटियां

रोजमर्रा की आपाधापी और बदलती जीवनशैली के बीच हम कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं के शिकार हो रहे हैं। ऐसे में अगर हम जड़ी-बूटियों के इस्तेमाल के बारे में अपनी जागरूकता बढ़ाएं तो सेहतमंद जीवन बिता सकते हैं, बता रही हैं वेलनेस विशेषज्ञ डॉ. शिखा शर्मा

प्रकृति से जो अनमोल उपहार हमें मिले हैं, उनमें जड़ी-बूटियां भी शामिल हैं। आयुर्वेद में इन जड़ी-बूटियों का विशेष महत्व बताया गया है। आजकल नेचुरोपैथी यानी प्राकृतिक चिकित्सा के बढ़ते प्रचलन के कारण न सिर्फ जड़ी-बूटियों का व्यापक इस्तेमाल हो रहा है, बल्कि इनके इस्तेमाल को लेकर लोगों की जागरूकता भी बढ़ रही है। ये जड़ी-बूटियां अनेक बीमारियां दूर करने में तो सहायक हैं हीं, मानसिक शांति के लिए भी इनका इस्तेमाल किया जाता है।

फायदेमंद हैं जड़ी-बूटियां

ऐसी बहुत सी जड़ी-बूटियां हैं, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद हैं। इनमें से बहुत-सी तो हमारी रसोई में ही मिल जाती हैं।

तुलसी- सर्दी-जुकाम, बुखार, सूखा रोग, निमोनिया, कब्ज, अतिसार जैसी समस्याओं में बहुत उपयोगी औषधि है।

लहसुन: एंटी बैक्टीरियल तत्वों से युक्त है। इसकी एक कली के सेवन से विटामिन ए, बी, सी के साथ आयोडीन, आयरन, पोटैशियम, कैल्शियम और मैग्नीशियम जैसे पोषक तत्व पा सकते हैं।

दालचीनी- खान-पान में इस्तेमाल होने पर उसमें उपस्थित वायरस और बैक्टीरिया को नष्ट कर देती है। शोधों में प्रमाणित हुआ है कि जिन खाद्य पदार्थों में दालचीनी का प्रयोग होता है, उनमें 99.9 प्रतिशत तक कीटाणु होने की आशंका खत्म हो जाती है।

लौंग- शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ यह एक अच्छी एंटीऑक्सीडेंट और बैक्टीरिया को खत्म करने वाली है।

अदरक: जी मिचलाने, उल्टी, मोशन सिकनेस आदि समस्याओं के समाधान में सहायक है। यह पाचन क्रिया में भी सहायक है।

अश्वगंधा: अश्वगंधा का इस्तेमाल त्वचा के साथ-साथ कई तरह की बीमारियों में भी लाभकारी है।

आंवला, एलो वेरा और गुडुची- ये शरीर की प्रतिरोधी क्षमता बनाए रखते हैं।

ग्रीन टी: यह रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। इसमें एंटी ऑक्सीडेंट्स प्रचुर मात्रा में होते हैं। यह कॉलेस्ट्रॉल नियंत्रित कर हार्ट अटैक और स्ट्रोक से बचाव करती है।

ब्राह्मी: इससे खून साफ होता है और याद्दाश्त बढ़ती है। गठिया में भी इससे आराम मिलता है।

सेवन में सावधानी बरतें

जड़ी-बूटियां तभी अपना असर दिखाएंगी, जब उनमें किसी तरह की मिलावट न हो। आजकल बाजार में नकली जड़ी-बूटियों की भरमार है, इसलिए आपको सतर्क रहने की जरूरत है। हमेशा विश्वसनीय दुकान से ही जड़ी-बूटी खरीदें। जड़ी-बूटियां निश्चित अनुपात में ही ली जानी चाहिए। एलो वेरा जूस एक चम्मच लेना चाहिए, व्हीट ग्रास और आंवला जूस एक-एक चम्मच पानी के साथ लेना चाहिए, उनका लापरवाही से इस्तेमाल न करें।

अर्जुन पेड की छाल से इन बीमारियों का किया जाता हैं इलाज

आज हम आपको ऐसे पेड के बारे में बताएंगे जिसकी छाल से बहुत सी बीमारियों का इलाज किया जाता है। इस पेड़ का नाम अर्जुन वृक्ष है। इसका सेवन करने से क्रक बढ़ता हुआ कोलेस्ट्रॉल वा हार्ट अटैक तथा मोटापे आदि की बीमारी ठीक हो जाती है। इसी के साथ इसे और भी बहुत सी बीमारियां ठीक की जाती है, जैसे कि पेट दर्द, कान का दर्द, मुंह की झांइयां आदि। तो आइए जानते हैं कैसे बीमारियों का इलाज किया जाता है इस अर्जुन की छान से।

- अगर आपके बाल सफेद है तो अर्जुन की छाल का चूर्ण बना कर इसमें मेहंदी डाल कर बालों में लगाएं। ऐसी करने से आपके काले और बालों में चमक आ जाएगी।

- अगर आपका कोलेस्ट्रोल ज्यादा रहता है तो आप अर्जुन की छाल का पावडर लेकर इसमें 2 गिलास पानी डाल कर उबालें। बाद में इसे छानकर ठंडा कर लें। सुबह उठ कर हर रोज इसका एक गिलास पिएं।इसे पीने से ब्लाक हुई धमनियां खुल जाती है।

- अगर आपका क्रकज्यादा रहता है तो ठीक करने के लिए रोज सुबह चाय बनाते समय अर्जुन की छाल का चूर्ण डाल कर पिएं।

- हृदय की अनियमित धड़कन को ठीक करने के लिए आप अर्जुन की छाल को कपड़े से छान कर इस पाउडर को अपनी जीभ पर रखें।

- सुबह अर्जुनकी छाल का काढ़ा बनाकर पीने से रक्तपित्त दूर हो जाता है।

- अगर आपको पेशाब रुक-रुक कर आता है तो दिन में एक बार जुंनकी छाल का काढ़ा बनाकर जरूर पिएं।

- अगर आपके हाथ पर चाय गिरने से अगर घाव हो जाए तो उस पर तुरंत अर्जुन की छाल के चूर्ण लगाएं।

- ज्यादा लोग मुंह में छाले पड़ने से परेशान हो जाते है। ऐसे में आप नारियल के तेल में अर्जुन की छाल का चूर्ण मिला कर मुंह में लगाएं।

- अर्जुन की छाल का चूर्ण बनाकर गुड़ के साथ फंकी लेने से बुखार जल्द ठीक हो जाता है।

- खेलते समय ओर आपके पैर की हड्डी दूध जाए या चोट लग जाए तो आप दूध के साथ अर्जुन की छाल का चूर्ण खाएं या फिर चोट पर लेप लगाएं। ऐसे करने से टूटी हुई हड्डी जल्दी ठीक हो जाती है।

जली हुई जीभ से तुरंत आराम पाने के लिए अपनाएं ये घरेलू उपचार

अक्सर हम सभी जब ज्यदबाजी में गरम-गरम चाय या कॉफी पी लेते हैं तो हमारी जीभ जल जाती है। जीभ के जल जाने पर कुछ दिनों को तक हमें किसी भी चीज को खाने से उसका स्वाद नहीं आता। इसलिए हमें कभी भी किसी चीज को गरम-गरम नहीं खाना चाहिएं। आज हम आपको जली हुई जीभ से तुरंत आराम पाने के लिए कुछ आसान से घरेलू उपाय बताएगें। तो आइए जानते हैं...

-बेकिंग सोडा

वैसे तो बेकिंग सोडा और बेकिग पाउडर दोनों ही खाने को फुलाने के लिए काम आते हैं। पर अगर आपकी जीभ गरम-गरम चीज पीने या फिर खाने से जल जाए तो तुरंत आराम पाने के लिए बेकिंग सोडा और पानी से कुल्ला कर लें।

- जीभ जलने पर प्लेन फूड खाएं अगर आपकी जीभ जल गई है तो मसालेदार खाना न खाएं। ऐसे में आप सलाद और उबला हुआ सादा भोजन ही खाएं।

-आइस क्यूब

जली हुई जीभ से तुरंत आराम पाने के लिए आप फ्रिज में रखी हुई ठंडी-ठंडी फर्फ का टुकड़ा लेकर मुंह में रख लें और धीरे-धीरे से चूसते रहें। साथ ही ध्यान में रखे कि क्यूब को मुंह में डालने से पहले गीला जरूर कर लें।

-दही

ठंडा दही लेकर उसका एक चम्मच मुंह में रखने से जली हुई जीभ से तुरंत आराम मिल जाता है। अगर घर में दही नहीं है तो आप एक गिलास ठंडा दूध भी पी सकते हैं।

-चीनी

अगर आपकी जीभ जल गई है तो जीभ पर एक चुटकी सफेद चीनी छिडकें और इसे जीभ पर घुलने दें। ऐसा करने से होने वाली दर्द से तुरंत आराम मिल जाएगा।

-शहद

शहद के अनेक फायदे हैं। जीभ के जलने पर यह एक प्राकृतिक और आराम देने वाला पदार्थ है।इसे जीभ पर लगाने से दर्द कम हो जाता है।

- विटामिन E वैसे तो हमारे शरीर के लिए सभी विटामिन्स का अपना-अपना महत्व है, लेकिन उनमें कुछ की खास भूमिका होती है। ऐसे विटामिन्स में एक प्रमुख है विटामिन ई। जीभ के जलने पर विटामिन ई तेल की कुछ बूंदे जीभ पर डालने से जल्द ही आराम मिल जाता है।

- मुंह से सांस लें अगर आपकी जीभ जल गई है तो मुंह से सांस लें। ऐसा करने से ठंडी हवा जीभ पर लगेगी जिसे आप को आराम मिलेगा।

-चुइंग गम

जली हुई जीभ से तुरंत आराम पाने के लिए च्यूइंग गम चबाएं। यह मुंह में थूक बनाने का काम करती है और मुंह को गीला रखती है, जिसे होने वाली जलन से आराम मिलता है।

- एलो वेरा जेल एलोवेरा तोड़कर उसमें से मैल निकाल लें और इसे जली हुई जीभ पर लगाएं और इस आइस क्यूब भी लगाएं। ऐसा करने से आपको दर्द से जल्द ही आराम मिल जाएगा।

इन घरेलू उपचारों को अपनाकर ठीक करें अनियमित माहवारी

आजकल ज्यादातर महिलाएं अनियमित माहवारी की समस्याओं से बहुत परेशान रहती हैं। वह शर्म या झिझक के कारण यह बात किसी को नहीं बताती और इस समस्या से जूझती रहती हैं। अनियमित माहवारी की समस्या का कारण हार्मोन में परिवर्तन होने से होता है। इसलिए आज हम आपको अनियमित माहवारी

ठीक करे कुछ घरेलू उपचारों के बारें में बताएगें।यह आपके लिए बहुत ही फायदेमंद होते है। तो आइए जानते है...

- तिल

अनियमित माहवारी को ठीक करने के लिए आप हर रोज रात के समय तिल को पानी में भिगों कर रख दें और सुबह इसे छान कर दिन में दो बार पीएं।

- जीरा माहवारी के समय जीरा खाने से दर्द से आराम मिलता है। इसलिए हर रोज 1 चम्मच जीरें के साथ 1 चम्मच शहद का सेवन जरूर करें। - पपीता पपीते को खाने से मासिक धर्म से जुड़ी हर समस्या से निजात मिल जाता है क्योंकि इसमें पोषण, एंटीऑक्सीडेंट और बीमारी को ठीक करने वाले गुण होते हैं।

- गुड़हल का फूल अनियमित माहवारी को ठीक करने के लिए आप गुड़हल का फूल जरूर लें। -तुलसी अगर आपको अनियमित माहवारी होती है तो इसे रेगुलर करने के लिए 1 चम्मच तुलसी के रस के साथ 1 चम्मच शहद का सेवन करें।

-अंगूर माहवारी को रेगुलर करने के लिए हर रोज अंगूर का जूस जरूर पीएं।

-धनिया या सौंफ धनिया या सौंफ को रात भर पानी में भिगो कर काढा बना लें और हर रोज पीएं।

दिन में यदि थकान रहती हैं तो... इन वजहों पर करें गौर

क्या हर समय जम्हाई लेना, सोना और आलस करना आपकी हॉबी में शुमार हो चुका है? लगता है आप हमेशा थके रहने वाले लोगों में शामिल हो चुके हैं. हमारी भाग-दौड़ वाली दिनचर्या हमें काफी थका देती है. ऐसे में हमें दिनभर टेंशन रहती है. यही टेंशन हमारे घर तक चली आती है और हम रात को ठीक ढंग से सो भी नहीं पाते. ऐसे में हमें सुबह थकान और नींद का अनुभव होता है? अगर हां तो आयुर्वेद के पास इसका जवाब भी है और निदान भी है. यह आपको बता सकता है कि आपको दिन भर इतनी नींद क्यो आती है और आपके शरीर में ऐसी कौन सी प्रॉब्लम हो रही हैं, जिसके कारण ऐसा हो रहा है. रात में बार-बार टूटती है नींद, तो हो सकती है बड़ी बीमारी अगर आपने इस समस्या पर अभी ध्यान नहीं दिया तो आगे चल कर यह नींद और थकान कई अन्य समस्याएं पैदा कर सकती है जैसे, सिरदर्द, शारीरिक दर्द, किसी चीज में मन न लगना, काम या पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित न कर पाना, पेट की खराबी, बोरियत और तनाव या डिप्रेशन आदि. इसके कई कारण हो सकते हैं कि आपको पूरे दिन में थकान या नींद लगती है. हो सकता है कि आपके अंदर शारीरिक बदलाव हो रहे हों या फिर दिमागी तनाव हो. जानें ऐसा क्यों होता है :

सोने का अनुचित समय : रात की नींद ठीक तरह से पूरी करनी चाहिए. आपको छह से सात घंटे तक बिना डिस्टर्ब हुए सोना चाहिए. सोने के तीन या चार घंटे पहले चाय या कॉफी न पिएं, तनाव से दूर रहें = अवसाद, क्रोध आदि जैसी चीजें नींद के पैटर्न पर बहुत प्रभाव डालती हैं। ये आपको थका देती हैं, जिससे रात को आप ठीक प्रकार से नहीं सो पाते.

शारीरिक नकारात्मक फोर्स : कई लोग शुरू से ही आलसी होते हैं और उनके जीवन का नजरिया हमेशा ही नकारात्मक होता है. ऐसे लोगों को अपने रूटीन में योगा, ध्यान और पूजा को शामिल करना चाहिए जिससे उनके जीवन में सकारात्मकता आ सके, रात्रिभोज भरपेट न करें = कुछ लोगों का सोचना है कि यदि वे रात में पेट भर कर खाएंगें तो उन्हें अच्छी नींद आएगी मगर ऐसा नहीं होता है. रात को पेट थोड़ा खाली रख कर ही सोना चाहिए नहीं तो वह ठीक से पच नहीं पाएगा.

दिनभर फ्रेश रहने के लिए क्या करें : अगर दिन में बहुत नींद आ रही है तो आधे घंटे की झपकी ले सकते हैं. अपच की वजह से आपको नींद और थकान महसूस हो सकती है. ऐसे में अपने आहार में अदरक और काली मिर्च को जगह दें. आप चाहें तो बिना दूध वाली अदरक की चाय पी सकते हैं. नियमित व्यायाम करें, जिससे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़े तो आप फ्रेश रहें.

अच्छी तरह सोने के लिए क्या करें : अपने कमरे की खिड़कियां और दरवाजे हमेशा खुले रखें, जिससे फ्रेश हवा और रोशनी आए. इससे आप हमेशा ऊर्जा से भरे रहेंगे. कुर्सी पर हमेशा सीधे और अलर्ट बैठें. योगा और प्रणायाम करें. इससे आप एनर्जी से भर उठेंगे. प्रोषण युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करें. फलों को अधिक शामिल करें. जूस आदि पिएं. सुबह की सैर करें. जिम में वर्कआउट करें. इन सभी को अपनाएंगे तो हमेशा फिट एंड फाइन रहेंगे.

बच्चों को ऐसे बचाएं डेंगू से ध्यान रखने योग्य बातें

ये तो आप जानते ही हैं डेंगू एडिस इजिप्टी मच्छर के काटने से होने वाला वायरल इंफेक्शन है। इस इंफेक्शन के शरीर में फैलने से फीवर होने लगता है और शरीर पर लाल चकत्ते पड़ने लगते हैं। पिछले कुछ सालों में डेंगू ने बहुत तेजी से अपने पैर पसारे हैं। डेंगू होने से ना सिर्फ गंभीर रूप से आप बीमार पड़ सकते हैं। बल्कि इससे जान तक जा सकती है।

एशियाई और लैटिन अमेरिकी देशों में बच्चों को इंफेक्शन पर डेंगू वायरल हो रहा है। बेशक अभी डेंगू का कोई ठोस इलाज मौजूद नहीं है लेकिन सही समय पर इसका इलाज और इससे बचाव ही एकमात्र उपाय है। बच्चों को डेंगू के इंफेक्शन से बचाने के लिए हम यहां कुछ उपाय सुझा रहे हैं।

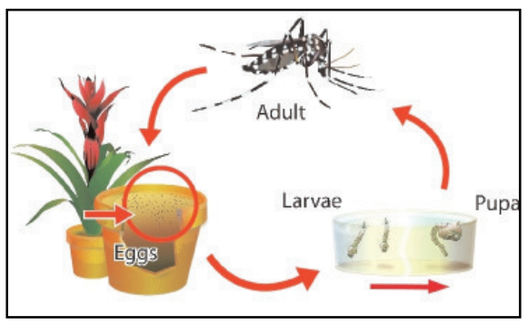

डेंगू वायरस सिर्फ व्यस्कों को ही नहीं बल्कि बच्चों को भी खासा प्रभावित करता है।

दरअसल बच्चे बेहद संवेदनशील होते हैं, ऐसे में बच्चों को डेंगू से बचाने के लिए बच्चों की एक्ट्रा केयर करना बेहद जरूरी है।

बच्चों की एक्ट्रा केयर ऐसे करें : बच्चों को डेंगू से बचाने के लिए मानसून के मौसम में घर या घर के आसपास पानी जमा ना होने दें क्योंकि डेंगू का मच्छर साफ पानी में पनपता हैं। बच्चों को पूरी बाजू के कपड़े पहनाकर रखें। साथ ही ट्राउजर भी ऐसे पहनाएं जिससे बच्चे के पैर पूरी तरह ढके रहें। इतना ही नहीं, बच्चे को मौजे भी पहनाकर रखें। बच्चों को डेंगू के प्रभाव से बचाने के लिए हल्के रंग के कपड़े पहनाएं क्योंकि मच्छर ज्यांदातर गहरे रंगों की ओर आकर्षित होते है। सिट्रानेल ऑयल बेस्ड क्रीम और स्प्रे का इस्तेमाल करें या फिर हर्बल मच्छर निरोधक का उपयोग करें। जब बच्चा सो रहा हो तो उसके आसपास मॉस्कीटो नेट लगाएं। यदि बच्चे के कमरे में खिड़कियां है तो खिड़कियों पर जाल लगवाएं जिससे मच्छर अंदर ना आ पाएं।

एयरकंडीशन होने से भी मच्छर नहीं आते : बच्चे को डेंगू प्रभावित जगहों पर ना लेकर जाएं। बच्चे को गंदगी वाली जगहों से दूर रखें यदि बच्चे को कहीं बाहर डस्ट में लेकर भी जा रहे हैं तो फेसमास्क पहनाएं। बच्चों का इम्यून सिस्टम कमजोर होता है, ऐसे में डेंगू के रोगियों से बच्चों को दूर रखें। अगर कुछ दिनों के लिए घर बंद करके जा रहे हैं तो घर की नालियां, टॉयलेट जैसी जगहों को ढककर जाएं। घर में जगह-जगह मॉस्कीटो रिपेलन्ट लगाएं। एंटीमॉस्कीटो क्रीम भी लगा सकते हैं।

ध्यान रखने योग्य बातें: - यदि बच्चा 2 साल से छोटा है तो बच्चे को डीट मॉस्किटो क्रीम लगाने या स्प्रे करने से बचना चाहिए। - यदि बच्चा 3 साल से छोटा है तो उसे नीलगिरी का तेल लगाने से बचें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): अपने काम को प्राथमिकता से करें। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। लाभ होगा और पुराने मित्रों से समागम भी होगा। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। स्वभाव में सौम्यता आपकी मदद करेगी। जीवन साथी से संबंधों में मिठास बढ़ेगी। परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा। शुभांक-3-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। कारोबारी काम में बाधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शुभांक-2-4-6

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा): जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। मायूस न हो समय चक्र हैं। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। शत्रुभय, झ्चता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। धन के लेन-देन में सतर्क रहें। शुभांक-2-5-8

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): परिवार में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा। वैवाहिक जीवन में प्रेम-प्रीति बढ़ेगी। जीवन साथी से संबंधों में मिठास बढ़ेगी। राजकीय सम्मान प्राप्त होने के योग हैं। शांतिपूर्वक कार्य करें, जान है तो जहान है, अत:वाहन आदि चलाने में सावधानी बरतें। अपना कार्य स्वयं करें, किसी के भरोसे न रहें। शुभांक-1-5-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): नये लोगों से मेल-मिलाप भविष्य में लाभदायक सिद्ध होगा। घर तथा व्यावसाय को एक-दूसरे से दूर ही रखें। व्यापारिक संबंधों में प्रगति के योग हैं। स्थान परिवर्तन की संभावना हैं। कार्य स्थल पर नियमपूर्वक व्यवहार लाभकारी होगा। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। शुभांक-2-5-7

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): धन के लेन-देन में सतर्क रहें। बातचीत में संयम बरतें। मन में चंचलता बढ़ेगी। भावुकतावश निर्णय न लें। कर्ज देने से बचें। मानसिक व्यथा व संतान के कारण परेशानी होगी। कला क्षेत्र के जातकों को मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। शुभांक-2-6-8

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): सरकारी पक्ष से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। पुराना विवाद समाप्त होगा। आर्थिक मजबूती हेतु मन केन्द्रित होगा। मिल रहे अवसरों का लाभ उठाएं। आर्थिक योजनाएं फलित होंगी। बकाया धन की प्राप्ति के योग हैं। शुभांक-1-5-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): उत्साह में वृद्धि होगी। आलस्य का त्याग करें। नये आय के स्त्रोत बनेंगे। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। पसंदीदा भोज्य पदार्थों की प्राप्ति होगी। लम्बे प्रवास व चुनौती पूर्ण कार्यों का सामना हो सकता हैं। व्यवसायिक क्षेत्र में आपकी मेहनत व लगन की परीक्षा होगी। शुभांक-3-6-9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): लेन-देन में स्पष्टता बनाये रखें। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। शुभांक-3-5-7

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): आज की सुविधा कल नहीं मिल पायेगी, लाभ उठाएं। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। शुभ कार्यों में व्यय होगा व हर्ष पूर्ण माहौल बनेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। धार्मिक यात्रा शुभ है। शुभांक-3-5-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): अपना कार्य दूसरों के सहयोग से बना लेंगे। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में कुछ उलझनें रहेंगी। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। आज का परिश्रम आगे लाभ देगा। इच्छित कार्य सफल होंगें। शुभांक-3-6-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति मिलेगी। कारोबारी यात्रा सफल होगी। बुद्धि, बल व पराक्रम सफल होगा। व्यापार में वृद्धि व लाभ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। शुभांक-2-4-8

लॉफिंग ज़ोन

विवाह के बाद प्रेमी ने प्रेमिका से कहा कि देखो अब हमारी शादी हो चुकी है।

तुम्हारी कुछ बातें ऐसी हैं, जो मुझे पसंद नहीं आतीं... और मैं तुम्हें वह सब बता देना चाहता हूँ। तुम चाहो तो इन्हें अपनी कमजोरियाँ समझ सकती हो।

प्रेमिका- रहने दो! मुझे अपनी सारी कमजोरियाँ मालूम हैं। आखिर उन्हीं के कारण तो मैं अच्छा पति नहीं पा सकी। इसका मुझे बेहद अफसोस है।

एक मोहल्ले में चल रहे कवि सम्मेलन के दौरान एक कवि मंच पर हाजिर हुआ तो नीचे बैठे श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया।

कवि बहुत ज्यादा उत्सुक था, उसने कहा- मेरे प्यारे श्रोताओं! अब मैं तुम्हे जो कविता आपको सुनाने जा रहा हूँ उसका शीर्षक है- पानी, आग और धुआँ।

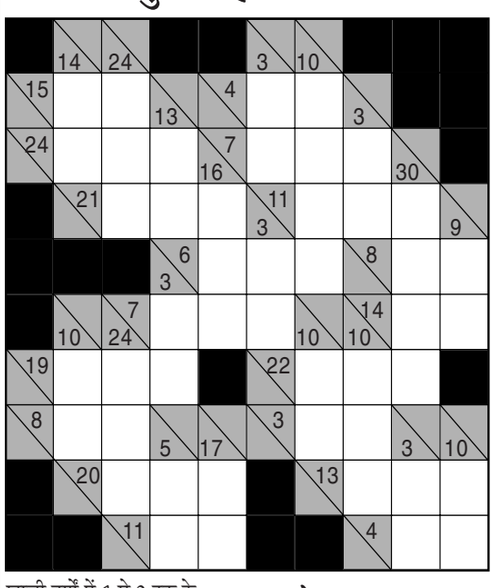

भीड़ में से एक श्रोता चिल्लाया- अरे, तो सीधे-सीधे क्यों नहीं कहते कि हुक्का है।

काकुरो पहेली - 4032

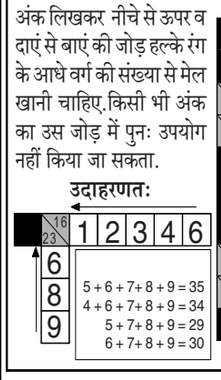

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

16 → 1 2 3 4 6; 23 ↓ 6 8 9

5 + 6 + 7 + 8 + 9 = 35
4 + 6 + 7 + 8 + 9 = 34
5 + 7 + 8 + 9 = 29
6 + 7 + 8 + 9 = 30

काकुरो - 4032 का हल

फिल्म वर्ग पहेली- 4033

ऊपर से नीचे:-

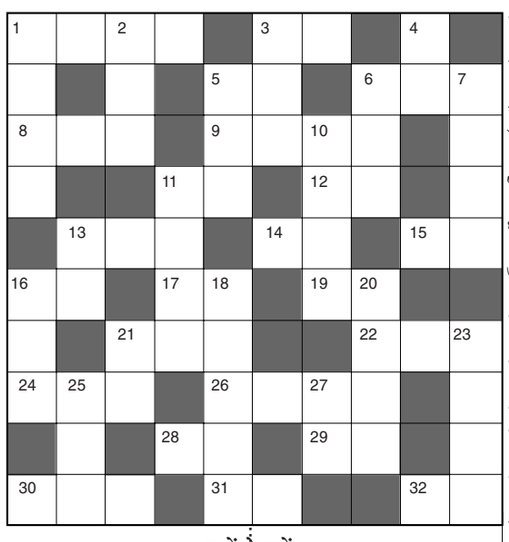

१. अक्षयकुमार, करीना, प्रियंका की 'नजर आ रहा है' गीत वाली फिल्म-४
२. 'आँखों के रस्ते दिल में' गीत वाली बॉबी देओल, रानी मुखर्जी की फिल्म-३
३. 'मिर्ची ये मिर्ची' गीत वाली फिल्म-३
४. 'दुल्हन बनती हैं नसीबों वालियां' गीत वाली रणधीर कपूर, बबीता की फिल्म-२
५. अनिलकपूर, अक्षयकुमार वाली फिल्म 'बेवफा' की नायिका कौन है-३
६. 'डोन्ट से नो' गीत वाली सनी देओल, मीनाक्षी शेशाद्रि की फिल्म-३
७. 'जैसी करनी वैसी भरनी' गीत वाली राजकुमार, रेखा, मौसमी चटर्जी की फिल्म-४
१०. गोविंदा, करिश्मा की 'अआ ई उ ऊ ओ मेरा दिल ना तोड़ो' गीत वाली फिल्म-२,२
११. 'बचके मेरी जान बचके' गीत वाली मिथुन, शत्रुघ्न, अनिता राज, हेमा की फिल्म-४
१३. 'बार बार दिन ये आये' गीत वाली फिल्म-२
१६. 'तिनका तिनका जरा जरा' गीत वाली जॉन अब्राहम, प्रियंका चोपड़ा की फिल्म-३
१८. राजकुमार, मनोजकुमार, वहीदा की 'खाली डब्बा खाली बोतल' गीत वाली फिल्म-५
२०. 'टपका रे टपका' गीत वाली संजयदत्त, माधुरी दीक्षित की फिल्म-२
२३. 'ये लड़की जरा सी दीवानी' गीत वाली कुमार गौरव, विजेयता पंडित की फिल्म-२,२
२५. नसीरूद्दीनशाह, रंजीता, स्मिता पाटिल की 'तू क्या जाने तुझमें' गीत वाली फिल्म-३
२७. 'दिल के टुकड़े टुकड़े कर के' गीत वाली अमजद खान, बिंदियागोस्वामी की फिल्म-२

बायें से दायें:-

१. 'किसी नजर को तेरा' गीत वाली राज बब्बर, सुरेश, डिम्पल की फिल्म-४
३. बॉबी, लारा, गुल पनाग की 'मैं यहां तू कहां' गीत वाली फिल्म-२
५. जैकी श्राफ, अनिलकपूर, श्रीदेवी की 'ना जइयो परदेस' गीत वाली फिल्म-२
६. सनी, मीनाक्षी, ममता की फिल्म-३
८. जतिन ग्रेवाल, यश पाठक, नेहा की 'छेड़ ना मुझ को' गीत वाली फिल्म-३
९. फिल्म 'आखिरी डाकू' में नायिका-२,२
११. 'बेदर्दी तेरे प्यार ने' गीत वाली फिल्म-२
१२. सनी, तब्बू, रीमा सेन की फिल्म-२
१३. शशिकपूर, शबाना आजमी की 'तोता मैना की कहानी तो' गीतवाली फिल्म-३
१४. फिल्म 'बारिश' में नायिका कौन थी-२
१५. सलमान, नगमा की 'कैसा लगता है अच्छा लगता है' गीत वाली फिल्म-२
१६. 'तू कितने बरस की' गीत वाली ऋषिकपूर, टीना मुनीम की फिल्म-२
१७. फिल्म 'निगाहें' में नायक कौन था-२
१९. 'नचना तेरे नाल' गीत वाली फिल्म-२
२१. धारावाहिक 'एहसास' में 'तराना' द्वारा निभाया गया बड़ी बहू का पात्र-३
२२. 'पुलिस केस ना' गीत वाली जिमी शेरगिल, इरफान, ऋषिता की फिल्म-३
२४. अमिताभ, वहीदा, जीनत, की 'हर गोरी रानी यहाँ' गीत वाली फिल्म-३
२६. 'पराई हूँ पराई' गीत वाली शशिकपूर, आशा की फिल्म-४
२८. संजयदत्त, पूनम की 'तेरे दिल की तू जाने' गीत वाली फिल्म-२
२९. 'बाबूल का ये घर बहना' गीत वाली मिथुन, पद्मिनी की फिल्म-२
३०. राजबब्बर, रेखा की 'राधारानी ना जइयो जमुना' गीत वाली फिल्म-३
३१. सलमान, स्नेहा की एक फिल्म-२
३२. फारूख शेख, पूनम की 'चोरी चोरी कोई आये' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 4032

मु	सा	फि	र		ड	कै	त		गा
क्ति		दा	न	वी	र		क्ष	त्रि	य
	री			र		श	क		ब
गु	ना	ह		ता	ल			क	
म		वा	दा		ग	र्व		सू	र्या
ना	ना		मि	ल	न		सु	र	
म		सु	नी	ल		रा	जा		ए
	ने	हा		का	श		ता	क	त
क्रो		ग	द	र		दे			रा
ध	र्मा		म		रा	व	ण	रा	ज

सूडोकु -4033

		5			8			3
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6			7			1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
6			2			7		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -4032 I हल

9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8

शब्द पहेली -4033

बाएँ से दाएँ

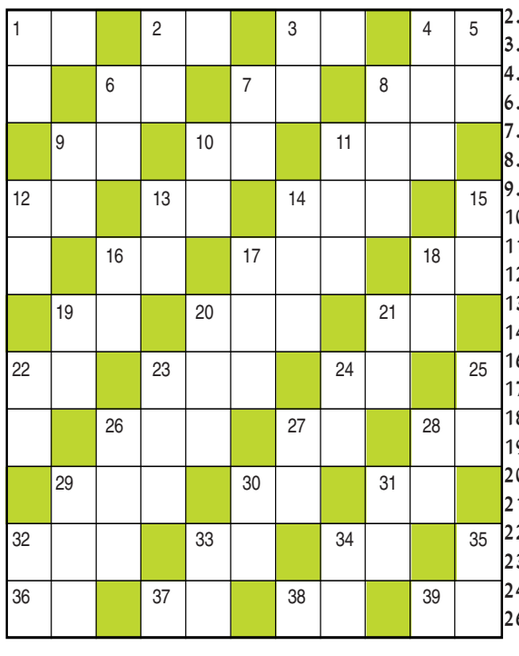

1.कार्य,काम-2
2.अग्नि,अनल-2
3.संग,संगत-2
4.मदिरा,शराब-2
6.चुटीली बात-2
7.उम्मीद-2
8.समाचार,सूचना-3
9.भगवान कृष्ण के खेल-2
10.छाया,परछाई-2
11.कहासुनी-3
12.जी,चित-2
13.निशा-2
14.पासों का खेल-3
16.करीना की फिल्म-2
17.आगे वाला-3
18.सीधा,सरल-2
19.वीर,बहादुर-2
20.दलदल,गाद-3
21.तांत,टेलीग्राम -2
22.वंश,खानदान-2
23.नशा,नशापानी-3
24.चिट्ठी,पत्र-2
26.सही का विलोम-3
27.ठिकाना-2
28.प्राण,दम-2
29.नरक (उर्दू-3)
30.बीता हुआ दिन-2
31.पोखर,तालाब-2
32.हताहत-3
33.दर,मूल्य-2
34.आयु-2
36.अंधकार-2
37.पांव,पैर-2
38.कान्हा-2
39.टैक्स,हाथ-2

ऊपर से नीचे

1.समय,वक्त-2
2.आगमन-2
3.पति की मां-2
4.भोर,सवेरा-3
5.झगड़ा-2
6.लॉक,द्वारयंत्र-2
7.धाय,नर्स,दाई-2
8.अवरोध,रुकावट-3
9.मगन,मग्न-2
10.सप्त,सप्तम-2
11.लक्ष्मी,रमा-3
12.मौज,मजा-2
13.महाराजा-2
14.घिसन,रगस-3
15.गमन,जाना-2
16.पुनः,वापस-2
17.स्थिर-3
18.निष्कर्ष-2
19.कांटा-2
20.मूल्य,दाम-3
21.पितामह-2
22.मजदूर-2
23.ईश्वर-3
24.भूल,गलती-2
25.मछली-2
26.नगमा-3
27.क्षण-2
28.पाश-2
29.दूसरा-3
30.थोड़ा-2
31.तांबा-2
32.हमला-2
33.कलंक-2
34.गरम-2
35.मयूर-2

शब्द पहेली 4032 का हल

क	फ		ज	प		त	न		शा	न
प	त	न		ल	त		भ	ला		शा
	वा	न	र		म	ल		ज	रा	
फि		द	म	न		क	द		ज	न
दा	दा		ल	क	वा		म	स्त		ख
	न	या		ल	च	क		र	थ	
रा		क	ल		क	ल	म		ल	ब
ही	र		हू	र		ह	म	ल		ल
	स	जा		जा	ल		ता	ड़	ना	
य		म	त		व	ध		ना	का	रा
म	य		ल	क्ष्य		न	ल		म	जा

पहलगाम आतंकी हमले के बाद महाराष्ट्र सरकार सक्रिय, उपमुख्यमंत्री शिंदे ने पर्यटकों के लिए विशेष उड़ान का किया अनुरोध

एजेंसी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकी हमले में महाराष्ट्र के भी पांच पर्यटकों की मौत हुई है। वहीं पहलगाम में राज्य के कई अन्य पर्यटकों के फंसे होने की आशंका भी जताई जा रही है। इसी के मद्देनजर महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने पहलगाम में फंसे पर्यटकों को वापस लाने के लिए विशेष उड़ान का अनुरोध किया है। इस स्थिति को देखते हुए महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने तत्परता दिखाते हुए केंद्र सरकार से फंसे हुए पर्यटकों की सुरक्षित वापसी की मांग की है। उन्होंने केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू से टेलीफोन पर बातचीत कर फंसे लोगों को वापस लाने के लिए विशेष उड़ान सेवा शुरू करने का आग्रह किया।शिंदे के अनुरोध पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए केंद्रीय मंत्री नायडू ने आश्वासन दिया कि जैसे ही प्रभावित पर्यटकों की सूची उपलब्ध होगी, तुरंत मुंबई के लिए विशेष उड़ान की व्यवस्था की जाएगी। इस बीच, उपमुख्यमंत्री कार्यालय (डीसीएमओ) ने भी पुष्टि की है कि केंद्रीय स्तर पर इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया गया है और जल्द ही आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। मुख्यमंत्री कार्यालय के अनुसार, नागपुर की एक महिला कश्मीर के पहलगाम शहर के पास आतंकवादी हमले से बचने के लिए एक पहाड़ी से कूद गई, जिससे उसके पैर में फ्रैक्चर हो गया।

पहलगाम में आतंकी हमले में छत्तीसगढ़ के रायपुर के कारोबारी दिनेश मिरानिया की मौत

रायपुर। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले के टूरिस्ट हॉटस्पॉट पहलगाम में हुए आतंकी हमले में छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के रहने वाले कारोबारी दिनेश मिरानिया की मौत हो गई है। परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार हमले में गंभीर रूप से घायल दिनेश मिरानिया की इलाज के दौरान मौत हो गई। राजधानी रायपुर के समता कॉलोनी निवासी बिजनेसमैन दिनेश मिरानिया अपनी पत्नी नेहा मिरानिया और दो बच्चों शौर्य व लक्षिता मिरानिया के साथ पहलगाम घुमने गए थे। इसी दौरान आतंकियों ने पर्यटकों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी थी। यह हमला उस समय हुआ, जब कई पर्यटक घुड़सवारी का आनंद ले रहे थे। कारोबारी दिनेश मिरानिया भी हमले में गंभीर रूप से घायल हो गए थे, उन्हें इलाज के लिए अनंतनाग जिला अस्पताल ले जाया गया था, पर उनका इलाज के दौरान दुखद निधन हो गया।

दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले पर ममता बनर्जी ने जताया शोक

कोलकाता। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग ज़िले के पहलगाम क्षेत्र में हुए भीषण आतंकी हमले को लेकर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने गहरा दुख एवं रोष व्यक्त किया। उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।मुख्यमंत्री ने लिखा, मैं अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम क्षेत्र में हुए बर्बर आतंकी हमले से अत्यंत दुखी हूं। जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं हैं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना करती हूं। यह हिंसा अत्यंत निंदनीय है और किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जानी चाहिए। उल्लेखनीय है कि हाल के दिनों में कश्मीर घाटी में आतंकी गतिविधियों में फिर से इज़ाफ़ा देखा जा रहा है, जिससे स्थानीय लोगों और पर्यटकों में चिंता का माहौल है। केंद्र और राज्य प्रशासन ने इस हमले के बाद सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा शुरू कर दी है।

पहलगाम हमले के अपराधियों को उनके जघन्य कृत्य के लिए बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी: एलजी

श्रीनगर। आज दोपहर बैसरन इलाके में हुए आतंकी हमले के बाद सुरक्षा बलों ने पहलगाम इलाके में बड़े पैमाने पर आतंकवाद विरोधी अभियान शुरू किया है। जम्मू एवं कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि आतंकवादियों को बेअसर करने के लिए आतंकवाद विरोधी अभियान शुरू किया गया है। उन्होंने कहा, पूरा देश गुस्से में है और हमारे सुरक्षा बलों का खून खौल रहा है। मैं देश को आश्वस्त करना चाहता हूं कि पहलगाम हमले के अपराधियों को उनके जघन्य कृत्य के लिए बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं। आज दोपहर पहलगाम के बैसरन इलाके में आतंकवादियों ने पर्यटकों के एक समूह पर हमला किया जिसमें कई लोगों के हताहत होने की खबर है। हालांकि मृतकों की संख्या के बारे में आधिकारिक पुष्टि अभी भी नहीं हुई है। हमले के बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सभी सुरक्षा एजेंसियों के साथ तत्काल बैठक करने के लिए श्रीनगर के लिए रवाना हो गए हैं।

पहलगाम हमला... दुनिया के शीर्ष नेताओं ने आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई में साथ देने की प्रतिबद्धता दोहराई

एजेंसी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकवादी हमले की दुनिया भर के शीर्ष नेताओं ने निंदा करते हुए भारत के साथ एकजुटता की प्रतिबद्धता दोहराई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि गुनहगारों को बख्शा नहीं जाएगा। हमले के समय वो सऊदी अरब के दौरे पर थे। हमले के बाद वो समय से पहले जेद्दा से स्वदेश लौट आए हैं। इस समय अमेरिका के उप राष्ट्रपति जेडी वेंस परिवार के साथ भारत की यात्रा पर हैं। उन्होंने पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। वेंस ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा, 'ऊषा और मैं भारत के पहलगाम में हुए भयानक आतंकवादी हमले के पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं। पिछले कुछ दिनों में हम इस देश और यहां के लोगों की खूबसूरती से अभिभूत हो गए हैं। इस भयानक हमले में हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं उनके साथ हैं।'

ट्रंप ने कहा- अमेरिका आतंक की इस लड़ाई में भारत के साथः अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर लिखा, 'कश्मीर से अत्यंत दुखद खबर आ रही है। आतंक की इस लड़ाई में अमेरिका भारत के साथ खड़ा है। हम मृतकों की आत्मा की शांति और घायलों के स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी और भारत के लोगों को हमारा पूर्ण समर्थन है और गहरी सहानुभूति है।' इसके अलावा ट्रंप ने प्रधानमंत्री मोदी से फोन पर भी बात की। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक्स पर बताया कि अमेरिकी राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री मोदी को फोन कर पीड़ितों के प्रति अपनी गहरी संवेदना जताई। ट्रंप ने इस जघन्य हमले के दोषियों को इंसाफ के कटघरे में

लाने के लिए भारत के प्रति पूरा समर्थन व्यक्त किया।

नेतन्याहू ने कहा-यह बर्बर है...इजराइल भारत के साथ

इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने इसे बर्बर हमला बताया है और आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत के साथ खड़े रहने की बात कही है। उन्होंने एक्स पर लिखा, 'मेरे दोस्त नरेन्द्र मोदी, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में बर्बर आतंकी हमले से मैं गहरे तौर पर दुखी हूं, जिसमें दर्जनों निर्दोष लोग मारे गए और घायल हुए हैं। हमारी संवेदनाएं और प्रार्थना पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ हैं। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में इजराइल भारत के साथ खड़ा है।'

यूरोपीय संघ ने कहा-भारत की इच्छा शक्ति अटूट :यूरोपीय संघ की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने इसे 'घृणित आतंकवादी हमला' बताया और कहा कि 'भारत की इच्छा शक्ति अटूट' है। उन्होंने एक्स पर लिखा, 'पहलगाम में घृणित आतंकवादी हमले ने कई निर्दोष जानें ले लीं। नरेन्द्र मोदी और शोक मना रहे हर भारतीयों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। मुझे पता है कि भारत की इच्छा शक्ति अटूट है। आप इस मुश्किल घड़ी में मजबूती के खड़े रहेंगे और यूरोप आपके साथ खड़ा है।'

जर्मनी ने कहा-वह भारत के साथ, ब्रिटेन ने कहा-भयावह

जर्मनी के विदेश मंत्रालय ने इस हमले को बर्बर बताते हुए इसकी निंदा की है। एक्स पर लिखे संदेश में मंत्रालय ने कहा है कि इस मुश्किल घड़ी में जर्मनी भारत के साथ खड़ा है। पीड़ितों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सर कीर स्टार्मर ने एक्स पर लिखा, 'कश्मीर में हुआ भयानक आतंकवादी हमला बेहद भयावह है। मेरी संवेदनाएं प्रभावित लोगों, उनके प्रियजनों और भारत के लोगों के साथ हैं।'

सऊदी अरब ने कहा-यह आपराधिक कृत्य

सऊदी अरब के विदेश मंत्रालय ने बयान जारी कर इसे 'आतंकवादी हमला' बताया और इसकी कड़ी निंदा की। सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने 'भयानक हमले' की कड़ी निंदा करते हुए पीड़ितों के प्रति गहरी संवेदना जताई है। यूएई ने भी बयान जारी कर इसे आपराधिक कृत्य बताया और कड़ी निंदा की। यूएई के विदेश मंत्रालय ने भारत सरकार और इस जघन्य हमले के पीड़ितों के परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना और सहानुभूति व्यक्त की।

पहलगाम में आतंकी हमले के बाद बिहार पुलिस अलर्ट,पर्यटन स्थलों की सुरक्षा की गयी कड़ी

एजेंसी

पटना। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद बिहार पुलिस अलर्ट हो गयी है और आतंकी हमले को देखते हुए बिहार के पर्यटन स्थलों की सुरक्षा कड़ी कर गई है।

पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद बिहार पुलिस ने तत्काल अहम बैठक की और सुरक्षा के लिए कई अहम निर्णय लिये,जिसे फॉलो कराया जा रहा है। बिहार के वनों से लेकर नालंदा खंडहर, राजगीर, पावापुरी समेत जिले के अन्य टूरिस्ट प्लेस के चप्पे- चप्पे पर नजर रखने के लिए कई उच्चस्तरीय टीमों का गठन किया गया है। राजगीर डीएसपी सुनील कुमार सिंह ने बताया कि राजगीर, नालंदा, पावापुरी समेत जिले का कोई भी पर्यटक स्थल पर आतंकी हमला का कभी इतिहास नहीं रहा है। बावजूद, उनकी संवेदनशीलता को किसी भी सूरत में हल्के में लेने की भूल नहीं की जा सकती है। ऐसे में सभी स्थलों की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। राजगीर के रोपवे, जू-सफारी, नेचर-सफारी के साथ ही वनों और पहाड़ों पर स्थित तीर्थस्थलों की सुरक्षा बढ़ा दी गई है।पर्यटन स्थलों पर पुलिस की गश्ती भी तेज कर दी गई है। राजगीर की पंच पहाड़ियों के साथ ही विश्व शांति स्थल, अशोक स्तूप, वेणुवन, बौद्धिस्टों का मक्का-मदीना माना जानेवाला वल्चर पीक के हर स्थल पर पैनी नजर रखी जा रही है। पुलिस ने सुरक्षा के चाक-चौबंद व्यवस्था किये हैं।

बड़े नक्सलियों की घेराबंदी के लिए तेलंगाना-छत्तीसगढ़ सीमा पर सुरक्षा बलों का सघन अभियान

एजेंसी

मुलुगु। तेलंगाना और छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती इलाके के सघन वन क्षेत्र में मंगलवार सुबह से ही तलाशी अभियान चल रहा है। खबर है कि इस दौरान नक्सलियों से सुरक्षा बलों की सीधी मुठभेड़ भी हुई है। यह मुठभेड़ तेलंगाना के मुलुगु जिले और छत्तीसगढ़ जिले बीजापुर जिले की सीमा पर जारी है। इस पूरे इलाके को दण्डारण्य माना जाता है, जहां एक समय में नक्सलियों की समानांतर सत्ता चलती थी। इसी बीच उसूर थाना क्षेत्र के अंतर्गत नम्बी जंगलों में तेलंगाना राज्य के सशस्त्र सुरक्षा बल के जवान भी खोजी अभियान में शामिल हुए हैं। हालांकि किसी भी सुरक्षा एजेंसी ने खोजी अभियान के दौरान मुठभेड़ या नक्सलियों के मारे जाने की अब तक पुष्टि नहीं की है। बताया जा रहा है कि सुरक्षाबलों को मंगलवार देर शाम तेलंगाना सीमा के मुलुगु जिले के करेंगुट्टालु में नक्सली गतिविधि की सूचना मिली। यह भी सूचना मिली कि इसमें कुछ इनामी नक्सली या नक्सलियों के बड़े कमांडर भी हो सकते हैं। इसके बाद तेलंगाना के लगभग दो हजार सुरक्षाबलों ने रणनीति बनाकर आधी रात से ही इस पूरे इलाके की घेराबंदी शुरू कर दी। मंगलवार की पहली किरण के साथ ही पूरे इलाके में तलाशी अभियान शुरू किया गया। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी जयशंकर भूपालपल्ली के निर्देश पर जिला वेंकटपुरम मंडल क्षेत्र में बड़ी संख्या में सशस्त्र बलों को तैनात किया गया है। इससे क्षेत्र में एक आशंका का माहौल बन गया है। सुरक्षाबलों के इस सर्च अभियान से करेंगुट्टा के पास पेनुगोलू, कोंगाला, अरुणाचल पुरम और बोल्लाराम के गांवों के साथ-साथ वेंकटपुरम मंडल के सीमावर्ती गांवों, पेंका वागु, मल्लापुरम, करेंवानीगुप्पा, लक्ष्मीपुरम, मुत्थाराम, पेंका वागु कालीपाका और सीतारमपुरम गांवों और करेंगुट्टा के ऊपर पमनूर, मुकुनूर, चेलिमेला, तडापाला और जेला के गांवों में दिन भर आवाजाही बहुत कम देखी गई। आशंका से भरे लोगों ने अपने घरों में ही बने रहना पसंद किया। दुकानें आदि व्यावसायिक गतिविधियां न के बराबर हुईं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि कुछ दिनों पहले नक्सलियों ने एक धमकी भरा पत्र जारी किया था। इसमें लोगों से करेंगुट्टाला दंडकारण्यम जंगल की ओर न आने को कहा गया था। ऐसा करके नक्सली स्थानीय लोगों में भय पैदा करना चाहते थे ताकि वे जंगल की तरफ न आएं और नक्सलियों की गतिविधियों की जानकारी बाहर न आ सके। गृह मंत्रालय के निर्देश पर भारत से नक्सलियों के सफाए के लिए चलाए जा रहे अभियान के चलते छत्तीसगढ़ के नक्सली तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की तरफ भाग रहे हैं। ऐसे माओवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद तेलंगाना और छत्तीसगढ़ पुलिस ने संयुक्त अभियान चलाया है। अपुष्ट सूत्र बता रहे हैं कि सुरक्षा बलों की घेराबंदी में कोई बड़ा नक्सली फंसा है। तेलंगाना पुलिस के एक उच्चाधिकारी ने इस अभियान से इंकार नहीं किया, लेकिन कोई जानकारी भी साझा नहीं की है। बताया जा रहा है कि अभियान पूरा हो जाने के बाद ही आधिकारित तौर पर कोई जानकारी दी जाएगी।

पहलगाम आतंकी हमला...कोलकाता के सोहनी की सूनी हो गई मांग, मासूम हुआ अनाथ, परिवार को बितन की पार्थिव देह का इंतजार

एजेंसी

कोलकाता । देश के प्रमुख पर्यटक स्थल जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में कोलकाता के पाटुली इलाके के निवासी 40 वर्षीय बितन अधिकारी की जान चली गई। वो अपनी पत्नी और तीन वर्षीय बेटे के साथ कश्मीर की सैर पर थे। बितन अधिकारी पेशे से एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत थे और अमेरिका के फ्लोरिडा में रहते थे। बितन की पत्नी सोहिनी के सामने ही उनके पति को गोली मार दी गई। घटना के कुछ घंटे बाद जब मीडिया ने फोन किया, तो दूसरी ओर से केवल रुक-रुक कर आती सिसकियों की आवाज सुनाई दी। उन्होंने फोन पर कहा, 'मैं कुछ भी नहीं कह सकती...' और फिर फोन कट गया।इस दौरान बितन के बुजुर्ग पिता ने कहा, 'वो हम सबको साथ लेकर घूमने जाना चाहता था। मैंने कहा, बहू और पोते को लेकर घूम आ। हर दिन बात होती थी। आज दोपहर भी बात हुई... फिर पता नहीं क्या हो गया।' मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने स्वयं सोहिनी राय अधिकारी से फोन पर बात की और उन्हें सांत्वना दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार बितन का पार्थिव शरीर कोलकाता लाने के लिए हर आवश्यक कदम उठा रही है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, 'जम्मू-कश्मीर में पर्यटकों पर

हुए भीषण आतंकवादी हमले में जान गंवाने वाले सभी परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदना है। इनमें से एक, बितन अधिकारी, बंगाल के ही निवासी थे। मैंने उनकी पत्नी से बात की है। शोक की इस घड़ी में उन्हें सांत्वना देने के लिए कोई शब्द पर्याप्त नहीं है। बंगाल सरकार उनके पति का पार्थिव शरीर घर लाने की पूरी व्यवस्था कर रही है।' बताया गया है कि आठ अप्रैल को बितन अपनी पत्नी सोहिनी राय अधिकारी और बेटे ह्रदान के साथ कोलकाता लौटे थे। 16 अप्रैल को तीनों जम्मू-कश्मीर घूमने निकले और इस गुरुवार को वापसी की योजना थी। लेकिन अचानक वह मनहूस खबर आई जिसने पूरे परिवार को झकझोर दिया।पर्यटकों के लिए प्रसिद्ध 'मिनी स्विट्जरलैंड' कहे जाने वाले पहलगाम की वेसरान घाटी में हुए इस आतंकी हमले से देश में गम और गुस्सा है।चश्मदीदों के मुताबिक, पांच-छह आतंकवादियों ने घाटी में मौजूद पर्यटकों से नाम पूछकर एक-एक को गोलियों से छलनी कर दिया। बताया जा रहा है कि आतंकवादियों ने पहले पीड़ितों से पहचान पूछी, फिर उन्हें निशाना बनाया।इस हमले में दक्षिण भारत के कुछ पर्यटक भी हताहत हुए हैं। कर्नाटक के शिवमोग्गा निवासी मंजुनाथ राव की भी गोली मारकर हत्या कर दी गई, जबकि उनकी पत्नी और पुत्र किसी तरह बच निकले।

तेलुगु भाषाई राज्यों के दो लोगों की पहलगाम आतंकी हमले में मौत

एजेंसी

हैदराबाद। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम आतंकी हमले में हैदराबाद के एक केंद्रीय सरकारी कर्मचारी मनीष रंजन और विशाखापटनम के निवासी सेवानिवृत्त बैंक ऑफिसर चंद्रमौली की मौत हो गई। राजधानी के कोठी स्थित सब्सिडियरी इंटेलिजेंस ब्यूरो (एसआईबी) कार्यालय में सेक्शन ऑफिसर के पद पर कार्यरत मनीष रंजन अपने परिवार के सदस्यों के साथ कश्मीर की यात्रा पर गए थे। पारिवारिक सूत्रों के अनुसार, आतंकवादियों ने उनकी पत्नी और दो बच्चों के सामने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी। ऐसा कहा जा रहा है हमलावरों ने उनका आईडी कार्ड देखने के बाद गोलीबारी शुरू कर दी। मूलतः बिहार के मनीष काम के सिलसिले में हैदराबाद में रहते थे। विशाखापट्टनम के सेवानिवृत्त बैंक ऑफिसर चंद्रमौली की हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी। पारिवारिक सूत्रों ने बताया कि चंद्रमौली ने जान बचाकर भागने की भी कोशिश की। हमलावरों पीछा करके उन्हें गोली मार दी।

गांधी सागर अभयारण्य में छोड़े गए चीते पावक और प्रभास को पसंद आया नया परिवेश

एजेंसी

भोपाल। चीतों का नया घर मंदसौर जिले का गांधी सागर अभयारण्य 'पावक और प्रभास' को पसंद आ गया है। यहां पहुंचने के 30 घंटे के भीतर सोमवार की रात दोनों चीतों ने एक साथ मिलएक एक नर चीतल का शिकार किया है। दोनों ने चीतल को दौड़ा-दौड़ाकर पकड़ा। दोनों चीतों को 20 अप्रैल की शाम मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गांधी सागर अभयारण्य में छोड़ा था। मप्र की धरती पर जन्में दोनों चीतों को श्योपुर जिले में कूनो राष्ट्रीय उद्यान से यहां शिफ्ट किया था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंदसौर स्थित गांधी सागर अभयारण्य में मध्यप्रदेश की धरती पर जन्में चीतों की शिफ्टिंग को लेकर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने सोशल मीडिया पर जारी संदेश में

कहा कि यह अभयारण्य प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। मध्य प्रदेश में चीतों के आवास एवं विचरण के लिए सर्वाधिक अनुकूल वातावरण उपलब्ध है। कूनो नेशनल पार्क से राज्य में दूसरे स्थान पर चीतों को ले जाकर पुनर्वास करना वन्य-प्राणी संरक्षण की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि है। गांधी सागर अभयारण्य में छोड़े गए चीते पावक और प्रभाष को यहाँ की आबो-हवा और नया परिवेश पसंद आया है और दोनों आनंद के साथ जंगल में स्वच्छंद विचरण कर रहे हैं।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने संदेश में कहा कि राज्य सरकार प्रदेश को वन्य जीवों के संरक्षण में अग्रणी बनाने के लिए विशेष ईको सिस्टम विकसित करने के लिए संकल्पित है। मध्य प्रदेश बाघों की संख्या में शीर्ष पर है और इसे टाइगर स्टेट का दर्जा प्राप्त है। इसी के साथ राज्य में लेपर्ड (तेंदुए) भी सर्वाधिक हैं। राज्य सरकार सभी विलुप्तप्राय जीवों के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्य प्रदेश में चीतों के पुनर्वास को एशिया महाद्वीप की ऐतिहासिक उपलब्धि बताया है। उन्होंने प्रदेश के नागरिकों से वन्य-प्राणियों के संरक्षण में साझेदार बनने के साथ 'जियो और जीने दो' की भावना से कार्य करने का आह्वान किया है।मई में बोत्सवाना से मिल सकते हैं चार चीते मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गत 20 अप्रैल 2025 को मध्य प्रदेश में कूनो नेशनल पार्क में जन्में दो चीते पावक और प्रभास को उनके नए घर गांधीसागर अभयारण्य में मुक्त विचरण के लिए छोड़ा है। मई महीने में मध्य प्रदेश को बोत्सवाना से चार चीते मिल सकते हैं।

वक्फ अधिनियम गरीब, जरूरतमंद मुसलमानों को न्याय दिलाएगा : किरण रिजिजू

एजेंसी

मुंबई। केंद्रीय अल्पसंख्यक एवं संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने मुंबई में कहा कि वक्फ (संशोधन) अधिनियम 2025 का मूल उद्देश्य पिछले कानून की खामियों को दूर करके वक्फ बोर्ड की दक्षता बढ़ाना और गरीब, जरुरतमंद मुसलमानों को न्याय दिलाना है। यह कानून 'वक्फ संपत्तियों' के विनियमन और प्रबंधन में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों के समाधान के लिए बनाया गया है। यह कानून किसी के अधिकारों का हनन नहीं करेगा। केंद्रीय अल्पसंख्यक मामले एवं संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू मुंबई के भाजपा प्रदेश कार्यालय में पत्रकारों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि पंजीकृत वक्फ संपत्तियों या अधिसूचना के माध्यम से घोषित वक्फ संपत्तियों को नहीं छुआ

जाएगा। किरण रिजिजू ने कहा कि वक्फ (संशोधन) अधिनियम 2025 की वजह से अब वक्फ बोर्ड मनमाने ढंग से किसी भी संपत्ति को वक्फ घोषित नहीं कर पाएंगे। जाहिर है, यह कानून पूरे गांवों को 'वक्फ' घोषित करने जैसे दुरुपयोग को रोकेगा। इस कानून का कई गरीब मुस्लिम भाइयों और समूहों ने समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि पसमांदा, बोहरा और अहमदिया जैसे समुदायों ने इस कानून को पारित करने के लिए प्रधान मंत्री मोदी को धन्यवाद दिया है। इस समुदाय की मुख्य मांगों को इस कानून में शामिल किया गया है। निजी संपत्तियों को वक्फ संपत्ति घोषित करने के लिए वक्फ अधिनियम की धारा 40 का व्यापक रूप से दुरुपयोग किया जा रहा था। अब वक्फ संपत्ति का निष्पक्ष और पारदर्शी प्रशासन सुनिश्चित करने के लिए वक्फ अधिनियम की धारा 40 को निरस्त किया जा रहा है। रिजिजू ने कहा कि नियमों के अनुसार अब मुतवल्लियों को छह महीने के भीतर अपनी संपत्ति की जानकारी केंद्रीय पोर्टल पर दर्ज करानी होगी। यह पोर्टल पंजीकरण, ऑडिट, मुकदमेबाजी सहित %वक्फ परिसंपत्तियों% के प्रबंधन को स्वचालित करेगा, जिससे प्रणाली में पारदर्शिता आएगी। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान जिला कलेक्टर करके राज्य को रिपोर्ट करेंगे। इस अवसर पर भाजपा की प्रदेश महासचिव मेधा कुलकर्णी, प्रदेश मुख्य प्रवक्ता केशव उपाध्याय, भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष इदरीस मुल्तानी सहित अन्य उपस्थित थे।

भारत में एक अनूठी जीवंतता, यहां अनंत संभावनाओं का है अहसासः उपराष्ट्रपति जेडी वेंस

एजेंसी

जयपुर। संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस इन दिनों भारत दौरे पर हैं। मंगलवार को जयपुर में आयोजित एक बिजनेस समिट में उन्होंने भारत-अमेरिका संबंधों, संभावित व्यापार समझौते और भारत की जीवंत संस्कृति पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि मैंने कई देशों की यात्रा की है, जहां अक्सर एक नीरसता महसूस होती है। लोग एक जैसे बनने की कोशिश करते हैं। बाकी दुनिया की नकल करते हैं, लेकिन भारत में ऐसा नहीं है। यहां एक अनूठी जीवंतता है। अनंत संभावनाओं का अहसास है। नए घर और इमारतें बन रही हैं। जीवन समृद्ध हो रहा है। भारतीय होने का गर्व और भविष्य के प्रति उत्साह यहां हर कदम पर झलकता है।उन्होंने कहा कि भारत में मेरी पत्नी मुझसे बड़ी सेलिब्रिटी हैं। यह ऐसी यात्रा है जो उनके लिए विशेष महत्व रखती है, क्योंकि उनकी पत्नी के माता-पिता यहीं जन्मे थे। भारत की सांस्कृतिक विविधता और विकासशील दृष्टिकोण की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि भारत की वास्तुकला, इतिहास और परंपराएं अद्भुत हैं, लेकिन उससे भी अधिक प्रेरणादायक है, यहां का भविष्य के प्रति दृष्टिकोण। भारत की ऊर्जा उसके गौरवशाली अतीत और प्रगतिशील भविष्य के संतुलन में निहित है। उपराष्ट्रपति वेंस ने भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने की प्रतिबद्धता जताई।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बार्सिलोना में प्रवासी भारतीय व्यवसायियों और विशेषज्ञों से की मुलाकात

एजेंसी

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन झारखंड में निवेश को आकर्षित करने के लिए स्पेन और स्वीडन की यात्रा पर हैं। उन्होंने स्पेन के बार्सिलोना में कई महत्वपूर्ण बैठकें कीं और झारखण्ड में निवेश की संभावनाओं को लेकर विस्तृत चर्चा की। इस दौरान झारखंड सरकार को आरसीडी एसपेनियोल फुटबॉल क्लब ने खेल विकास, विशेषकर फुटबॉल कोचों के प्रशिक्षण के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव दिया है। यह सहयोग बार्सिलोना के उत्कृष्ट खेल इकोसिस्टम, झारखंड में खेल खास कर फुटबॉल के विकास को बढ़ावा देगा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखंड सरकार के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने स्पेन के बार्सिलोना में प्रवासी भारतीय व्यवसायियों और प्रतिष्ठित विशेषज्ञों से मुलाकात की। इस दौरान स्टार्टअप मेंटरशिप, क्लीन एनर्जी, पर्यावरणीय स्थिरता, सप्लाई चेन, बायो-फार्मास्यूटिकल्स, खेल विपणन, क्रिकेट टीम ओनरशिप, डीप-टेक बी2बी मार्केटिंग, लीगल, डेंटिस्ट्री और मेडटेक जैसे विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा हुई। प्रतिनिधिमंडल ने उद्यमिता, नवाचार और स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए सुझाव दिए और झारखंड में एक जीवंत स्टार्टअप ईकोसिस्टम के निर्माण में सहयोग देने की इच्छा जताई। मुख्यमंत्री ने सभी प्रतिभागियों को झारखंड आने और राज्य में निवेश के लिए आमंत्रित किया है। मुख्यमंत्री ने टेस्ला ग्रुप एएस (चेकोस्लोवाकिया) के सीईओ एवं सह-संस्थापक डुशान लिचार्डस से भी भेंट की। उन्होंने झारखंड में एक गीगा फैक्टरी स्थापित करने का प्रस्ताव दिया, जो वाणिज्यिक और औद्योगिक बैटरी भंडारण उत्पादों के असेंबली पर केंद्रित होगी। यह संयंत्र नवीकरणीय ऊर्जा भंडारण के क्षेत्र में कंपनी के रोमानिया के ब्रेइला में किए गए निवेश के समान होगा। प्रतिनिधिमंडल ने सुझाव दिया कि झारखंड में स्टार्टअप्स और उनके मेंटर्स का मैपिंग किया जाए और उन्हें वैश्विक इनक्यूबेटरों से जोड़ा जाए। खाद्य प्रसंस्करण, विशेष रूप से झारखंड के कटहल और टमाटर जैसे उत्पादों के मूल्यवर्धित प्रसंस्करण में निवेश की संभावनाएं तलाशने का सुझाव दिया गया। इसके अतिरिक्त पारंपरिक चिकित्सा (होड़ोपैथी), अनुसंधान और विकास, फार्मास्युटिकल, मेडटेक तथा बायोटेक में अनुसंधान जैसे विषय शामिल रहे। मौके पर मुख्यमंत्री सोरेने ने आश्वस्त किया कि स्पेनिश कंपनियों के साथ सतत संवाद, बैठकें और कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे ताकि सहयोग की दिशा में ठोस प्रगति हो सके। राज्य सरकार प्राप्त सुझावों को नीतियों के मूल्यांकन और अद्यतन करते समय ध्यान में रखेगी।

105 कमरों वाला शापित होटल रयुगयोंग

वैसे तो उत्तर कोरिया अपने अजीबोगरीब कानूनों और मिसाइलों के परीक्षण के वजह से पूरी दुनिया में मशहूर है। लेकिन इसके साथ ही यहां ऐसी कई चीजें हैं, जो लोगों को हैरान करती हैं। इन्हीं में से एक है पिरामिड जैसे आकार और नुकीले सिरे वाली एक गगनचुंबी इमारत, जो एक होटल है। इस होटल का आधिकारिक नाम रयुगयोंग है, लेकिन इसे यू-क्यूंग के नाम से भी जाना जाता है।

उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंगयोंग में 330 मीटर ऊंचे इस होटल में कुल 105 कमरे हैं। लेकिन आज तक कोई भी व्यक्ति यहां ठहरा नहीं है। बाहर से बेहद ही शानदार, लेकिन वीरान से दिखने वाले इस होटल को 'शापित होटल' या 'भुतहा होटल' के नाम से जाना जाता है। इस होटल को '105 बिल्डिंग' के नाम से भी जाना जाता है। कुछ साल पहले अमेरिकी मैगजीन ईस्ट्वाइयर ने इस होटल को 'मानव इतिहास की सबसे खराब इमारत' करार दिया था। इस होटल के निर्माण में बहुत पैसे खर्च हुए हैं। जापानी मीडिया के मुताबिक, उत्तर कोरिया ने इसके निर्माण पर कुल 750 मिलियन डॉलर यानी करीब 55 अरब रुपये खर्च किए थे। यह रकम उस समय उत्तर कोरिया की जीडीपी की दो फीसदी थी। लेकिन फिर भी आज तक यह होटल शुरू नहीं हो पाया। वैसे तो इस होटल को दुनिया के सबसे ऊंचे होटल के रूप में बनाया जा रहा था, लेकिन अब इसकी एक अलग ही पहचान बन गई है। दुनिया इस होटल को अब 'धरती की सबसे ऊंची वीरान इमारत' के तौर पर जानने लगी है। इस खासियत की वजह से इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज है। कहते हैं कि अगर यह होटल तय समय पर पूरी तरह से बन गया होता, तो यह दुनिया की सातवीं सबसे ऊंची इमारत और सबसे ऊंचे होटल के तौर पर जाना जाता है। इस इमारत का निर्माण कार्य साल 1987 में शुरू हुआ था। बीबीसी के मुताबिक, तब यह उम्मीद जताई गई थी कि यह होटल दो साल में बनकर तैयार हो जाएगा। लेकिन ऐसा हो नहीं पाया। कभी इसे बनाने के तरीके के साथ दिक्कत हुई, तो कभी निर्माण सामग्री के साथ समस्या आ गई। इसके बाद साल 1992 में आखिरकार इस होटल के निर्माण कार्य को रोकना पड़ा। क्योंकि उस समय उत्तर कोरिया आर्थिक रूप से काफी कमजोर हो गया था।

हालांकि, साल 2008 में इसे बनाने का काम फिर से शुरू हुआ। पहले तो इस विशालकाय होटल को व्यवस्थित करने में ही करीब 11 अरब रुपये खर्च हो गए। इसके बाद फिर निर्माण कार्य शुरू हुआ। पूरी इमारत में शीशे के पैनल लगाए गए और बाकी के छोटे-मोटे काम कराए गए। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, साल 2012 में उत्तर कोरिया के प्रशासन ने ये एलान किया था कि होटल का काम 2012 तक पूरा हो जाएगा, लेकिन यह हो नहीं पाया। इसके बाद भी कई बार उम्मीदें लगाई गईं कि होटल इस साल शुरू होगा, उस साल शुरू होगा, लेकिन हकीकत तो यही है कि आज तक यह होटल खुल नहीं पाया है। कहते हैं कि अभी भी इस होटल का काम आधा-अधूरा ही है।

वैसे तो हम सब आईलैंड का नाम सुनते ही सोच लेते है कि वहां जाना रोमांच से भरा होगा। विश्व में कई ऐसे आईलैंड भी मौजूद है, जहां साल भर लोगों का आना-जाना लगा रहता है, लेकिन दुनिया में एक आईलैंड ऐसा भी है जहां सिर्फ सांपों का बसेरा है, यहां इंसानों का आना-जाना मना है। इस आइलैंड का नाम स्नेक आईलैंड है, जिसे इल्हा दा क्यूइमादा ग्राडें भी कहा जाता है। वैसे तो ब्राजील का यह आइलैंड बहुत खूबसूरत है, लेकिन यह सिर्फ 43 हेक्टेयर का एक छोटा आकार का द्वीप है। द्वीप में हरीभरी चट्टानें बड़ी तदाद में मौजूद है जो इसकी खूबसूरती को और बढ़ाता है। आइए जानें क्या है इस आईलैंड में खास

स्नेक आईलैंड - इल्हा दा क्यूइमादा ग्राडें

यहां इंसानों का आना-जाना मना है

इस आइलैंड की खास बात यह है कि यहां पाए जाने वाले सांप विश्व में कहीं नहीं पाए जाते। दुनिया के सबसे जहरीले सांपों का बसेरा भी इसी आइलैंड पर है। ऐसा कहा जाता है कि इस आइलैंड से इंसान का जिंदा लौटकर वापस जाना लगभग नामुमकिन है। बता दें कि आइलैंड पर ब्राजीलियाई नौसेना को जाने की अनुमति दी गई हैं। दरअसल, सांप की बढ़ती संख्या को देखते हुए यहां लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध हैं। जानकारों की माने तो स्नेक आइलैंड पर वाइपर, गोल्डन लांसहेड जैसे खतरनाक प्रजाति वाले सांप भी मिलते हैं। वाइपर सांप उड़ने में सक्षम होते हैं, इसलिए इन्हें खतरनाक माना गया है। कहा जाता है कि इन सांपों का जहर इतना खतरनाक है, जो इंसान का मांस तक गाला सकता है, इस बात से आप यह अनुमान लगा सकते है की यहां मौजूद सांप कितने खतरनाक है। यहां अलग- अलग प्रजाति के 4 लाख से भी ज्यादा सांप रहते है। यहां पाए जाने वाले सांप बेहद दुर्लभ है। इनकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में लाखों रुपए तक हैं। इस कारण कई तस्कर यहां आकर अवैध रुप से सांपों को पकड़ते है और उन्हें अंतराष्ट्रीय बाजार में बेच देते है।

सांपों वाले इस द्वीप का राज

जब समुद्र का जल स्तर भूमि से ढकनें लगा था, तब सांप इस द्वीप पर फंस गए थे, यह द्वीप ब्राजील से जुड़ा हुआ था। वहां के मौजूदा प्राकृतिक स्थिति में सांप ढल गए और धीरे-धीरे सांपों की संख्या बढ़ती चली गई, और फिर लोगों के लिए यहां रह पाना मुश्किल हो गया,तब से ही इसे स्नेक आइलैंड कहा जाने लगा।

कौन सा सांप है IUCN की रेड लिस्ट में शामिल

स्नेक आईलैंड में रहने वाले सांप की एक प्रजाति जिसें गोल्डन लांसहेड कहा जाता है, वह IUCN (प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय संघ) की रेड लिस्ट में शामिल है। बता दें इस सांप की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में 18 लाख रुपए तक है।

आइलैंड का महत्व

इस आइलैंड में सांपों के बसे होने के कारण यहां इंसान घुसपैठ नहीं कर सकते, इसलिए यह आइलैंड़ जनवरों के लिए सुरक्षित है। इसके साथ ही प्रकृति की संरचना के लिए भी यह आइलैंड बहुत महत्वपूर्ण है।

क्या होती है IUCN की रेड लिस्ट

IUCN एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जो प्रकृति के संरक्षण के लिए काम करती है। IUCN की रेड लिस्ट में जिन जानवरों को रखा गया,उनकी संख्या पूरे दुनिया में बहुत कम है,और अगर इसी तरह से उनकी संख्या कम होती गई, तो एक दिन वो लुप्त हो जाएंगे। जैसे डायनासोर अब पृथ्वी पर नहीं रहे।

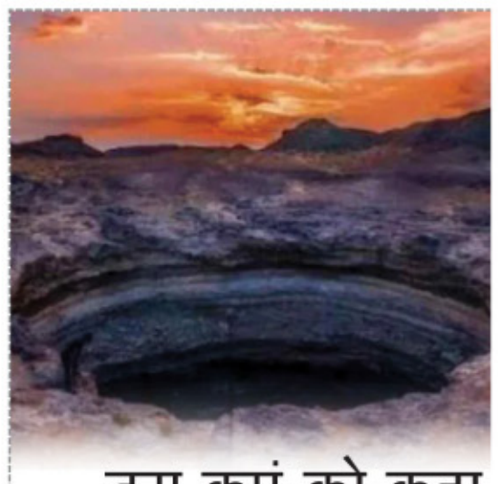

इस कुएं को कहा जाता है नरक का द्वार, आजतक कोई नहीं जान पाया इसका रहस्य

हमारी पृथ्वी पर ऐसी तमाम चीजें हैं जिनके रहस्य को आजतक कोई नहीं जान पाया.आज हम आपको एक ऐसे ही कुएं के बारे में बताने जा रहे हैं जिसे नरक का द्वार कहा जाता है.दुनियाभर के वैज्ञानिकों के लिए ये कुआं आज भी रहस्य बना हुआ है क्योंकि इसके बारे में किसी को ज्यादा जानकारी नहीं है. नरक का द्वार कहा जाने वाला ये कुआं यमन के बरहूत में स्थित है.इसे नरक का रास्ता भी कहा जाता है.इस जगह को दुनियाभर में इसी नाम से जाना जाता हैतमाम लोगों का कहना है कि इस रहस्यमयी गड्ढे के अंदर पहले शैतानों को कैद किया जाता था.वहीं कुछ लोग ये भी मानते हैं कि इस कुएं के अंदर आज भी भूत रहते हैं.इन सब के बावजूद वैज्ञानिकों की एक टीम ने इसके अंदर प्रवेश किया है.

बता दें कि ये स्थान यमन के एक रेगिस्तान के बीच में स्थित है.इस जगह पर एक बहुत बड़ा कुआं है.लंबे समय से ये कुआं रहस्यमयी बना हुआ था.हाल ही में इस कुएं के भीतर ओमान के 8 लोगों की एक टीम ने प्रवेश किया. इसके भीतर प्रवेश करने के बाद उन्होंने ये जानने की कोशिश की कि वास्तविकता में इस कुएं के अंदर क्या है? लंबे समय से यहां के स्थानीय लोग इस बात को कहते आ रहे थे कि इस जगह पर जिन और भूत रहते हैं.गौरतलब बात है कि स्थानीय लोगों के अंदर इस जगह को लेकर इतना डर है कि वो इसके बारे में बात करने से भी डरते हैं.

संबंधित कहानियां

जब वैज्ञानिकों की टीम ने कुएं के अंदर प्रवेश किया तो उनको किसी भी प्रकार का जिन और भूत उसमें देखने को नहीं मिला.हालांकि कुएं के अंदर सांप और गुफाओं वाले मोती जरूर मिले.बता दें कि ये गड्ढा करीब 30 मीटर चौड़ा है और इसकी गहराई 100-250 मीटर तक है. ओमान केव एक्सप्लोरेशन की टीम ने इसके अंदर प्रवेश करने के बाद उसे अच्छे से एक्सप्लोर किया.

ओमान की जर्मन यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर मोहम्मद अल किंदी बताते हैं कि गुफा के भीतर कई सांप थे, पर उन्होंने किसी पर हमला नहीं किया.गुफा की दीवारों पर कई बनावट भी दिखीं थीं.वैज्ञानिकों का कहना है कि ये गड्ढा लाखों साल पुराना है.इसमें काफी रिसर्च की जरूरत है.हालांकि गड्ढे के एकदम नीचे रोशनी नहीं पहुंचती है.जिसके चलते वहां गहरा अंधेरा है.

गुलाब जामुन का पेड़

गरमी की छुट्टियां होते ही अंशज अपने ननिहाल बीकानेर आ गया। पिछली बार जब वह आया था, तब छोटा था और इस बार कुछ बड़ा और समझदार हो गया है। छोटा था, तब उसे हर काम कहना पड़ता था। अब कुछ जरूरी काम वह बिना कहे ही करने लगा है। ननिहाल में पहुंचते ही उसने नाना-नानी के पैर छुए। मम्मी हंसकर बोलीं, अब तुम सचमुच बड़े हो गए हो।

अंशज को भूख लग गई थी। वह सोचने लगा कि उसे क्या कहना चाहिए और किसे कहना चाहिए। बड़े जो होते हैं, वे भूख लगी है ऐसे सीधे-सीधे कभी किसी से कहते नहीं हैं।

अंशज ने अपनी मम्मी से पूछा, मम्मी, मैं बड़ा हूं या छोटा?

मम्मी ने कहा, क्यों? ऐसे क्यों पूछ रहा है?

अंशज ने अपनी मम्मी के कान में धीरे से बोला, मुझे भूख लगी है और मैं छोटा हूं। बड़े तो ऐसा बोलते नहीं ना कि भूख लगी है।

मम्मी हंसने लगीं और बोलीं, चल, मैं तुझे खाने को कुछ देती हूं। अंशज को उसकी मम्मी प्यार से अंशी कहती थीं।

नाना और नानी को अंशी की बात जब उसकी मम्मी ने बताई, तो वे भी हंसने लगे। नानाजी हाथ में मिठाई का डिब्बा लाए और बोले, ले अंशी, तेरे लिए। अंशज ने जैसे ही नानाजी के हाथ में रसगुल्लों का डिब्बा देखा, तो उछल पड़ा। अरे नानाजी, रसगुल्ले। मैं सारे खा जाऊंगा। वैसे तो मुझे गुलाब जामुन बहुत पसंद हैं। आज रसगुल्ले ही ठीक हैं। अंशज डिब्बा नानाजी के हाथ से लेने लगा, तो मम्मी ने उसे टोका, नहीं अंशी, ऐसे तुम कपड़े गंदे कर लोगे। मैं तुम्हें खिलाती हूं। अंशज तो यही चाहता था। उसकी तो नानाजी के घर आते ही मौज लग गई। अंशज ने बड़े-बड़े तीन रसगुल्ले खाए। वह तो चार भी खा सकता था, पर मम्मी ने बीच में ही कह दिया, अभी बस इतने ही, बाकी बाद में। ये कहीं भागे नहीं जा रहे हैं।

नानीजी बोलीं, बीकानेर के तो रसगुल्ले और भुजिया नमकीन बहुत प्रसिद्ध हैं।

अंशज तुरंत बोला, देखो नानीजी, मैं छोटा हूं और कह सकता हूं, रसगुल्ले तो खा लिए, पर भुजिया-नमकीन कहां हैं?

नानीजी ने कहा, अरे भुजिया और नमकीन सब मिलेगा। मैं तुम्हारे मामा से कह दूंगी वह तुम्हारे लिए गुलाब जामुन भी ले आएगा।

अब तो खुश हो?

अंशज ने भुजिया और नमकीन का भी आनंद लिया। शाम को घर लौटते हुए उसके मामा गुलाब जामुन लाना नहीं भूले।

मामाजी से अंशज ने पहला सवाल किया, मामाजी, आप गुलाब जामुन कहां से लाए?

मामाजी ने मुसकराते हुए कहा, अरे, तुम्हें नहीं पता? मेरे ऑफिस में गुलाब जामुन का पेड़ है। जितने चाहे तोड़कर घर ले आओ। मेरे साहब बहुत अच्छे हैं। उन्होंने तो यहां तक बोला है कि तुम अपने भांजे के लिए गुलाब जामुन के बीज ले जाना और उसके घर लगवा देना।

सच! पर उन्हें कैसे पता चला कि मुझे गुलाब जामुन पसंद हैं?

जब तुम्हारी नानी मुझे गुलाब जामुन लाने के लिए कह रही थीं, तब इतने जोर से बोल रही थीं कि मेरे पास बैठे साहब ने भी सुन लिया था। अब बीच में मम्मी बोलीं, अच्छा है ना, वह तुम्हारे लिए गुलाब जामुन के बीज देंगे, फिर तुम भी गुलाब जामुन का पेड़ लगा लेना। हां मम्मी, कितना अच्छा होगा। फिर जब मेरी इच्छा होगी तब फटाक से गुलाब जामुन तोड़ा और मुंह में। कितना मजा आएगा। मामाजी बोले, वह मजा तो जब आएगा, तब आएगा, अभी तो मजा लो। यह लो खाओ गुलाब जामुन।

अगले दिन नानाजी ने अंशज को बताया कि कल सब उसके साथ मजाक कर रहे थे। असल में गुलाब जामुन का कोई पेड़ होता ही नहीं। हां, गुलाब का पौधा और जामुन का पेड़ जरूर लगाया जाता है।

अंशज ने नानाजी से कहा, नानाजी, फिर तो हो गया काम। हम गुलाब का पौधा और जामुन का पेड़ एक साथ लगा देंगे, फिर तो गुलाब जामुन हो जाएंगे ना?

नानाजी हंसने लगे और अपनी गरदन हिलाकर कहा, नहीं-नहीं। अंशज बोला, कोई बात नहीं नानाजी! और सुन रही हो नानीजी, मैं जब पूरी तरह बड़ा हो जाऊंगा, तब गुलाब जामुन के पेड़ का आविष्कार करूंगा।

अंशज की मम्मी बोलीं, हां, यह हुई ना बात। तुम अभी से इसके बारे में सोचने लग जाओ। सोचना यह है कि क्या हो सकता है और क्या नहीं हो सकता है।

नानाजी हंसते हुए बोले, दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो नहीं हो सकता है। सब कुछ हो सकता है। नानीजी कहां चुप रहने वाली थीं, वह भी बोलीं, जरूर हो सकता है बेटा, असंभव भी संभव हो सकता है। मेरा अंशज जरूर आसमान से तारे तोड़कर लाएगा। अंशज ने बस इतना कहा, देखना, मैं हर असंभव को संभव करूंगा। मुझे बस पूरा बड़ा होने दो।

हॉकी इंडिया ने ज्ञान विनिमय सत्र के लिए ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के छात्रों की मेजबानी की

एजेंसी

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने सोनीपत स्थित ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के छात्रों के एक समूह का नई दिल्ली स्थित अपने मुख्यालय में एक संवाद सत्र के लिए स्वागत किया। जीतेंद्रनाथ मिश्रा (पीएच.डी., भारतीय विदेश सेवा, सेवानिवृत्त)और डिप्लोमैटिक प्रैक्टिस के प्रोफेसर के नेतृत्व में इस दौरे का उद्देश्य शासन और कूटनीति में खेलों की भूमिका के बारे में समझ को गहरा करना था। सत्र के दौरान हॉकी इंडिया के अधिकारियों ने छात्रों से संवाद किया और कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। इनमें संघ का आंतरिक शासन, भारत की वैश्विक हॉकी में उपस्थिति, अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) के साथ संबंध, लिंग समानता के लिए समर्थन, गरीब खिलाड़ियों के लिए सहायता और भारतीय हॉकी में जमीनी स्तर पर विकास शामिल थे। इस प्रकार की पहलों के माध्यम से हॉकी इंडिया शैक्षिक कार्यक्रमों का समर्थन करता है जो समाज में खेलों की भूमिका पर चर्चा और सीखने को बढ़ावा देते हैं।

बाबा दीप सिंह बास्केटबॉल टूर्नामेंट में लेडी श्री राम कॉलेज ने की विजयी शुरुआत

नई दिल्ली। लेडी श्री राम कॉलेज और रामजस कॉलेज ने पीएसपीबी बाबा दीप सिंह बास्केटबॉल टूर्नामेंट में अपने अभियान की विजयी शुरुआत की है। महिला वर्ग में लेडी श्री राम कॉलेज ने किरोड़ी मल को 38-28 से हराया और प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड लेडी श्रीराम कॉलेज की अन्वी को मिला। रामजस कॉलेज ने हंसराज कॉलेज को 39-28 से हराया और रामजस कॉलेज की अनीका प्लेयर ऑफ द मैच बनीं। पुरुष वर्ग में हंसराज कॉलेज ने रामजस कॉलेज को 54-40 से हराया और हंसराज कॉलेज के अनुभव प्लेयर ऑफ द मैच बने। किरोड़ी मल कॉलेज ने दयाल सिंह कॉलेज को 54-51 से हराया और प्लेयर ऑफ द मैच किरोड़ी मल कॉलेज के अनस बने। श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज ने भारत अकादमी को 69 -63 से हराया और विजई टीम के नितिन हुडा को प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड मिला। हॉकी प्रतियोगिता के चौथे दिन पुरुष वर्ग में मैच में इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज ने किरोड़ी मल कॉलेज को 7-0 से हराया।इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज की तरफ पुलकित शर्मा ने 4 गोल और गुरमुख सिंह, भूपिंदर एवं चिरंजीव ने एक-एक गोल किए। प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट के पुलकित शर्मा को मिला।

मुजारबानी ने बंगलादेश को दूसरी पारी में 255 पर समेटा, जिम्बाब्वे को मिला 174 का लक्ष्य

सिलहट। ब्लेसिंग मुजारबानी (छह विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर जिम्बाब्वे ने पहले टेस्ट मैच के चौथे दिन बंगलादेश की टीम को दूसरी पारी में 255 के स्कोर पर समेट दिया है। पहली पारी में मिली बढ़त के आधार पर जिम्बाब्वे को जीत के लिए 174 रन बनाने है। बंगलादेश ने कल के चार विकेट पर 194रन से आगे खेलना शुरु किया। सुबह के सत्र की शुरुआत में ही ब्लेसिंग मुजारबानी ने कप्तान नजमुल शान्तो (60) को आउट कर जिम्बाब्वे के लिए अच्छी शुरुआत की। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये मेहदी हसन मिराज (11) को भी मुजारबानी ने अपना शिकार बनाया। जिम्बाब्वे की घातक गेंदबाजी के आगे आज बंगलादेश ने 61 रन जोड़ कर अपने छह विकेट गवां दिये। रिचर्ड एन्गारावा ने तैजुल इस्लाम (एक) को आउट किया। हसन महमूद (12), खालिद अहमद (शून्य) को वेलिंग्टन मसाकाट्जा का शिकार बने। इस दौरान जाकेर अली एक छोर थामे रन बनाते रहे और उन्होंने अपना अर्धशतक पूरा किया। मुजारबानी ने 80वें ओवर की दूसरी गेंद पर जाकेर अली (58) को आउटकर बंगलादेश की पारी को 255 के स्कोर पर समेट दिया। जिम्बाब्वे को जीत के लिए 174 रन बनाने है।

आईपीएल ने भारत में क्रिकेट के प्रति जुनून को दी हवा

लखनऊ। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) ने क्रिकेट के दीवाने देश भारत में क्रिकेट के प्रति जुनून को हवा दी है और दीवानगी का आलम यह है कि 47 फीसदी भारतीय दर्शक स्टेडियम में जाकर लाइव मैच देखना चाहते हैं जिसके लिये शहर ही नहीं बल्कि अन्य प्रदेश अथवा विदेश यात्रा करने वालों की भी कोई कमी नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार 50 फीसदी भारतीय क्रिकेट मैच के बाद शहर देखने के लिए अपनी यात्रा 3-4 दिन बढ़ाना चाहते हैं। क्रिकेट देखने के लिए यात्रा की सूची में ऑस्ट्रेलिया और भारत में सबसे ऊपर मुंबई है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि 80 फीसदी भारतीय इस सीजन में आईपीएल मैच लाइव देखना चाहते हैं। लीडिंग ग्लोबल ट्रैवल ऐप स्काईस्कैनर ने अपनी 'पिच परफेक्ट जर्नीज़' रिपोर्ट जारी की। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारतीयों की यात्रा में क्रिकेट की अहम भूमिका रहने वाली है।

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई ओपनर कीथ स्टैकपोल का 84 वर्ष की उम्र में निधन

एजेंसी

मेलबर्न। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट ओपनर कीथ स्टैकपोल का 84 वर्ष की उम्र में हार्ट अटैक से निधन हो गया है। उन्होंने अपने करियर में 43 टेस्ट मैच खेले और 7 शतक लगाए थे। स्टैकपोल ने ना सिर्फ बल्ले से बल्कि गेंद से भी टीम के लिए योगदान दिया और बाद में एक लोकप्रिय टीवी व रेडियो कमेंटेटर भी बने।

मिडिल ऑर्डर से ओपनर बनने तक का सफर

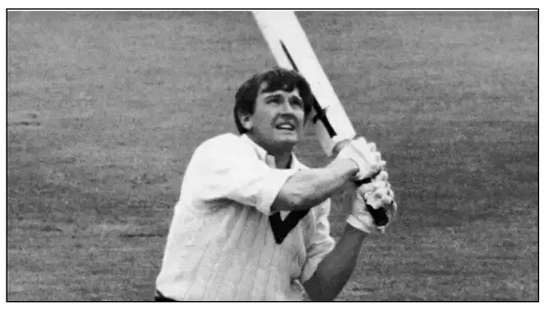

स्टैकपोल ने 1966 में इंग्लैंड के खिलाफ मिडिल ऑर्डर बल्लेबाज और लेग स्पिन गेंदबाज के रूप में टेस्ट डेब्यू किया था। लेकिन 1969 की शुरुआत में उन्हें ओपनिंग की जिम्मेदारी दी गई, जहां उन्होंने बिल लॉरी के साथ मजबूत जोड़ी बनाई। कीथ स्टैकपोल ने अपना पहला टेस्ट शतक साउथ अफ्रीका के खिलाफ केपटाउन में लगाया था, जबकि

उनका सर्वोच्च स्कोर 207 रन इंग्लैंड के खिलाफ 1970 में गाबा (ब्रिस्बेन) में आया। इंग्लैंड के खिलाफ उनका प्रदर्शन बेहद शानदार रहा–उन्होंने 55.21 की औसत से रन बनाए और तीन शतक जमाए। 1972 की एशेज सीरीज में वे इयान चैपल के उपकप्तान थे और सबसे ज्यादा 485 रन बनाए थे। इसके चलते उन्हें 1973 में विज्डन क्रिकेटर ऑफ द ईयर भी चुना गया।

अनोखे अंदाज में टेस्ट करियर का अंत

1974 में न्यूज़ीलैंड के खिलाफ ऑकलैंड में उन्होंने अपने करियर का आखिरी टेस्ट खेला, जिसमें वे दोनों पारियों में खाता भी नहीं खोल पाए। पहली ही गेंद पर फुल टॉस पर आउट होकर उन्होंने लिखा था– मैंने गेंद को सिर के पास एक गज की दूरी पर देखा और पीछे हट गया, लेकिन बैट के किनारे से लगकर गेंद स्लिप में चली गई। शायद टेस्ट क्रिकेट का पहला मौका था जब कोई बिना गेंद ज़मीन पर गिरे आउट हो गया!

पहले वनडे में भी निभाई थी भूमिका

स्टैकपोल ने 1971 में खेले गए पहले-द्ग1द्गह्र वनडे मैच में भी हिस्सा लिया था, जहां उन्होंने एमसीजी में 3 विकेट लेकर 40 रन दिए थे।

संपूर्ण करियर और बाद का योगदा: स्टैकपोल ने फर्स्ट-क्लास क्रिकेट में 10,100 रन बनाए और 148 विकेट लिए। संन्यास के बाद वे टीवी और रेडियो कमेंट्री की दुनिया में एक जाना-माना नाम बन गए।

ग्लोबल इंडियन प्रवासी कबड्डी लीग: तमिल लायंस, भोजपुरी लेपर्ड्स और पंजाबी टाइगर्स की रोमांचक जीत

एजेंसी

गुरुग्राम। गुरुग्राम यूनिवर्सिटी में जारी ग्लोबल इंडियन प्रवासी कबड्डी लीग (जीआई-पीकेएल) के खेले गए पुरुष वर्ग के मुकाबलों में तमिल लायंस, भोजपुरी लेपर्ड्स और पंजाबी टाइगर्स ने शानदार जीत दर्ज की। 13 दिवसीय यह लीग पिछले सप्ताह शुरू हुई थी और इसका फाइनल मुकाबला 30 अप्रैल को आयोजित होगा। लीग के पांचवें दिन हरियाणा के वरिष्ठ भाजपा नेता भानी राम मंगला ने उपस्थिति दर्ज कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया और बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया। दिन के पहले मुकाबले में तमिल लायंस ने मराठी वल्चर्स को कड़े मुकाबले में 41-38 से मात दी। तमिल लायंस की ओर से 23 रेड प्वाइंट और तीन सुपर टैकल किए गए, जबकि मराठी वल्चर्स ने 20 रेड प्वाइंट और चार ऑल-आउट के साथ कड़ा मुकाबला किया। अंतिम क्षणों में तमिल की रक्षात्मक मजबूती ने उन्हें तीन अंकों की रोमांचक जीत दिलाई।

दूसरे मुकाबले में भोजपुरी लेपर्ड्स ने तेलुगु पैंथर्स को 43-41 से हराया। मैच बेहद कड़ा रहा, जिसमें तेलुगु पैंथर्स ने अधिक रेड प्वाइंट (27) बटोरे, लेकिन भोजपुरी लेपर्ड्स की टैकलिंग (16 अंक) और निर्णायक ऑल-आउट ने उन्हें जीत दिलाई। दोनों टीमों ने एक-एक सुपर रेड किया, लेकिन भोजपुरी की संतुलित रणनीति ने उन्हें इस हाई-वोल्टेज मुकाबले में जीत दिलाई। दिन के अंतिम मुकाबले में पंजाबी टाइगर्स ने दमदार प्रदर्शन करते हुए हरियाणवी शार्क्स को 64-47 से शिकस्त दी।

प्रीमियर लीग: इंजरी टाइम में नून्स के गोल से मैनचेस्टर सिटी ने एस्टन विला को 2-1 से हराया

एजेंसी

मैनचेस्टर। इंग्लिश प्रीमियर लीग में रात खेले गए रोमांचक मुकाबले में मैनचेस्टर सिटी ने मातेउस नून्स के इंजरी टाइम में किए गए गोल की बदौलत एस्टन विला को 2-1 से हराकर चैंपियंस लीग की दौड़ में अपनी उम्मीदों को मजबूती दी।

अंतिम लम्हों में छिना विला का जीत का सपना

मैच ड्रॉ की ओर बढ़ रहा था जब मार्कस रैशफोर्ड के पेनल्टी गोल ने पहले हाफ में बर्नार्डो सिल्वा के शुरुआती गोल को बराबर कर दिया था। लेकिन 94वें मिनट में जेरमी डोकू के शानदार क्रॉस पर नून्स ने गोल दागते हुए सिटी को जीत दिला दी।

अंकतालिका में तीसरे स्थान पर पहुंची सिटी

इस जीत के साथ मैनचेस्टर सिटी ने दो स्थान की छलांग लगाते हुए 61 अंकों के साथ तीसरा स्थान हासिल कर लिया है। हालांकि, उनके पीछे की तीन टीमें एक-एक मैच कम खेली हैं। वहीं, एस्टन विला 57 अंकों के साथ सातवें स्थान पर कायम है और उसकी एतिहाद स्टेडियम में हार की यह लगातार 15वीं शिकस्त है।

बर्नार्डो सिल्वा ने दिलाई शुरुआती बढ़त

मैच के 7वें मिनट में उमर मर्मूश ने विला के राइट बैक मैटी कैश को छकाकर गेंद बर्नार्डो सिल्वा को दी, जिन्होंने गोलकीपर एमिली मार्टिनेज के हाथों को चीरते हुए गेंद को नेट में पहुंचा दिया।

रैशफोर्ड ने पेनल्टी से दिलाई बराबरी

विला की वापसी 18वें मिनट में हुई जब वीएआर जांच के बाद सिटी के डिफेंडर रूबेन डायस को जैकब रैम्से को पीछे से टक्कर मारने का दोषी पाया गया। इस पर मिली पेनल्टी को मार्कस रैशफोर्ड ने बड़ी सहजता से गोल में बदलते हुए स्कोर 1-1 कर दिया।

धर्मशाला में चार मई को खेले जाने वाले मैच की टिकटों की ऑनलाइन बिक्री शुरू

एजेंसी

धर्मशाला। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम धर्मशाला में होने वाले आईपीएल के तीन मैचों में से अब तक चार मई को खेले जाने वाले पहले मैच की टिकटें बिकना शुरू हुई हैं। पंजाब और लखनऊ के बीच मैच की टिकटों की ऑनलाइन बिक्री एक दिन चलने के बाद शाम तक कमिंग सून में पहुंच गई है। अब दर्शकों को टिकट खरीदने के लिए इंतजार करना पड़ रहा है।

जबकि पंजाब के दिल्ली व मुंबई के साथ होने वाले मुकाबलों के टिकट अभी तक ऑनलाईन मिलना शुरू नहीं हुए हैं। दूसरी ओर ऑफलाईन कांउटर धर्मशाला में लगाए जाने को लेकर भी कोई सहमति नहीं बन पाई हैं। ऑनलाईन डिस्ट्रिक ऐप्प में 1200 रुपए से टिकट के दाम शुरू हो रहे हैं। इसके बाद बाद 1500, 3500 और 6000 रुपए से लेकर 20 हज़ार तक दाम पेवेलियन टैरेस और क्लब लॉज के टिकटों के होंगे। इसमें वेस्ट स्टैंड-तीन 1200, ईस्ट स्टैंड-एक 1500, नॉर्थ-एक लेवल-एक व लेवल दो के दो हजार दाम रखे गए हैं। उधर,

वेस्ट स्टैंड-दो 1500 रुपए, नॉर्थ वेस्ट स्टैंड 1500 रुपए, ईस्ट स्टैंड-दो 1500, वेस्ट स्टैंड-एक छह हज़ार, नॉर्थ-एक स्टैंड, 1500, नॉर्थ-दो स्टैंड 1500, ईस्ट स्टैंड-थ्री छह हज़ार, नार्थ पैवेलियन 3500, एचपीसीए सचिव अवनीश परमार ने बताया कि टिकटों की ऑनलाईन बिक्री शुरू हो गई है। ऑफलाईन टिकट कांउटर को लेकर फ्रैंचाईजी से बात की जाएगी, जिसके बाद कांउटर लगाया जाएगा।

28वीं राष्ट्रीय सीनियर एथेलेटिक्स चैम्पियनशिप में मप्र के पोल वोल्ट खिलाड़ी देव मीणा ने जीता स्वर्ण पदक

एजेंसी

भोपाल। दक्षिण भारतीय राज्य केरल के कोच्चि शहर में 21 से 24 अप्रैल तक आयोजित 28वें राष्ट्रीय फेडरेशन सीनियर एथेलेटिक्स चैम्पियनशिप 2025 में मप्र राज्य एथेलेटिक्स अकादमी के पोल वोल्ट खिलाड़ी देव मीणा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। उन्होंने प्रतियोगिता में 5.35 मी की छलांग लगाकर नया राष्ट्रीय रिकार्ड अपने नाम किया। देव ने अपना ही राष्ट्रीय रिकार्ड 5.32मी को तोड़कर 5.35 मी. की छलांग लगाते हुये नया राष्ट्रीय रिकार्ड कायम किया है। 28वें राष्ट्रीय फेडरेशन सीनियर एथेलेटिक्स चैम्पियनशिप 2025 में पोल वोल्ट के मुकाबले खेले गए। इनमें मप्र के देव मीणा ने 5.35 मीटर की छलांग लगाकर स्वर्ण पदक

जीता। वहीं तमिलनाडु के एम. ग्वाथम ने 5.15 मी छलांग लगाकर रजत और तमिलनाडु के ही रीगन जी. ने 5.10 मी छलांग लगाकर कांस्य पदक अपने नाम किया।

खेल मंत्री सारंग ने बधाई

प्रदेश के खेल मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने पोल वोल्ट खिलाड़ी देव मीणा को बधाई दी है। उन्होंने देव मीणा की सराहना करते हुये बताया कि उन्होंने अपना ही राष्ट्रीय रिकार्ड तोड़कर नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया है। देव प्रदेश के नये स्टार बन गये है। उन्होंने 5.35 मी की छलांग लगाकर नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया है। खेल एवं युवा कल्याण संचालक राकेश गुप्ता ने भी देव को बधाई दी है। उन्होंने विभाग द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रशिक्षक की भी सराहना की है, जिनकी देखरेख में देव के कठिन परिश्रम कर लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे है और नये रिकार्ड बना रहे हैं। ईसाइ धर्म गुरू पोप फ्रांसिस का निधन हो जाने के कारण भारत सरकार ने तीन दिवसीय राष्ट्रीय शोक घोषित किया है।

आईपीएल न खेल पाने का मलाल: क्रिकेटर मोहसिन खान

एजेंसी

मुरादाबाद। चोट की वजह से आईपीएल के मौजूदा संस्करण से बाहर हुए संभल के तेज गेंदबाज मोहसिन खान मुम्बई में सर्जरी कराकर घर लौट आए हैं। मोहसिन ने मीडिया कर्मियों से कहा कि आईपीएल न खेल पाने का मलाल तो है, लेकिन वह सिर्फ मैदान से दूर हैं। उनका दिल अब भी टीम के साथ जुड़ा हुआ है। टीम उनके लिए परिवार की तरह है।

टीम ने मुश्किल दौर में भी उनका साथ दिया है। वह रिकवर होकर उसी जोश के साथ मैदान में लौटेंगे। आईपीएल-2025 में चोटिल हुए तेज गेंदबाज मोहसिन खान ने बीते 09 अप्रैल को मुंबई में सर्जरी कराई। अब वह अपने गृह जनपद संभल लौट चुके हैं। डॉक्टरों ने उन्हें पांच महीने तक मैदान से दूर रहने और आराम करने की सलाह दी है। मोहसिन खान को आईपीएल-2025 में लखनऊ सुपर जायंट्स की ओर से खेलना था। फ्रेंचाइजी ने उन्हें चार करोड़ रुपये में रिटेन किया था। इससे पहले आईपीएल-2022 की नीलामी में मोहसिन को फ्रेंचाइजी ने 20 लाख रुपये में अपनी टीम में शामिल किया था। मोहसिन ने 2022 से 2024 तक कुल 23 मैच खेले और इसमें से कई मैचों में उन्होंने मैच जिताऊ प्रदर्शन किया। इन 23 मैचों में उन्होंने कुल 27 विकेट अपने नाम किए। मोहसिन खान के इस शानदार प्रदर्शन पर फ्रेंचाइजी ने इस वर्ष मेगा नीलामी में उन्हें चार करोड़ रुपये में रिटेन किया था।

ओल्मो के गोल से बार्सिलोना ने मल्लोर्का को हराया

एजेंसी

बार्सिलोना। बार्सिलोना ने ला लीगा खिताब की ओर एक और मजबूत कदम बढ़ाते हुए मंगलवार देर रात मल्लोर्का को 1-0 से हराया। इस जीत के साथ ही शीर्ष पर काबिज बार्सिलोना ने दूसरे स्थान पर मौजूद रियल मैड्रिड पर अपनी बढ़त सात अंकों की कर ली है।

ओल्मो ने दिलाई अहम जीत, रियल पर दबाव

स्पेन के इंटरनेशनल डानी ओल्मो के गोल ने बार्सिलोना को जीत दिलाई और मौजूदा चैंपियन रियल मैड्रिड पर दबाव बढ़ा दिया। रियल का अगला मुकाबला बुधवार को गेटाफे के खिलाफ है। हांसी फ्लिक की टीम अब संभावित 'क्वाड्रपल' (चार खिताब) की ओर देख रही है।

कई स्टार प्लेयर्स को मिला आराम, फाती को मिला पहला स्टार्ट: होने वाले कोपा डेल रे फाइनल से पहले कोच फ्लिक ने कई प्रमुख खिलाड़ियों को आराम दिया। अक्टूबर के बाद पहली बार अंसु

फाती को शुरुआत करने का मौका मिला। वहीं हेक्टर फोर्ट को डिफेंस के बाएं ओर और फेरान टोरेस को चोटिल लेवांडोव्स्की की जगह आक्रमण में उतारा गया।

पहले हाफ में कई मौके, लेकिन गोल नहीं

बार्सिलोना ने पहले हाफ में एक के बाद एक मौके बनाए, लेकिन गोल नहीं हो सका। गावी का शॉट पोस्ट से टकराया, वहीं टोरेस और फाती ने आसान मौके गंवाए। युवा खिलाड़ी लामिन यामाल और फोर्ट के प्रयासों को भी मल्लोर्का के गोलकीपर लियो रोमान ने शानदार तरीके से रोका।

दूसरे हाफ में ओल्मो ने तोड़ी खामोशी

दूसरे हाफ की शुरुआत में बार्सिलोना ने पासिंग मूव से खेलते हुए ओल्मो के जरिए बढ़त हासिल की। इसके बाद फाती और यामाल ने बढ़त दोगुनी करने की कोशिश की, लेकिन रोमान की जबरदस्त गोलकीपिंग के आगे बार्सिलोना को एक और गोल नहीं मिल सका।

रोमान की शानदार वापसी, लेकिन टीम को नहीं मिला पॉइंट

यह 2025 में मल्लोर्का के लिए रोमान का पहला लीग मैच था और उन्होंने 10 शानदार सेव किए। उन्होंने यामाल, एरिक गार्सिया और लोपेज़ के प्रयासों को रोका। स्टॉपेज टाइम में अब्दोन प्रात्स पर गार्सिया की टक्कर पर मल्लोर्का ने पेनल्टी की मांग की, लेकिन रेफरी ने खारिज कर दिया।

अब 'एल क्लासिको' पर टिकी निगाहें

बार्सिलोना के पास अब लीग में पांच मुकाबले बचे हैं, जिनमें 11 मई को रियल मैड्रिड के खिलाफ एल क्लासिको सबसे अहम होगा। इस मुकाबले से खिताब की तस्वीर और साफ हो सकती है।

आईपीएल मैचों में वाहन पार्किंग की समस्या से मीडियाकर्मी भी परेशान

लखनऊ । इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के लखनऊ में हो रहे मुकाबलों में उत्तर प्रदेश क्रिकेट संघ (यूपीसीए) और पुलिस प्रशासन के बीच तालमेल के अभाव में पार्किंग की समस्या विकराल हो रही है और इससे मैच कवर करने वाले मीडियाकर्मी भी खासे परेशान हैं। लखनऊ के इकाना स्टेडियम में सात मैचों में से चार मुकाबले खेले जा चुके हैं जबकि दिल्ली और लखनऊ के बीच मैच मंगलवार को खेला गया। इसके बाद भी यहां दो और मैच खेले जाने हैं। इन मैचों को देखने को अपने निजी वाहनो से आने वाले दर्शकों को पार्किंग के लिये निर्धारित स्थान से खासी दूरी तय कर स्टेडियम तक आना पड़ रहा है जबकि इससे पहले जगह जगह डायवर्जन के कारण पार्किंग स्थल तक पहुंचने में दो से चार किमी तक की दूरी भीड़ के बीच रेंग रेंग कर तय करनी पड़ रही है।

आईपीएल 2025: दिल्ली कैपिटल्स ने लखनऊ सुपरजायंट्स को 8 विकेट से हराया

एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ के इकाना स्टेडियम में खेले गए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 40वें मैच में दिल्ली कैपिटल्स ने केएल राहुल और अभिषेक पोरेल के अर्धशतकों की मदद से लखनऊ सुपरजायंट्स को 8 विकेट से हरा दिया है।लखनऊ ने एडेन मार्करम के अर्धशतक के दम पर 20 ओवर में छह विकेट पर 159 रन बनाए, जवाब में दिल्ली ने 17.5 ओवर में दो विकेट पर 161 रन बनाकर मैच जीत लिया। दिल्ली के लिए राहुल ने 42 गेंदों पर तीन चौकों और तीन छक्कों की मदद से नाबाद 57 रन बनाए, जबकि पोरेल ने 36 गेंदों पर पांच चौकों और एक छक्के की मदद से 51 रन की पारी खेली। वहीं, कप्तान अक्षर पटेल ने 20 गेंदों पर 34 रन की दमदार पारी खेली। जबकि कुरुण नायर सिर्फ 15 रन का योगदान दे सके। लखनऊ सुपरजायंट्स के लिए दोनों

सफलताएं एडन मार्करम को मिले। इससे पहले, लखनऊ ने बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 6 विकेट के नुकसान पर 159 रन बनाए। लखनऊ के लिए एडन मारक्रम ने 52 रन और मिचेश मार्श ने 45 रन की पारी खेली। इनके अलावा, आयुष बडोनी ने 36 और डेविड मिलर ने 14 रन बनाए। शेष कोई बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा नहीं छू सका। जबकि कप्तान ऋषभ पंत एक बार फिर बल्ले से विफल रहे और बिना कोई खाता खोले पवेलियन लौटे।

दिल्ली कैपिटल्स की ओर से मुकेश कुमार ने सबसे अधिक 4 विकेट अपने नाम किए। जबकि दुष्मथ चमीरा और मिशेल स्टार्क को एक-एक सफलता मिली।

ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले अजमीना ने पिता को किया याद, बोलीं- पापा के लिए खेल रही हूं

एजेंसी

पर्थ। भारतीय महिला हॉकी टीम की युवा मिडफील्डर अजमीना कुजुर जल्द ही सीनियर टीम में डेब्यू करने जा रही हैं। उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली पांच मैचों की सीरीज के लिए भारतीय टीम में शामिल किया गया है। 23 वर्षीय अजमीना ने इस मौके पर अपने पिता को याद करते हुए कहा कि वह अब अपने पिता के सपने को पूरा करने के लिए खेल रही हैं और यही उनकी सबसे बड़ी प्रेरणा है।भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच यह पांच मैचों की सीरीज 26 अप्रैल से पर्थ हॉकी स्टेडियम में शुरू होगी। इसमें भारत दो मुकाबले ऑस्ट्रेलिया 'ए' के खिलाफ और तीन मुकाबले ऑस्ट्रेलिया की सीनियर टीम के खिलाफ खेलेगा। इस दौरे के लिए अजमीना को सीनियर टीम में मौका मिला है और वे इस मौके को पूरी तरह भुनाने के लिए तैयार हैं। ऑस्ट्रेलिया पहुंचने के बाद अजमीना ने एक बयान में कहा, मैं आभारी हूं कि मुझे अब टीम में शामिल किया गया है। दो साल पहले कैंप में थी लेकिन टीम में नहीं आ पाई थी। अब जब मौका मिला है तो अपना 100 प्रतिशत दूंगी।

हालांकि, अजमीना पहली बार भारतीय सीनियर टीम के लिए फील्ड हॉकी खेलने जा रही हैं, लेकिन अंतरराष्ट्रीय मंच का अनुभव उनके पास पहले से है। 2024 में एफआईएच महिला

हॉकी5एस वर्ल्ड कप में उन्होंने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया था। उस टूर्नामेंट में भारत उपविजेता रहा था। अजमीना ने शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन गोल किए थे। अजमीना ने बताया, हॉकी5एस वर्ल्ड कप में अमेरिका को हराना सबसे खास लम्हा था। इससे हमारा आत्मविश्वास बहुत बढ़ा, क्योंकि अमेरिका ने इससे पहले ओलंपिक क्वालिफायर में हमारी सीनियर टीम को हराया था। उस जीत से ऐसा लगा कि हमने सीनियर टीम का सम्मान वापस दिलाया।

ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले से ताल्लुक रखने वाली अजमीना 11 साल की उम्र से हॉकी खेल रही हैं। उन्होंने बताया कि उनके पिता और भाई हॉकी खेलते थे। इसी से उनका भी खेल की तरफ रुझान बढ़ा। हालांकि, कोविड-19 महामारी के दौरान 2021 में उनके पिता का निधन हो गया था। अजमीना ने भावुक होते हुए कहा, अब मैं अपने पापा के लिए खेल रही हूं। उन्हें गर्व महसूस कराने के लिए। यही मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा है। अजमीना इस सीरीज में अपने प्रदर्शन से टीम में अपनी जगह पक्की करना चाहती हैं। उन्होंने कहा, मैं अपनी फिटनेस और मिडफील्ड में पासिंग पर खास ध्यान दे रही हूं। इस दौरे पर हर मौके को भुनाना है ताकि एफआईएच हॉकी प्रो लीग में भी टीम का हिस्सा बन सकूं।

20 साल और 10 फिल्में...

नुसरत भरुचा

100 करोड़ छापने वाली वो एक्ट्रेस, जिसे बड़ी पिक्चरों में नहीं मिल रहा काम, छलका दर्द

बॉलीवुड एक्ट्रेस नुसरत भरुचा इस वक्त अपनी फिल्म छोरी को लेकर लोगों से वाहवाही बटोर रही हैं. अपनी एक्टिंग के जरिए एक्ट्रेस ने हर बार लोगों का दिल जीता है. हाल ही में एक्ट्रेस ने एक इंटरव्यू के दौरान अपनी अभी तक की फिल्मी जर्नी के बारे में बात की है. नुसरत ने अपने करियर में सही मुकाम हासिल न करने पर बॉलीवुड की खामियों के बारे में बात की है. हालांकि, एक्ट्रसे ने कई सारी कमाल की फिल्मों में काम किया है.प्यार का पंचनामा, सोनू की टीटू की स्वीटी से लेकर और भी कई सारी ऐसी फिल्में हैं, जिसमें नुसरत ने कमाल की परफॉर्मेंस दी है. हालांकि, 20 सालों में भी एक्ट्रेस को वो मुकाम हासिल नहीं हो पाया है, जिसकी वो चाह रखती हैं. एक्ट्रेस ने बताया कि हिट फिल्मों के बाद बड़े बैनर के साथ काम करने के

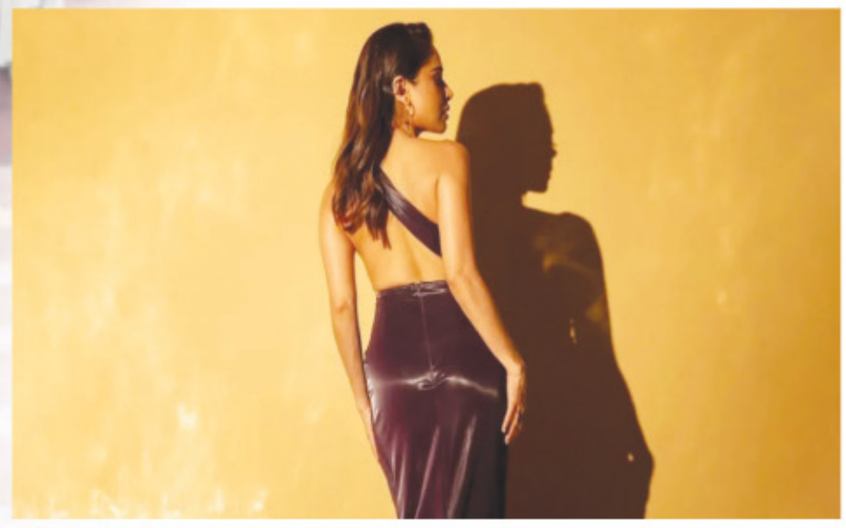

लिए उन्हें काफी मशक्कत करना पड़ा है. अपनी बातचीत के दौरान एक्ट्रेस ने इंडस्ट्री में सेलेक्टेड टैलेंट को काम देने की तरफ भी इशारा किया है.

20 साल में की 10 फिल्में

हाल ही में नुसरत ने पिंकविला से बातचीत के दौरान कहा कि मैं 20 साल में 10 तस्वीरें ले आई, फिर भी मैं उन्हीं जगहों पर खड़ी हूं, जहां मैं पहले थी. एक्ट्रेस ने फिल्में मिलने को लेकर श्रद्धा कपूर का उदाहरण लिया और कहा कि मुझे ऐसी बड़ी फिल्में नहीं मिलती. श्रद्धा के पास हमेशा प्रोजेक्ट होते हैं और बड़े प्रोजेक्ट होते हैं. एक्ट्रेस ने डायरेक्ट तो नहीं कहा, लेकिन उन्होंने इस तरफ इशारा किया कि इंडस्ट्री में ब्रांडिंग और रिश्ते ज्यादा मायने रखते हैं.

फिल्में मिलना है मुश्किल

नुसरत ने टीवी शो के जरिए इंडस्ट्री में कदम रखा था. हालांकि, उन्हें उनकी फिल्म प्यार का पंचनामा में लोगों ने बहुत पसंद किया था. लोग के बीच पसंद बनने के बावजूद उन्हें फिल्मों के लिए मेहनत करनी पड़ी. एक्ट्रेस ने बताया कि किसी भी डायरेक्टर से मिल पाना या उनका नंबर मिलना उन लोगों के लिए काफी मुश्किल का काम है, जो कि इस इंडस्ट्री से नहीं हैं. नुसरत ने खुलासा किया कि उन्होंने कबीर खान को काम के लिए मैसेज किया था.

रिपोर्ट करें या ब्लॉक...फर्जी सोशल मीडिया अकाउंट्स को लेकर सोनू निगम ने फैंस से की गुजारिश

बॉलीवुड के मशहूर सिंगर सोनू निगम ने एक से एक बेहतरीन गाने गाए हैं. उनकी आवाज का जादू आज भी फीका नहीं पड़ा है. लेकिन इस वक्त सिंगर सोनू अपने गानों की वजह से नहीं बल्कि अपने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए सुर्खियों का हिस्सा बने हुए हैं. सोनू निगम ने सोशल मीडिया पर चल रही धोखेबाजी को लेकर एक पोस्ट करते हुए अपने सभी फैन्स से गुजारिश की हैं कि वो इससे बचें और सावधान रहें. सिंगर के मुताबिक उनके नाम का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है.सोनू निगम ने गंभीरता के साथ कहा है कि उनके और उनकी मैनेजमेंट टीम का खुद को सदस्य बताते हुए कुछ लोग धोखाधड़ी कर रहे हैं. सिंगर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट शेयर किया और लिखा, जरूर...मुझे पता चला है कि कोई ऑनलाइन मेरी पहचान का गलत इस्तेमाल कर रहा है. इस बात को नोट कर लें कि मेरी टीम किसी भी कारण के चलते किसी से भी संपर्क नहीं कर रही है. अगर कोई मेरी मैनेजमेंट टीम से होने का दावा करता है और आपसे कॉन्टेक्ट करता है, तो आप उससे सावधन रहें.

सिंगर ने आगे अपने पोस्ट में लिखा कि वो पिछले आठ साल से ट्वीटर या एक्स अकाउंट पर नहीं हैं. कुछ अकाउंट हैं, जिन्हें लोग मेरा समझते हैं वो किसी और के द्वारा चलाए जा रहे हैं और विवादित चीजें मेरे नाम से पोस्ट करते हैं. अगर आपको मेरे नाम से कोई फर्जी अकाउंट या मैसेज दिखे तो रिपोर्ट या उसे ब्लॉक करें. उन लोगों का शुक्रिया जिन्होंने मुझे इस इशू के बारे में बताया. साथ ही सोनू निगम ने अपने सभी फैन्स को थैंक्स भी कहा.

सोनू निगम से पहले मशहूर सिंगर श्रेया घोषाल का एक्स अकाउंट भी हैक हो गया था. हालांकि, श्रेया ने प्लेटफॉर्म की मदद से अपने अकाउंट को सिक्योर कर लिया था. सोनू से पहले कई सितारे इस तरह के पोस्ट शेयर कर चुके हैं. जहां सेलिब्रिटी के नाम का इस्तेमाल करते हुए लोगों से पैसे ठगे जाते हैं.

18 साल पहले आई वो फिल्म, जिसमें सलमान और गोविंदा की फीस से परेशान हो गए थे डायरेक्टर

साल 2007 में फिल्म 'पार्टनर' रिलीज हुई थी, जिसमें गोविंदा और सलमान खान लीड रोल में थे. इनकी जोड़ी को खूब पसंद किया गया और बॉक्स ऑफिस पर ये फिल्म सुपरहिट साबित हुई थी. फिल्म के सभी गाने भी हिट थे, लेकिन 'सोनी दे नखरे' में जो वाइब्स लोगों को आई उसने सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया था. बताया जाता है कि इस गाने की शूटिंग में डेविड धवन को सबसे ज्यादा परेशानी आई थी.स्क्रीनप्ले राइटर आलोक उपाध्याय, जिन्होंने डेविड धवन के साथ कई फिल्में की हैं, उन्होंने फिल्म पार्टनर से जुड़ा अपना अनुभव शेयर किया है. इंडियन एक्सप्रेस के मुताबिक, आलोक उपाध्याय ने बताया कि सलमान खान और गोविंदा की ज्यादा फीस से डेविड धवन परेशान से हो गए थे.

'सोनी दे नखरे' की शूटिंग में आई थी मुश्किलें ?

राइटर आलोक उपाध्याय ने बताया कि किस तरह डेविड धवन शूटिंग के दौरान परेशान हो गए थे और फिर उन्होंने बाद में किस बात का ध्यान रखा था. आलोक उपाध्याय ने कहा, कमर्शियल सिनेमा के फिल्ममेकर के तौर पर डेविड धवन सभी की उम्मीदों पर खरे उतरते हैं. शूटिंग के दौरान उनके दिमाग में एडिटिंग और दूसरे पहलू जैसी चीजें भी चलती रहती थीं. वो सिनेमा के बारे में सबकुछ जानते हैं और फिल्म बनाते समय उनका लक्ष्य रहता है कि फिल्म अच्छी कमाई करे और उसे वो उसी तरह से बनाते भी हैं. लीड सितारों से उनका व्यवहार जैसा भी हो लेकिन जब वो कैमरे के सामने होते हैं तो डेविड बहुत ही स्ट्रिक्ट इंसान हैं.

आलोक उपाध्याय ने आगे कहा, आपको फिल्म पार्टनर का एक वाक्या बताता हूं, जिसमें सलमान खान और गोविंदा लीड एक्टर्स थे. फिल्म के गाने 'सोनी दे नखरे' की शूटिंग हो रही थी, और कोरियोग्राफर ने 2-3 लंबे शॉट्स लिए थे. डेविड साहब मेरे पास आए और उन्होंने कहा कि एक एक्टर ने 10 करोड़ चार्ज किए और दूसरे ने 5 करोड़ चार्ज किए हैं. ऐसे में ये 15 करोड़ खड़े हैं और इसलिए उनके सिर्फ पैर दिखाओ या इनका सिर्फ क्लोजअप ही लो.

कोरियोग्राफर से क्या बोले थे डेविड धवन ?

आलोक उपाध्याय ने आगे कहा, डेविड साहब ने कोरियोग्राफर को बुलाया और कहा-आप 50 रुपये के फूल के बर्तन, 10 रुपये की सजावट की शूटिंग कर रहे हैं. मेरी फिल्म इन चीजों से पैसा नहीं कमा पाएगी. जो 15 करोड़ के दो खड़े हैं, उनके क्लोज-अप मारो. वे दोनों कैमरे के सामने चेहरा बना सकते हैं और इसी पर पब्लिक ताली-सीटी बजाएगी, जिससे मेरी फिल्म पैसा भी कमाएगी.

श्वेता तिवारी

के BOSS से भिड़ेंगी बेटी पलक! मां को जिसने दिया मौका, उसी के लिए बन रहीं खतरा!

44 साल की श्वेता तिवारी अक्सर सुर्खियों में रहती हैं. यूं तो बहुत कम ही ऐसा होता है, जब बात उनके प्रोजेक्ट्स की हो. क्योंकि लोग उनकी फिटनेस देखकर ज्यादा इम्प्रेस रहते हैं. टीवी की पॉपुलर एक्ट्रेस लंबे वक्त से किसी शो में नहीं दिखी हैं. हालांकि, आखिरी बार वो 'सिंघम अगेन' में नजर आईं थी. अजय देवगन की टोली में एक पुलिसवाली बनी थीं, जो पूरी टीम के साथ जा जाकर केस सुलझा रही थीं. अब अपनों के खिलाफ एक्ट्रेस श्वेता तिवारी की बेटी उतर आई हैं. पलक तिवारी की 1 मई को फिल्म आ रही है, जिसमें वो भूतनी तो नहीं बन रहीं, लेकिन उनका भूतनी वाला रूप दिखा है.श्वेता तिवारी 'सिंघम अगेन' से पहले भी रोहित शेट्टी के साथ काम कर चुकी हैं. वो वेब सीरीज 'इंडियन पुलिस फोर्स' में दिखाई दी थीं. हालांकि, उसमें विवेक ओबेरॉय की पत्नी का किरदार निभाया था. लेकिन अजय देवगन ने तो उन्हें पुलिसवाली बना दिया. अब उनकी बेटी बॉस सिंघम से ही भिड़ने का प्लान कर चुकी हैं.

श्वेता तिवारी के बॉस से भिड़ेंगी उनकी बेटी

अजय देवगन की फिल्म Raid 2 1 मई को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है. फिल्म का पहला पार्ट सालों पहले आया था, जब अमय पटनायक के रोल में वो छा गए. अब एक नए ऑपरेशन के लिए अजय देवगन तैयार हो गए हैं. फिल्म का ट्रेलर काफी जबरदस्त है. पहले फिल्म का किसी से क्लैश नहीं हो रहा था. लेकिन अब उनकी संजय दत्त की फिल्म 'भूतनी' से टक्कर होने वाली है. दरअसल पहले यह फिल्म 18 अप्रैल को आने वाली थी, लेकिन आखिर में इसकी रिलीज को आगे बढ़ा दिया गया. संजय दत्त की इस फिल्म से पलक तिवारी भी वापसी कर रही हैं.

श्वेता तिवारी को 'सिंघम अगेन' में अजय देवगन ने ही बड़ा मौका दिया था. वो पिक्चर में उनके सीनियर बने थे. बॉस की बात को फॉलो करते हुए श्वेता तिवारी फिल्म में विलेन्स को ढूंढती हैं. हालांकि, उस फिल्म में स्क्रीन टाइम काफी कम था. वहीं संजय दत्त के साथ पलक हैं. देखना होगा 1 मई वाली बाजी उनकी बेटी जीतती हैं या फिर अजय देवगन की फिल्म.

पलक तिवारी के प्रोजेक्ट्स

श्वेता तिवारी की बेटी पलक ने सलमान खान की फिल्म से हिंदी डेब्यू किया था. वो 'किसी का भाई किसी की जान' में दिखी थीं. लेकिन यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर पिट गई. अब सलमान खान के भाई और दोस्त संजय दत्त की फिल्म में आ रही हैं.